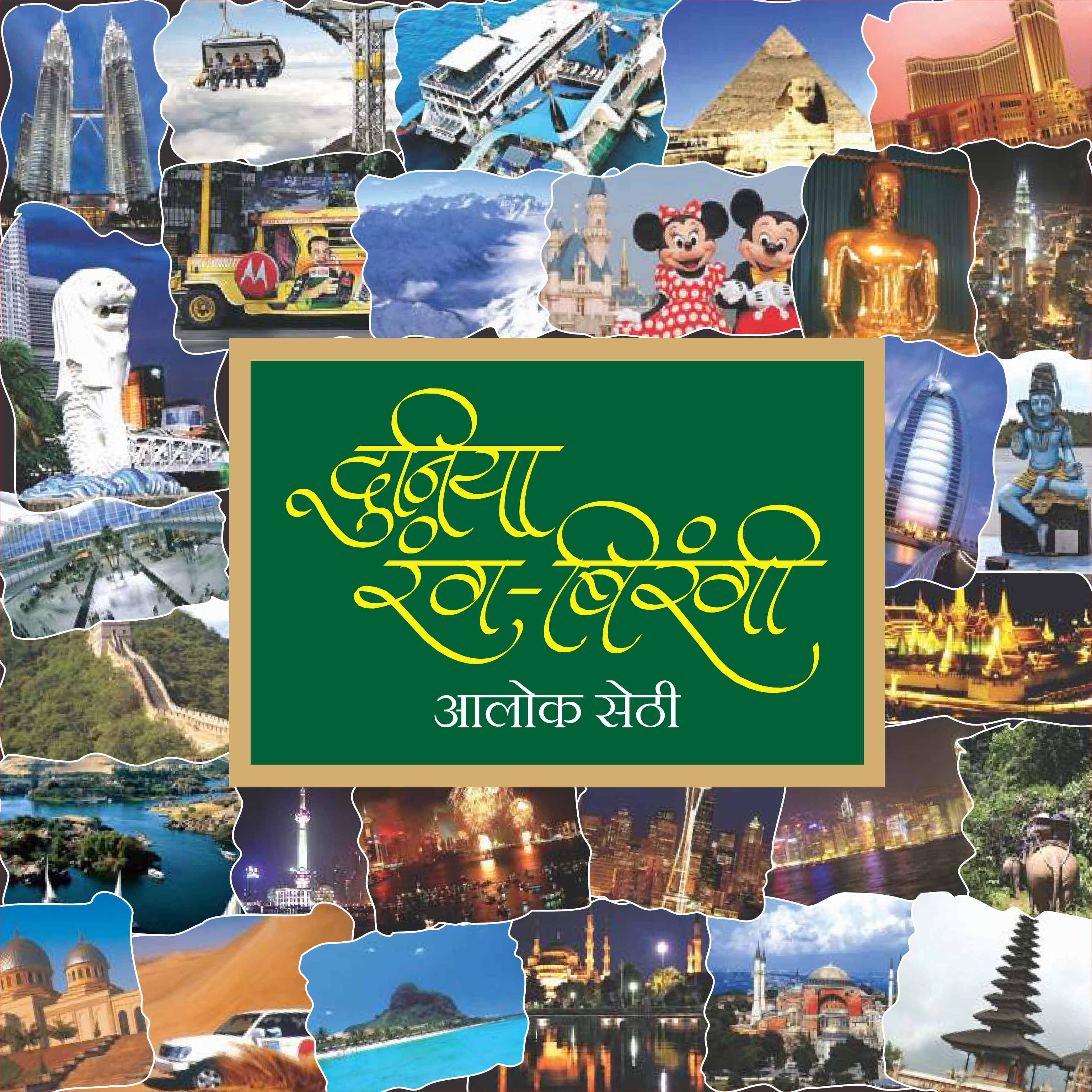

दुनिया रंग-बिरंगी

आलोक सेठी

यायावरी का आलोक...

परम अवधूत धुनीवाले दादाजी, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, पं. रामनारायण उपाध्याय और किशोर कुमार के शहर खण्डवा में पैदा हुए आलोक सेठी एक दिलकश इन्सान हैं। उनकी ज़िदंगी में गति और लय हर लम्हा दमकती रहती है। गति का पर्याय है टायर का बड़ा कारोबार जिसमें मुल्क भर में उनका रसूख है। कविता, गीत और शायरी से उनके जीवन में एक संगीतमय लयकारी बनी रहती है। चलते रहना आलोक की फ़ितरत है। कारोबार के साथ वे जुनूनी घुमंतू हैं। उन्होंने बीस से ज़्यादा मुल्कों की सैर की है जो महज़ व्यापारिक टूर नहीं वहाँ की तहज़ीब और मिट्टी की ख़ुशबू को जानने और समझने का सबब है।

यात्राओं और कारोबार के अलावा आलोक सेठी का प्रिय शग़ल है शब्द से मुहब्बत। इसी के चलते वे तीन किताबें मुकम्मिल कर चुके हैं जो उनकी शख़्सियत में मौजूद स्पीड की तस्दीक़ करतीं हैं। वे सफल कारोबारी होते हुए भी छंद, सुविचार, हास्य और शायरी को पूरे वक़्त अपने सीने में धड़कने देते हैं। बक़ौल मुन्नवर राना *''आलोक यदि फुलटाइम साहित्यकार होते तो उनकी बीसियों किताबें आ चुकीं होतीं।''* शब्द का ये सुकुमार अपनी धुन का पक्का है और धन की परवाह किये बग़ैर घर फूँककर तमाशा देखने से झिझकता नहीं है। आलोक सेठी के सक्रिय बने रहने से शब्द की अस्मिता और आन बनी हुई है।

■ संजय पटेल
कला समीक्षक

sanjaypatel1961@gmail.com

दुनिया रंग-बिरंगी

आलोक सेठी

दुनिया रंग-बिरंगी

Duniya Rang Birangi

by **Alok Sethi**

प्रथम संस्करण : 24 सितम्बर 2011

क़ीमत : ` 400/-

लेखक : **आलोक सेठी**
हिन्दुस्तान अभिकरण, पंधाना रोड़, खण्डवा (म.प्र.)
फोन : 0733- 2223003, 2223004
मोबाइल : 094248-50000
e-mail : hindustanabhikaran@yahoo.co.in
web : www.hindustanabhikaran.com

वितरक : **अजय पब्लिशर्स एण्ड ड्रिस्ट्रीब्यूटर्स**
मोती मस्जिद के पीछे, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2442556

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्रीमती एस. गुप्ता
क्वालिटी पब्लिशिंग कम्पनी
104, आराधना नगर (कोटरा) भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-277977

रूपांकन : **'राग-रंग'**
3/1 ओल्ड पलासिया, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2560265, 2560282
e-mail : adraag@gmail.com
web : www.adraag.com

रेखांकन : विश्वास सोनी - 094250-86444

इस पुस्तक में लेखक द्वारा लिखे गये किसी भी अंश को कोई किसी भी तरह उपयोग में लेना चाहे तो लेखक को व्यक्तिगत कोई आपत्ति नही है।

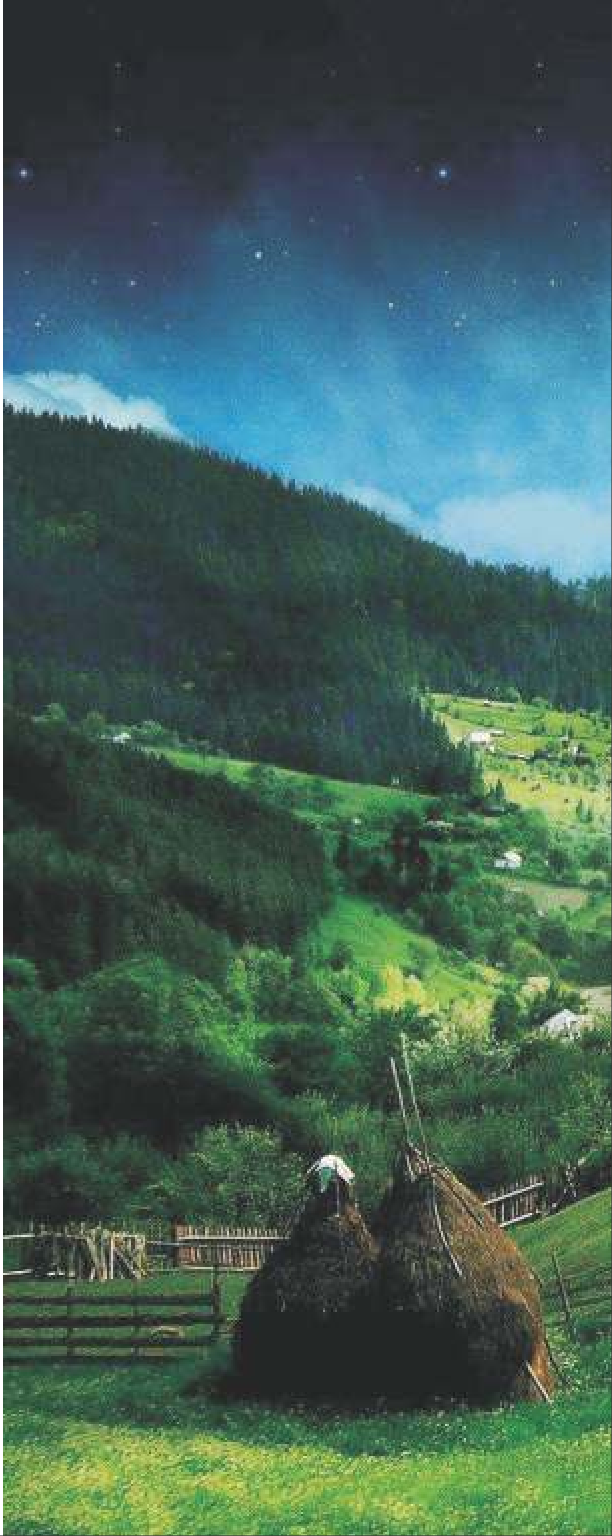

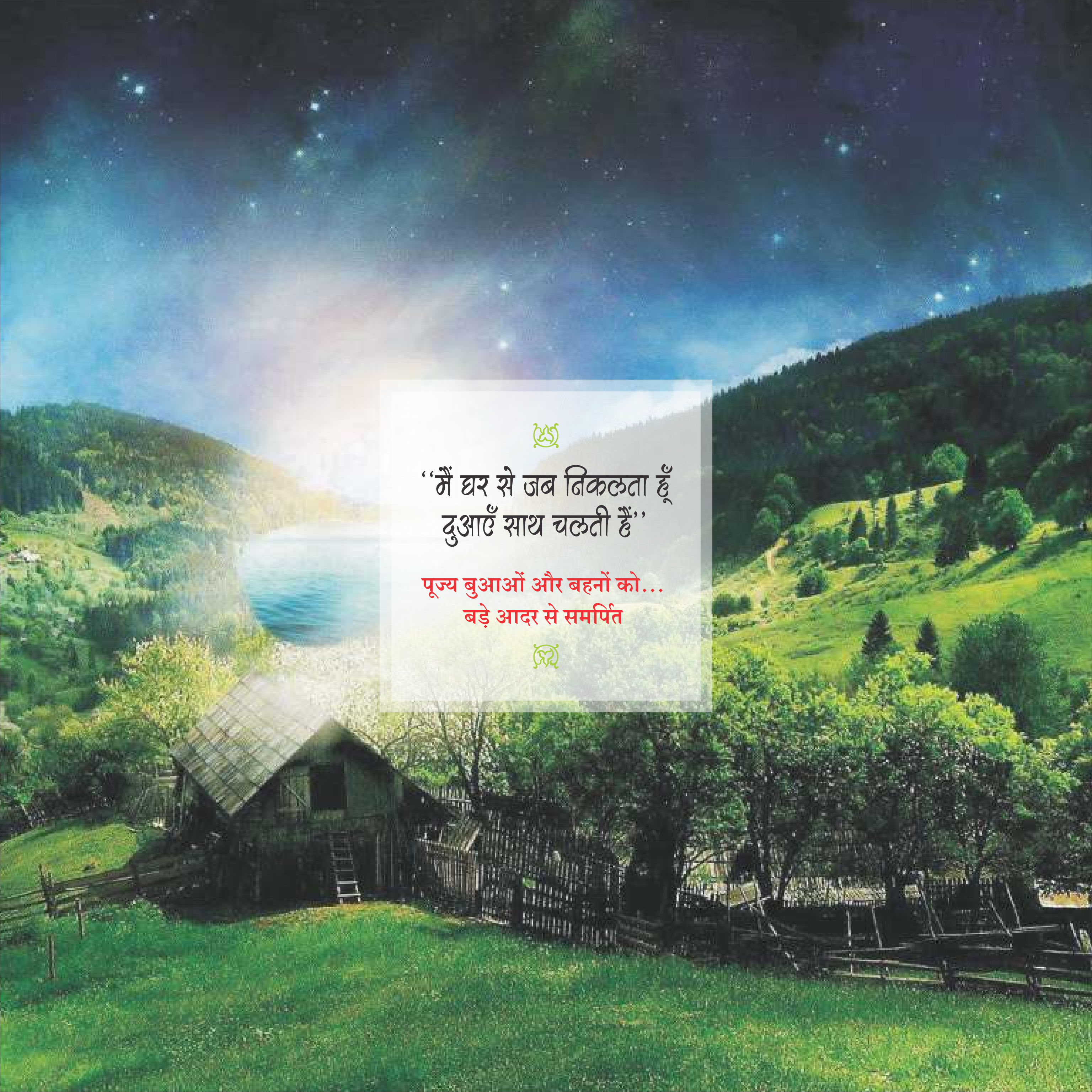

''मैं घर से जब निकलता हूँ
दुआएँ साथ चलती हैं''

पूज्य बुआओं और बहनों को...
बड़े आदर से समर्पित

तालिका...

1. दुनिया की राजधानी...**इस्ताम्बुल** 9
2. ख़्वाब से भी ख़ूबसूरत एक द्वीप...**बाली** 15
3. जहाँ वाकई अतिथि देवता होता है...**थाईलैंड** 21
4. बोने कद के ऊँचे लोग...**चीन** 29
5. एशिया का स्वर्ग...**सिंगापुर** 37
6. रात का सूरज...**हाँगकाँग** 45
7. पूर्वी दुनिया का लास वेगास...**मकाऊ** 53
8. मानव सभ्यता का पालना...**मिस्र** 61
9. समंदर पार... एक और भारत - **मॉरीशस** 71
10. तूफान के बाद की शांति में...**श्रीलंका** 77
11. धरती का स्वर्ग...**स्विटज़रलैण्ड** 83
12. देश भी, महाद्वीप भी...**ऑस्ट्रेलिया** 93
13. इरादों की मजबूती का द्वीप...**फुकेट** 103
14. आधुनिक चीन का लैंडमार्क...**शंघाई** 109
15. सिर पर लाल टोपी रूसी...**रशिया - ताशकंद, उज्बेकिस्तान** 119
16. कमर्शियल केपिटल ऑफ एशिया...**दुबई** 127
17. ट्रूली एशिया...**मलेशिया** 137
18. हम परो से नहीं हौंसलो से उड़ते हैं...**मनीला-फ़िलीपींस** 143

- पर्यटन एक स्कूल...कुछ नोट्स 153
- परदेस कुछ ज़रूरी बातें... 154

पर्यटन को आसान बनाने वाला दस्तावेज़...

श्री आलोक सेठी व्यापार प्रवृत्ति के व्यस्त एवं कुशल व्यवसायी हैं लेकिन एक कवि ओर लेखक के रूप में उनकी विशिष्ट ख्याति रही है। श्री सेठी की यह चौथी कृति है जिसमें उन्होंने अपने विदेश प्रवास के अनुभवों को रोचक एवं रोमांचक ढंग से लिपिबद्ध किया है।

श्री सेठी ने अनेकों अनेक देशों की यात्राएँ की हैं। इन यात्राओं के दौरान श्री सेठी ने स्थानीय शहरों व राष्ट्रों की संस्कृति और जनजीवन को आत्मसात् करने का प्रयास किया है। कवि की संवेदना तथा इतिहासकार के बोध से जुड़ी उनकी लेखनी ने जिस सरस ढंग से अपनी यात्राओं के अनुभवों को संजोया है वह बरबस ही हमें वहाँ की यात्राओं के लिए प्रेरणा देती है।

फ़ीचरनुमा शैली में लिखी गई इस पुस्तक में विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृति और जीवन दर्शन को बहुत ही सरल, सहज एवं सरस ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसकी सुंदर भाषा इसे एक ही बार में पूरा पढ़ जाने के लिए विवश करती है।

हिन्दी साहित्य में यात्रा वृतान्त लिखने की एक समृद्ध परम्परा रही है। इस परम्परा में श्री आलोक सेठी का यह प्रयत्न स्वागत योग्य है। आशा है पर्यटन में रूचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक उपयोगी और पठनीय होगी।

श्री आलोक सेठी को इस प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

सधन्यवाद,

डॉ. रघुपति सिंघानिया
दार्शनिक, विचारक एवं
प्रमुख : जे.के. ग्रुप ऑफ़ इंडस्ट्रीज़

मेरी बात...

मेरी बात...

जानकार कहते है कि खेती करना औरतों ने शुरू किया था। मर्दो में इतना सब्र नहीं था कि दाना ज़मीन में बोने के बाद उगने और नये दाने पैदा होने का इंतज़ार करें। वो तो औरत की मोहब्ब्त और ख़ुद की ज़रूरत के कारण मर्द के पाँवों में बेड़ियाँ पड़ गई और वो घर बना कर रहने लगा, व्यापार करने लगा, नौकरी-चाकरी करने लगा। आज भी कई जातियाँ हैं जो ख़ानाबदोश होती हैं। ख़ाना यानी घर और बदोश यानी कंधों पर। यानी ऐसे लोग जिनका घर उनके कंधों पर हो। एक अर्थ में मैं भी अपने मन से ख़ानाबदोश हूँ। मेरा घर भले ही मेरे कंधों पर ना हो, सफ़ारी बैग ज़रूर हाथ में रहता है।

देश-विदेश घूमना मेरा आदिम शौक है। हमेशा से जी चाहता रहा कि पंख लगा कर उत्तरी ध्रुव से लेकर अंटार्कटिका तक उड़ूँ। न्यूज़ीलैंड से लेकर ब्राज़ील तक की धरती नज़रों के फीते से नाप डालूँ। हाँगकाँग के जीव पोंडा को देखूँ, कान्हा-किसली के शेरों को निहारूँ, थाईलैंड में करतब करती डॉल्फ़िन को छुऊँ, आस्ट्रेलिया के कंगारूओं का फुदकना देखूँ... कालबेलियों के समाज का हिस्सा बन जाऊँ, नागाओं जैसा भेष धरूँ, जारवा और माओरीज़ समाज के साथ ख़ुद का रूप आइडेंटिफाई करूँ...। बनारस की सुबह देखूँ, तो अवध की शाम निहारूँ। लंदन की दोपहरी तो पेरिस की रात...। माउंट टिटलीस से छलांग लगा दूँ सीधे ग़ीजा के पिरामिडों पर...।

बहुत लोगों का जी बहुत कुछ चाहता है, चाहता रहता है। इस मामले में मैं ख़ुद को भाग्यवान पाता हूँ कि मैं जो चाहता रहा वह मुझे मिलता रहा। संजोग कुछ ऐसे बने कि अपने व्यापार के सिलसिले में देश-विदेश की यात्रा के मौक़े मिलते रहे और मैं उन्हे दोनों हाथों से लपकता रहा। क्रिकेट के खेल में चुस्त से चुस्त फ़ील्डर कभी न कभी कोई न कोई कैच छोड़ देता है। पर मजाल है जो मैंने कोई कैच छोड़ा हो। हर बार जब भी सफ़र की संभावना बनी, मैंने उसे सफ़ाई से लपका और जाने कहाँ-कहाँ घूम लिया। इब्नेबतूता ने तब दुनिया का सफ़र किया था, जब न रेल थीं, न सड़क। न हवाई जहाज़ और न बस। सफ़र को लेकर जुनून के मामले में मैं इब्नेबतूता का पासंग भी नहीं, मगर उसमें और मुझमें एक समानता यह है कि इब्नेबतूता ने भी अपने सफ़र को लिखा है और मैं भी हर सफ़र के बाद जो देखा-सुना लिख लेता हूँ। मैं यात्रा संस्मरण लिखने वाला लेखक नहीं हूँ। जो भी मेरी उत्सुक आँखों ने देखा उसे मेरे काँपते क़लम ने लिख लिया।

अब इसे छपाने के पीछे एक मकसद तो यह है कि लोगों को पता चले कि मैने भी दुनिया देख रखी है। दूसरा यह कि अगर कोई सफ़र करने की सोच रहा हो तो उसे मेरे अनुभवों से कुछ मदद मिल जाए। यूँ तो हर देश का पर्यटन विभाग अपने देश के बारे में अच्छी-अच्छी बातें लेकर इंटरनेट पर मौजूद है, मगर जिसने ख़ुद जाकर देखा-भोगा हो वह अपनी बात कुछ अलग अंदाज़ में और ईमानदारी से कह सकता है। और फिर मैं तो आप लोगों के बीच का ही आदमी हूँ। मुझे यह मुग़ालता है कि मेरे अनुभव आपके ज़्यादा काम के हैं बनिस्बत पर्यटन विभाग के फोल्डरों के। सो ये किताब हाज़िर है। उम्मीद है मेरी इस शब्द-यात्रा का हमसफर बन आप भी आनंदित होंगे।

चलते-चलते और एक बात... मेरी किताब पढ़कर यह ग़लतफ़हमी मत पाल लीजिएगा कि ख़ूबसूरती सिर्फ़ समंदर पार ही है... ख़ाकसार भारत भी बहुत घूमा है, और मानता है कि प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन का आनंद अपने देश में भी कुछ कम नहीं। गुजारिश इतनी सी है कि चाहे देस हो या परदेस; घर से निकलें ज़रूर।

दुआओं के साथ...

एक ख़ानाबदोश

आलोक सेठी

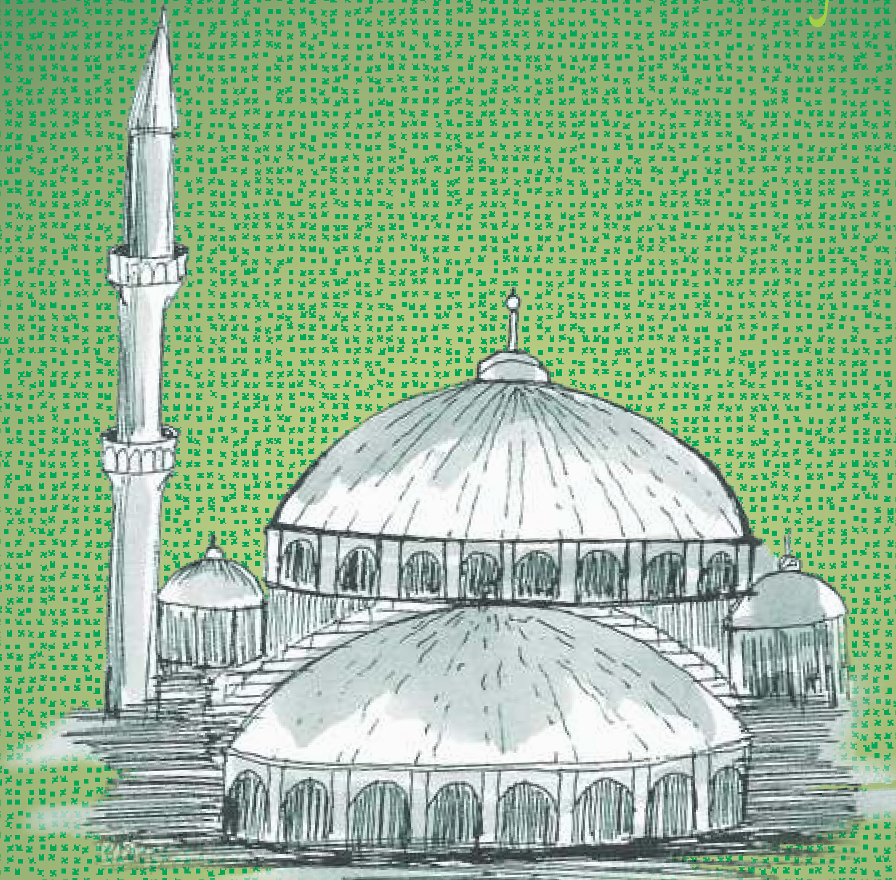

इस्ताम्बुल

दुनिया की राजधानी...
इस्ताम्बुल

इस्ताम्बुल की कहानी से एक बार फिर साबित होता है कि ज्योतिष नाम की ठगी बहुत पहले से फल-फूल रही है। इस समय तो ज्योतिष केवल जजमान का माल हड़प लेते हैं। पहले उटपटांग सलाहें देकर यात्राओं पर भेज दिया करते थे कि मरो-जियो तुम्हारी क़िस्मत...। ईसा मसीह के जन्म के भी क़रीब सात सौ साल पहले की बात है। यूरोप में एक जगह होती थी मेंगाका। यहाँ के नाविकों ने जब पाया कि मेंगाका में कुछ नहीं धरा, तो उन्होंने अपना इलाक़ा छोड़ दिया। इनका सरदार था बायजास नाम का एक आदमी। वो भी उस ज़माने के तमाम सरदारों की तरह मंदबुद्धि और ज्योतिष पर विश्वास करने वाला था। बहरहाल अपना इलाक़ा छोड़ने के पहले बायजास ज्योतिष के पास गया।

उसने बायजास को टालने के लिए कहा कि तुम्हें क़ामयाबी ऐसी जगह मिलेगी जिसके तीन तरफ पहाड़ हों और चौथी तरफ समुद्र। इतना कहकर ज्योतिष अपनी चालाकी पर बहुत ख़ुश हुआ। उसने सोचा कि ये ऐसी जगह ढूँढते-ढूँढते ही खप जाएँगे। खुद ज्योतिष को पता नहीं था कि ऐसी कोई जगह दुनिया में है भी या नहीं। कहानी कहती है कि बायजास पागलों कि तरह ज्योतिष की बताई जगह ढूँढने लगा। उसे ऐसी जगह मिल भी गई। ये जगह थी यूरोप के शुरूआत में और एशिया के

बिल्कुल अंतिम छोर पर । ये धुनी लोग यहीं रहने लगे, तो जगह धीरे-धीरे आबाद हो गई । बायजास के नाम से इसे बायजेरियम कहने लगे । फिर यही शहर तुर्की के इस्ताम्बुल के नाम से प्रसिद्ध हुआ । कालांतर में ये शहर आटोमन साम्राज्य का हिस्सा बन गया । मध्य युग में यह शहर विश्व का सबसे बड़ा कमर्शियल हब था।

तुर्की ही एकमात्र ऐसा मुस्लिम देश है जहाँ लड़कियाँ स्कर्ट पहन कर घूमती हैं। यहाँ शिक्षा भी आठवीं तक अनिवार्य है। इसके बाद शिक्षा अनिवार्य नहीं है। तुर्की घनघोर आधुनिक मुस्लिम देश है, और इसके हक़दार हैं कमाल अतातुर्क। उन्नीस सौ चौबीस के पहले तुर्की में ख़िलाफ़ते उस्मानिया का दमघोंटू शासन था । कमाल अतातुर्क ने तमाम कट्टरताओं को उखाड़ फेंका। बहुत से इस्लामी प्रतीकों को जुर्म क़रार दिया जिनमें एक पर्दा भी था । आस्था का सार्वजनिक दिखावा एकदम बंद कर दिया गया। धीरे-धीरे कट्टरता ख़त्म हो गई । तुर्की में आज भी बहुत लोग नमाज़ी हैं, मस्ज़िदों में अज़ान होती है, नमाज़ पढ़ी जाती है, पर स्वेच्छा से। कमाल अतातुर्क से पहले के शासनकाल में कई चर्चों पर भी क़ब्ज़ा करके उन्हें मस्ज़िद बना दिया गया था। अतातुर्क ने मौलवियों से फ़तवे जारी कराए कि ऐसे छीने हुए धर्मस्थल में नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती और चर्च ईसाइयों को वापस दिलाएँ । यहाँ निन्यानवे दशमलव शून्य आठ प्रतिशत आबादी मुसलमानों की है । कुल आबादी है पौने सात करोड़ । मुख्य भाषा टर्की है मगर उसकी लिपि रोमन है। यह भी अतातुर्क के करने से ही हुआ है। इस अजीबो-ग़रीब देश की एक और बात यह कि सबसे लोकप्रिय खेल गोल्फ़ है, जिसका ग भी हमें नहीं पता। यहाँ का नारा है - ***''घर में शांति- विश्व में शांति... ।''***

कुस्तुनतुनिया इस्ताम्बुल का प्राचीन नाम था । इसका नामकरण महान रोमन सम्राट के नाम पर रखा गया। पुराने शहरों की तरह इस्ताम्बुल भी फसील यानी शहर के चारों तरफ दीवारों से घिरा हुआ है । पुराने ज़माने में हमलों से बचाव के लिए ऐसी दीवारें बनाई जाती थीं । विश्व के प्राचीनतम और पाँचवे सबसे बड़े इस शहर में दो हज़ार मस्ज़िदें हैं। **'सुल्तान अहमद मस्ज़िद'** तो विश्व भर में प्रसिद्ध है। नीले रंग की होने के कारण पूरी दुनिया इसे ब्ल्यू मास्क कहती है। इस्लामिक जगत में यह ऐसी अकेली मस्ज़िद है, जिसके छह मीनारें हैं। सन छह हज़ार नौ में यह मस्ज़िद बनना शुरू हुई थी। सात बरस तक काम चलता रहा। फिर तैयार हुई ऐसी मस्ज़िद जिसमें लगी नीली टाइलें देखकर कोई नहीं कह सकता कि इतना सफ़ाई का काम हाथों से हुआ है और किसी मशीन ने इसे नहीं बनाया । तुर्की वास्तुकला का पिता माना जाता है सिनान को। सिनान का काम पूरे इस्ताम्बुल में बिखरा हुआ है। इस नीली मस्ज़िद के सामने एक विशाल म्यूज़ियम है, जिसे जानकार दुनिया का आठवाँ अजूबा कहते हैं। नाम है **'टागिया-सोफ़िया म्यूज़ियम'** । अपनी विशालता के बावजूद यह निर्माण सोलह सौ साल से खड़ा है। चार सौ चार ईस्वी में इसका

अगला हिस्सा जल गया था पर कुछ नहीं हुआ। ग्यारह साल बाद इसे फिर बनाया गया। शुरू के सवा नौ सौ बरस यहाँ चर्च रहा। फिर इसे मस्जिद बना दिया गया। कमाल अतातुर्क ने यहाँ से मस्ज़िद का मामला ही ख़त्म कर दिया और टंटे को जड़ से ही काटते हुए यहाँ इसे म्यूज़ियम बना डाला।

बहरहाल ये म्यूज़ियम खुद म्यूज़ियम में रखने लायक है, पर साइज़ की दिक्कत है। एक सौ बयासी फुट का इसका डोम ऊँचाई और व्यास में सबसे बड़ा है। इसमें एक सौ सात कॉलम हैं। इसकी इंजीनियरिंग में काफ़ी ख़ामियाँ हैं। इंजीनियर बताते हैं कि इसका पूरा वज़न इसकी नींव पर नहीं है। इस इमारत में रखरखाव और मरम्मत का ख़र्च इतना ज़्यादा था कि राजा तक ग़रीब हो जाया करता था। कई ग़लतियां होने के बावजूद इसका सोलह सौ साल तक टिके रहना कमाल है। इसी म्यूज़ियम के पास एक जगह **'सिटी हीपोड्रम'** के नाम से है। यहाँ राजा अपने घोड़े दौड़ाया करता था। रोमन राज्य में इस्ताम्बुल खेल और मनोरंजन का बड़ा केंद्र था। **'मोसाटम म्यूज़ियम'** इस्ताम्बुल की एक और देखने लायक जगह है। साथ ही **'मानिया मास्क' 'तोपकापी पैलेस'** भी पर्यटक देखने जाते ही हैं। ऑटोमन तुर्क शहंशाहों ने अपने रहने और कामकाज चलाने के लिए 'तोपकापी राजप्रसाद' का निर्माण किया। आज इस महल में कई संग्रहालय हैं। चूँकि आटोमन तुर्क शहंशाह इस्लाम धर्म के ख़लीफ़ा भी होते थे, सो इस्लाम की बहुत ही महत्वपूर्ण चीजें यहाँ संग्रहित हैं। जैसे पैग़ंबर साहब की दाढ़ी का बाल, उनकी तलवार, उनका दाँत, उनका पदचिन्ह, उनका पहनावा...। विश्व का सबसे बड़ा हीरा भी यहीं है। इस हीरे का नाम है **'स्पूनमेकर्स'**। इस राजमहल से बॉस्फ़ोरस खाड़ी के नीले समुद्र का नज़ारा होता है। इस राजमहल की क्या शान रही होगी, इसका अंदाज़ा इस बात से लगाइए कि यहाँ की रसोई संभालने के लिए आठ सौ ख़िदमतगार थे।

इस्ताम्बुल क़ुदरती नज़ारों को देखने का सबसे सुंदर पता है। क्रूज़ ले जाता है बास्फ़ोरस की खाड़ी में। बास्फ़ोरस वो जगह जो ब्लैक सी और मारमारा को आपस में जोड़ती है। **'सी आकं मारमारा'** दुनिया का सबसे छोटा समुद्र है। यह बास्फ़ोरस और गोल्डन हॉर्न से तीन तरफ़ से घिरा है। इस गोल्डन हॉर्न ने तुर्की के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह आठ किलोमीटर लंबा प्राकृतिक हार्बर है। इसमें घूम कर हम कुछ ही पलों में यूरोप घूम कर वापस एशिया आ सकते हैं। राजस्थान और मध्यप्रदेश की सीमा पर बसे भवानी मंडी जाते हैं तो बड़ा अचरज होता है। आधा शहर राजस्थान में है और आधा मध्यप्रदेश में। इसी तरह खेतिया है, जो महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सीमा के बीच में है। इस्ताम्बुल में तो इससे भी बड़ा अचरज है। एक पुल है, जिस पर चढ़ते समय आप एशिया में हैं और उतरते हैं तो यूरोप में। है ना ये बड़ा अचंभा...। भौगोलिक रूप से इस्ताम्बुल यूरोप और एशिया की सीमा पर है। इसीलिए यहाँ ऐसा अजूबा घटित होता है।

उन्नीस सौ तिहत्तर में बना बास्फ़ोरस ब्रिज दो महाद्वीपों को आपस में जोड़ता है । बास्फ़ोरस के दोनों तरफ़ हैं मँहगे होटल। इस सैर के बाद क्रूज़ ले जाता है पानी पर तैरते रेस्टॉरेंट में जहाँ पर लकड़ी पर सुंदर नक्काशी का काम है। यहाँ पर बैले और अरेबिक संगीत के साथ-साथ स्वादिष्ट टर्की फूड का आनंद भी ले सकते हैं जो शाकाहारी भी मिलता है।

इस्ताम्बुल लंबे समय से टेक्सटाइल इंडस्ट्री, कॉटन, सिल्क और ऊनी कपड़ों का बड़ा बाज़ार रहा है। यहाँ दुनिया का सबसे बड़ा कवर्ड मार्केट है। चौदहवीं सदी में बना ग्रांड बाज़ार । उस ज़माने में भी अलग-अलग धंधों के लिए यहाँ अलग-अलग लेन थी । पिचहत्तर एकड़ के इस बाज़ार में साठ गलियाँ हैं। इन साठ गलियों में हैं चार हज़ार छोटी-बड़ी दुकानें हैं जहाँ आप हर चीज़ ख़रीद सकते हैं। ज्वैलरी, मसाले, कालीन और कपड़ों में तो तुर्की का कोई सानी नहीं।

सिएट के जनरल मैनेजर श्री शुजाउल रहमान एक डिब्बे में तुर्की की विश्व प्रसिद्ध मिठाई टर्किश डिलाइट और बकलावा लेकर आते हैं। दोनों ऐसी मज़ेदार हैं कि क्या कहें। अगर सूखे मेवे और मसाले वग़ैरह ख़रीदने का मन हो, तो कुछ दूर पर मिश्री बाज़ार या स्पाइस मार्केट भी हैं। पूरी तरह ढके इस बाज़ार में आओ तो लगता है कि जैसे अलीबाबा चालीस चोर की कहानी में घुस आए हों और खुल जा सिम-सिम होने ही वाला है।

यहाँ के लोग बहुत सुंदर हैं। गोरे, तीख़ी नाक वाले, लंबे, उँचे मगर मोटे नहीं, मज़बूत... । क़ुदरत ने तुर्की वालों को अच्छी सूरत के साथ ही साथ सीरत भी दी है। जब तुर्की घूम कर लौट रहे थे तो कमाल अतातुर्क की प्रतिमाएँ जगह-जगह नज़र आईं और बार-बार इच्छा हुई कि इस महान आदमी को सैल्यूट करूँ जिसने इस देश को कट्टरता से आज़ाद कर प्रगति और ज़िन्दगी की राह पर आगे बढ़ाया। अपनी बात ख़त्म करते करते एक अनमोल पंक्ति का उल्लेख करना चाहूँगा... नेपोलियन बोनापार्ट ने एक बार कहा था कि-

''यदि पूरी दुनिया एक हो जाए
तो उसकी राजधानी होगी इस्तांबुल।''

यदि कोई सिर्फ़ एक झलक में संपूर्ण विश्व को देखने की इच्छा रखता है तो उसे इस्ताम्बुल को देखना चाहिए।

अल्फांसो डी लेमार्टिन

बाली

ख़्वाब से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत एक द्वीप... बाली

भारत से चार घंटे क्वालालम्पुर और फिर वहाँ से तीन घंटे के लंबे सफ़र के बाद हवाई जहाज़ में माहौल अलसाया हुआ था। हम आसमान में वहाँ थे, जहाँ से बाली बहुत नज़दीक था। जहाज़ ने जैसे ही बादलों की परतों को भेदा, लगा खुली आँखों से कोई ख़ूबसूरत सपना देख रहे हैं... सूरज की कोमल किरणों से दीपदिपाते सुंदर मकान, नारियल के पेड़, चौख़ानो में बँटे पानी भरे चावल के खेत, खेतों में क़रीने से लगी क्यारियाँ, हरियाली ओढ़े पर्वतों की क़तार...। बाली का एयरपोर्ट तीन तरफ़ से समुद्र से घिरा है। जब उतरे तो लगा कि हम समुद्र में ही उतर रहे हैं। बाली की धरती पर पहला पाँव डरते हुए रखा कि कहीं सपना टूट तो नहीं जाएगा। बाली पड़ता है भारत के दक्षिण पूर्व में। ऑस्ट्रेलिया से थोड़ा सा पहले आता है। सत्रह हज़ार द्वीपों का देश है इंडोनेशिया और इन सत्रह हज़ार हीरे-मोतियों में से सबसे बेशक़ीमती है बाली। इंडोनेशिया की आबादी है कुल दो करोड़। इसे लोग लेंड ऑफ वॉल्केनो भी कहते हैं क्योंकि इंडोनेशिया में चार सौ से भी अधिक ज्वालामुखी हैं, इनमें से सत्तर तो अभी भी ज़िंदा है। उनके मुहानों से लावा, राख और धुंए का निकलना अब भी जारी है। सन त्रियासी में एक ज्वालामुखी में हुआ विस्फोट इतना भयंकर था कि उसकी आवाज़ ढ़ाई हज़ार किलोमीटर दूर तक सुनी गई थी।

इंडोनेशिया का इतिहास काफी प्राचीन है। भारत से इसके सदियों पुराने दोस्ताना संबंध रहे हैं। इसकी बानगी इस देश के नाम से ही मिल जाती है। इंडोनेशिया नाम हिंद और एशिया को मिलाकर ही बना है। सत्रह अगस्त उन्नीस सौ पैतालीस को यहाँ के सेनानियों ने डच लोगों से आज़ादी हासिल की। तारीख़ के नज़रिये से देखें तो हमसे दो दिन बाद और सन् के हिसाब से ग़ौर करें तो हमसे दो बरस पहले। सुहार्तो यहाँ के प्रमुख नेता रहे। बत्तीस साल तक बेखटक राज किया। मगर कुछ लोगों को सुहार्तो नहीं सुहाए। उन्हें हटाकर जे. हबीबी ने देश की बागडोर थामी पर ठीक से संभाल नहीं पाए। एशियन फ़ाइनेंसियल क्राइसिस ने एक ही दिन में इसकी हालत पतली कर दी थी। पहले ही दिन करंसी अस्सी फ़ीसदी गिर कर काग़ज़ के माफ़िक हो गई थी। आज भी एक भारतीय रूपये का मौल यहाँ के दो सौ तीस रूपयों के बराबर है। ये और बात है कि यहाँ की करेंसी का नाम 'रूपिहा' हमारे रूपया का ही बिगड़ा-सुधरा रूप है।

बहरहाल हम बात कर रहे थे बाली की। बाली का मतलब है त्योहारों का देश। आबादी अट्ठाइस लाख़। निवासियों में से त्रियानवे फीसद हिंदू यानी भारत से भी अधिक प्रतिशत में। द्वीप है मछली के आकार का और यहाँ की पैदावार है चावल। बाकी पैसा पर्यटन से आता है। रामायण और राम इस देश की नस-नस में बसे हैं। यहाँ की अन्य परंपराओं में भी भारत की झलक मिलती रहती है।

इस द्वीप को चारों तरफ़ से समंदर थपकियाँ देता रहता है। सड़कें साफ़-सुथरी हैं और गलियाँ अनुशासित। डच लोगों के गहरे प्रभाव के कारण यहाँ बहुत कुछ गोवा जैसा महसूस होता है। इसका मूल रूप क़ायम रखने के लिए तीन मंज़िला से ज़्यादा ऊँचा भवन बनाने पर सरकारी पाबंदी है। बरसात बहुत होती है सो छतें ढलवा हैं, कवेलू वाली हैं। कई किलोमीटर लंबे बाज़ार मूर्तियों, लकड़ी के अनूठे फर्नीचर, कढ़ाई और पेंटिंग किये हुए सुंदर कपड़ों से भरे हैं। साथ ही कई एंटीक चीज़ें। यूरोप और ऑस्ट्रेलिया के मुसाफ़िर यहाँ से बड़े-बड़े कंटेनर भरकर माल ख़रीद ले जाते हैं। देखने लायक जगहें तो इतनी हैं कि एक महीना भी कम पड़ जाए। हनीमून के लिए जानकार बाली द्वीप को बहुत अच्छा बताते हैं, क्योंकि तमाम टूरिस्ट स्पॉट्स पर भीड़ बहुत कम नज़र आती है। **'कीतामणी'** उस जगह का नाम है, जहाँ सन त्रेसठ में ग़ुस्से में आया ज्वालामुखी अब आराम कर रहा है। समुंदर से बहुत ऊँचाई पर, बादलों के बीच ज्वालामुखी के मुहाने पर एक शानदार रेस्टारेंट है। झील के किनारे, पहाड़ की गोद में और लावे की छाती पर बने इस रेस्टारेंट में गुलाबी ठंडक के बीच आप भारतीय खाना भी खा सकते हैं। शाम का धुंधलका और डूबते सूरज की लाली बाली को और हसीन बना देती है। ऊँची-ऊँची लहरो पर चलते हैं अनेक क्रूज़, जिनमें होते हैं दुनिया भर के पर्यटक। क्रूज़ पर शुरू होती है नाइट लाइफ़, जिसमें पानी, खाना, नाच, मस्ती, संगीत और जादू के खेल शामिल हैं।

बाली वह द्वीप है जिसके समुद्र तट दुनिया में सबसे बेहतरीन माने जाते हैं। बेनवा बीच पर साहसिक समुद्री खेलों का रोमांच नज़र आता है। पैराशूट से समंदर में छलांगें लगाई जाती हैं, बोट पर अठखेलियाँ की जाती हैं। समुद्र का सारा डर इन खेलों को खेलते-खेलते निकल जाता है। समंदर किनारे टैटू बनवाइये या भुट्टे खाइये। चाहे तो मूँगफली भी खा सकते हैं और चाहें तो भारतीय खाने का फिर मज़ा ले सकते हैं। बाली की स्पा पूरी दुनिया में मशहूर है। आयुर्वेदिक और ट्रेडिशनल तरीक़ों से की गई मालिश बरसों की थकान दूर कर देती है। यहाँ दिन घंटों में और घंटे मिनटों में गुज़रते लगते हैं। सचमुच अच्छे पल ज़्यादा नहीं ठहर पाते, खेलकर आँख-मिचोली कर हो जाते हैं काफ़ूर। फिर अनायास याद आते हैं सुखद स्मृति के साथ... बाली में गुज़ारे यादगार पलों को आँखों में समाए हम चल पड़े वापस अपने वतन। इस यात्रा के हमसफ़र सिएट टायर्स के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरनब बैनर्जी कहते हैं- ***''काश बाली के बारे में पहले पता होता तो मैं अपना हनीमून यहीं मनाता''***

गर्दिश में अच्छा क़िरदार...

इंदौर के शायर ख़लील आतिश का शेर है-

वक़्त का क्या है गुज़रता है गुज़र जाएगा
अपने क़िरदार को गर्दिश में भी अच्छा रखना

बाली के लोग ऐसे ही हैं और साबित करते हैं कि ईमानदार रहने के लिए पेट और जेब का भरा रहना ज़रूरी नहीं। यहाँ जैसे सीधे-सरल और ईमानदार लोग शायद ही कहीं और मिलें। सदियों से बाली में अनगिनत भूकंप आए, ज्वालामुखी फटे, तूफ़ान आए और सुनामी जैसी विपदा भी बाली ने झेली है। दो हज़ार दो में कूटा में हुए बम विस्फ़ोट में दो सौ से भी अधिक ऑस्ट्रेलियन पर्यटक मारे गए। फिर दो हज़ार पाँच में जो विस्फ़ोट हुआ उसने तो पर्यटन उद्योग की रीढ़ ही तोड़ दी थी। मगर बाली वासी संकल्प से फिर उठ खड़े हुए, इन जैसा शायद ही कोई हो।

> *घर छोड़े बग़ैर कोई कभी बुद्ध नहीं हुआ।*
> ***अज्ञात***

Tanah Lot Bali Resorts with Unique Hindu Temple

थाईलैंड

जहाँ वाकई अतिथि देवता होता है...
थाईलैंड

हम अतिथि देवो भवः की केवल डींग हाँकते हैं। मगर जब भी कोई विदेशी पर्यटक हमारे देश में आता है, तो हम उसे एक ही बार में पूरा लूट लेना चाहते हैं। यह सच है कि विदेशी आक्रांताओं ने भारत को लूटा और अंग्रेज़ भी इसमें पीछे नहीं रहे और शायद इसका बदला लेने के लिए ही हम पर्यटकों को लूटने की फ़िराक़ में रहते हैं। फिर चाहें वो जापानी हो, चीनी हो, अंग्रेज़ हो या डच...। इसके बरख़िलाफ़ थाईलैंड में हर तरफ़ ये जज़्बा देखने को मिलता है कि विदेशी पर्यटक ही हमारे अन्नदाता हैं, हमारी अर्थव्यवस्था का संबल हैं। भारत के दक्षिण पूर्व में बसा देश थाईलैंड आज दुनिया भर के सफ़र प्रेमियों में मशहूर है। थाई फूड तो आज चीनी खाने के बाद एशिया में सर्वाधिक लोकप्रिय है।

आठ करोड़ की कुल आबादी वाले थाईलैंड का सत्तर प्रतिशत अवाम एक ज़माने में खेती के भरोसे था। देश की ज़मीन के नीचे क़ीमती और ज़रूरी धातुएँ नहीं हैं। उद्योग धंधे भी नहीं हैं। लिहाज़ा देशवासियों का ज़्यादातर पैसा विदशों से मशीन मँगाने, वाहन और रोज़मर्रा के कामों में ख़र्च हो जाता था। ऐसे ही गाढ़े समय में यहाँ के महाराजा श्री रामा ने सर्वेक्षण करवाया। ये पता लगाने के लिए कि ऐसी कौन सी चीज़ है, जो इस देश को मुद्रा दिला सकती है। सर्वेक्षण करने वाले ईमानदार और

क़ाबिल लोग थे। उन्होंने बताया कि थाईलैण्ड में पर्यटन पनप सकता है, मगर उसके लिए अंतरराष्ट्रीय मानक की सेवाएँ देनी होंगी। इसके लिए ख़ूब पैसा लगेगा। श्री रामा ने अपार जोख़िम उठाते हुए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से क़र्ज लिया और एक साथ तीन हज़ार योजनाओं पर काम शुरू किया। इसमें कमीशनबाज़ी और भ्रष्टाचार नहीं हुआ, क्योंकि सबको पता था कि ये जो काम हो रहा है, ये न सिर्फ़ हमारी बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों की क़िस्मत सँवार देगा। होटल, हवाई अड्डे, सड़कें और हर उस चीज़ को चमन कर दिया गया, जिससे पर्यटन बढ़ सकता था। नतीजा यह रहा कि अब थाईलैंड में हर साल सत्तर लाख पर्यटक आते हैं। इसके मुक़ाबले भारत में हर साल आने वाले पर्यटकों का आंकड़ा है बीस लाख...। बहरहाल थाईलैंड के आम आदमी का जीवन स्तर बढ़ा है। छोटे से इस देश में तीन करोड़ से ज़्यादा वाहन हैं। अधिकतर कारें...।

थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में उतरने के लिए जब हमारा हवाई जहाज़ आसमान के चक्कर लगा रहा था तो मैं ये देख कर हैरान था कि ओवर ब्रिज के बीच में शहर बसा है या शहर में ओवर ब्रिज है। हवाई अड्डा विश्वस्तरीय था और फिर जब बाहर निकले तो ये शहर भी दुनिया के आधुनिकतम शहरों में से एक लगा मगर अपनी संस्कृति को सहेजे हुए। शहर की आबादी साठ लाख। शानदार होटलें, गगनचुंबी इमारतें, विशालकाय मॉल और डिपार्टमेंटल स्टोर, आधुनिक जलनिकासी के इंतजाम... मगर साथ ही छोटे-बड़े रंगबिरंगे मंदिर भी। सबके सब बौद्ध मंदिर... एक-दो नहीं, दस-बीस नहीं, सौ-पचास नहीं, चार हज़ार से ज़्यादा मंदिर इस शहर में हैं। ये बौद्ध मंदिरों की आध्यात्मिक विरासत वाला शहर है। एक मंदिर में तो बौद्ध प्रतिमा ठोस सोने की है और वज़न है साढ़े पाँच टन। एक और अद्भुत प्रतिमा एक मंदिर में है, जिसमें भगवान बुद्ध लेटे हुए हैं। ये प्रतिमा है छियालीस मीटर लंबी और पंद्रह मीटर ऊँची।

यहाँ आकर लगता है कि मुसलमानों ने क्यों हर मूर्ति को बुत बोलना शुरू किया। जानकार बताते हैं कि इस्लाम में मूर्ति और चित्र पूजा की मनाही है। अरब के मुसलमानों ने सबसे पहले जो मूर्तियाँ देखीं वो बुद्ध की थी। इसी से वो हर मूर्ति को बुद्ध कहने लगे जो बाद में बिगड़ कर बुत हो गया। अरबी, फ़ारसी और उर्दू में हर मूर्ति के लिए एक ही शब्द है, बुद्ध यानी बुत...। मज़े की एक बात यह है कि भगवान बुद्ध ने अपने अनुयाइयों से कहा था कि मेरे जाने के बाद मेरी मूर्तियाँ मत बनाना। बहरहाल सभी मंदिरों मे विश्व प्रसिद्ध थाई कला के नमूने मिलते हैं। अधिकांश मंदिर बने हैं राजा श्री रामा (चौथे) के राज में। हर मंदिर की छत रंगीन कवेलुओं वाली ढलवा है और मुख्य दरवाज़े पर नागराजा की ख़ूबसूरत कलाकृतियाँ मौजूद हैं।

बमुश्किल सवा दो सौ बरस पहले इस शहर की नींव उस समय के महाराज श्री रामा (तृतीय) ने रखी थी। इस शहर का असल नाम इतना बड़ा है कि लिखने बैठें तो ये पैराग्राफ़ छोटा पड़ जाए और आप बोर होकर इस लेख को पढ़ना छोड़ दें।

आप तो बस इससे ही अंदाज़ा लगा लीजिये कि **‘गिनिस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकॉर्डस’ में ‘बैंकाक’ सबसे बड़े नाम वाले शहर के रूप में दर्ज़ है।** आज इस शहर की सबसे बड़ी इमारत चौरानवे मंज़िल की है। ज़ाहिर है इसकी छत से पूरा बैंकाक दिखता है। जंगली जीवन को पसंद करने वालों के लिए बैंकाक से कुछ ही दूरी पर है **‘सफ़ारी वर्ल्ड’**। पूरा एक दिन आप सुरक्षित वाहन में बैठ कर जिराफ़, गैंडे, भालू और क़िस्मत अच्छी हुई तो शेर तक देख सकते हैं। इस वन अभयारण्य में केवल जानवर ही नहीं, ‘बचपन से लेकर पचपन तक’ मनोरंजन का इंतज़ाम है। अलग-अलग जगहों पर एक-एक घंटे के कई शो होते रहते हैं। ग्रेटेस्ट मॉस्को सर्कस, डॉल्फ़िन शो, स्पाई वार। एक बड़ा सा डाइनिंग हॉल है जहाँ हज़ारों पर्यटक एक साथ बैठ कर दुनिया भर के खाने खा सकते हैं। आप यक़ीन करें या न करें पर यह सच है कि यहाँ आमरस-पूरी जैसा ठेठ देशी खाना भी मिलता है। बैंकाक से दो घंटे दूर **‘डमनन सदुक’** नाम का एक क़स्बा है, जहाँ पानी पर तैरता हुआ बाज़ार है। इसे देख कर डल झील के पुराने दिन याद आ जाते हैं।

औरतों की बराबरी क्या चीज़ होती है, यह थाईलैंड आकर पता लगता है। हर जगह महिलाएँ हर काम करती नज़र आती हैं। इनकी क़ामयाबी का एक बड़ा कारण यह है कि महिला श्रम यहाँ बेकार नहीं जाता। दिलचस्प बात यह है कि दहेज़ लड़के को देना पड़ता है और इस पर कोई क़ानूनी बंदिश भी नहीं है। हाउस वाइफ़ जैसा कोई शब्द यहाँ है ही नहीं। घरों में रसोईघर नाम की जगह नहीं होती। सारा देश दिनभर स्ट्रीट फूड्स एवं होटलों के खाने पर चलता है। बुनियादी तालीम क़ानून के रूप में है। अगर आपने बच्चे को स्कूल नहीं भेजा तो सरकार आपको शर्तिया जेल भेज देगी।

सिविक सेंस नामक चिड़िया भी यहीं आकर ठीक से देखी। अगर आपने फालतू में हॉर्न बजाया तो पुलिस आकर पकड़ लेगी; कि शोर गुल क्यों मचा रहे हो। पुलिस तो बाद में आएगी, दूसरे लोग आपको लानत-मलामत की उन नज़रों से देखेंगे कि आप खुद ही पानी-पानी हो जाएँगे (बशर्ते की आपमें शर्म हो) ड्रायवर और उसकी बग़ल में बैठने वाले को लाइफ़ बेल्ट लगाना ज़रूरी है नहीं तो जुर्माना केवल पांच सौ बाथ (थाई मुद्रा) का होता है। सो भी नक़द। नाइट लाइफ़ किसे कहते हैं, ये भी इस शहर को देख कर पता चलता है। बाज़ार दिन-रात चौबीसों घंटों खुले रहते हैं। सारे निर्माण कार्य रात में होते हैं। सफ़ाई और मैंटेनेंस का काम भी देर रात तक होता है। ऐसा नहीं कि सुबह उठे और झाड़ू लगाने वाले ने आपके स्वागत के लिए धूल के बादल तैयार कर रखे हैं।

‘फुकेट’ ‘लोंगा स्वाकी’ और ‘पटाया’ नहीं-नहीं ये गालियाँ नहीं; थाईलैंड के तीन बेहतरीन समुद्र तटों के नाम हैं, जो अपने आप में अब नगर सरीखे हो गए हैं सबसे आकर्षक है पटाया, जो बैंकाक से एक सौ छत्तीस किलोमीटर दूर है। मगर दूरी से डरिये मत, फ़्लाई ओवर और साफ़-सुथरी सड़कों के चलते यहाँ सिर्फ़ डेढ़ घंटे की अवधि में पहुँचा जा सकता है।

सन् 1960 से पहले पटाया मछुआरों का एक गाँव भर था पर विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिकी सेना एक ऐसा स्थान खोज रही थी जहाँ शांति के समय आराम कर सके । इन सैनिकों ने उथपाओं एअरपोर्ट से 20 कि.मी. दूरी पर पटाया खाड़ी की खोज की । इसे बेहतरीन समुद्र तट के रूप में भाँप कर जब यहाँ विकास किया गया तो इसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम कमा लिया । दुनिया के बेहतरीन समुद्र तटों का लेखा-जोखा रखने वाले इसे बहुत ऊँचा आँकते हैं। यहाँ की ख़ासियत है बर्फ़ की तरह सफेद रेत और गहरा नीला साफ़-कच पानी । यहाँ से बहुत क़रीब एक टापू है जिसे **'कोरल आईलैंड'** कहते हैं । इस टापू की तलहटी में मानो समुद्र देवता ने अपना सारा ख़ज़ाना उलट दिया है । ऑक्सीजन मास्क पहना कर जब पर्यटकों को धीरे-धीरे समुद्र में उतारा जाता है तो समुद्र का जल-जीवन देखकर दर्शक अवाक रह जाता है । डिस्कवरी पर समुद्र देखना और यहाँ आकर ख़ुद अपनी आँखों से देखने में ज़मीन आसमान का अंतर है । तरह-तरह की मछलियाँ... मानो परेड कर रही हों । सीप, घोंघे, शंख, रेत, समुद्री वनस्पतियाँ; लगता है हम किसी ख़ूबसूरत तिलिस्म से रूबरू हैं । जब आप तलहटी में अटखेलियाँ कर रहे होते हैं, वाटरप्रूफ कैमरे से आपकी तस्वीर भी ले ली जाती है... जिंदगी भर के लिये यादगार तस्वीरें... सहेज कर रखने लायक पल...।

इसी टापू पर पैराग्लाइडिंग की सुविधा भी है । सागर के बीच में आपको पैराशूट से बाँध कर हवा में उड़ाया जाता है और फिर धीरे-धीरे समुद्र तक लाकर डुबकियाँ खिलाने के लिए छोड़ दिया जाता है। मानो सिखा रहे हों कि ज़्यादा उड़ने वालों को ज़मीन पर (बल्कि समंदर की गहराई में) आते देर नहीं लगती । जैसा फ़िल्मों में दिखाते हैं वैसा ही समुद्री स्कीइंग, स्कूटर बोट और बनाना बोट भी है। पानी के खेल तो इतने हैं कि शरीर थक जाता है, पर मन नहीं।

पटाया में एक रेस्टोरेंट ऐसा है, जिसमें ऊपर जाने के लिए लिफ़्ट है मगर नीचे आने के लिए तीन विकल्प हैं। एक; आप पचपन मंज़िल ऊपर से नीचे कूद सकते हैं। ज़ाहिर है आवश्यक सुरक्षा के साथ...। मगर इसके लिए ज़रूरी है कि पहले बिल पे किया जाए। दूसरा; आप केबल से फिसलते हुए नीचे आ सकते हैं। तीसरा; लिफ़्ट। रेस्टारेंट में सभी तरह का खाना मिलता है। अगर आपने ऐसा कुछ खाया-पिया है, जो आपकी धरती कुचलने के लिए उकसा रहा है, तो आप धरती पर कूद सकते हैं। ऐसा कुछ खाया-पिया हो, जिसके कारण दुनिया घूमती लग रही है, तो केबल से फ़िसल कर आ सकते हैं। अपन परहेज़ी आदमी । सादा दाल-रोटी खाने वाले और प्लेन वॉटर पीने वाले। अपन लिफ़्ट से ही नीचे आ गए!

एक छोटा थाई गाँव भी यहाँ है । नाम है **'मिनी सिम'** थाईलैंड के क़ाबिल इंजीनियरों ने यहाँ दुनिया की बेहतरीन व ख़ूबसूरत इमारतों के मिनिएचर बनाए हैं ।

जैसे पीसा की झुकी मीनार, एफ़िल टावर, सिडनी का ऑपेरा हाउस। मिनी सिम का नारा है- ***''दुनिया देखना हो, तो थाईलैंड आइये।''*** वाक़ई यहाँ दुनिया दिखती है। यहाँ वह सबकुछ है, जो दुनिया के अनेक हिस्सों में यहाँ-वहाँ बिखरा पड़ा है। इस मिनी सिम की तमाम चीज़ें देख कर लगता है मानो दुनिया देख ली हो। और भी बहुत चीज़ें हैं; साँपों में दिलचस्पी हो तो स्नेक शो में साँपों और इंसानों की हैरतअंगेज़ जुगलबंदी देखी जा सकती है। मगरमच्छ फ़ार्म जाकर मगरमच्छों को क़रीब से देखा जा सकता है (नाक पर रूमाल ज़रूर रखना पड़ता है)। फूल-पत्तियों और तरह-तरह की घास-फूस से मुहब्बत करने वालों के लिए बॉटनिकल गार्डन भी है और गुलाब प्रेमियों के लिए रोज़ गार्डन भी। अफ़लातून रूचि वालों के लिए मथाई फाइटिंग शो है जहाँ दिन भर मार-धाड़ चलती रहती है। बैलगाड़ी और हाथी पर चढ़ कर आप थाई गाँव देखने भी जा सकते हैं। शानदार साउंड और लाइट के साथ नृत्य के भी नयनाभिराम कार्यक्रम होते रहते हैं।

थाई फूड

ज़ाहिर है थाईलैंड में थाईफूड ख़ूब मिलता है। पर हम जैसों के लिए दिक्क़त यह रहती है कि माँस-अंडा वग़ैरह खा नहीं सकते और थाई फूड तो मानो...। हाँ सी फूड और मछली के शौकीनों के लिए तो यह देश स्वर्ग है। शाकाहारियों के लिए कई भारतीय रेस्टोरेंट खुल गए हैं, जहाँ किशोर कुमार के गाने सुनते हुए आप भिंडी की सब्ज़ी को रोटी में दबा कर, उसे तुअर की दाल में डुबो कर मुँह में रख सकते हैं। फल यहाँ बहुत होते हैं और थाई फल एकदम शाकाहारी भी होते हैं, बिना संकोच खाए जा सकते हैं। सड़कों पर स्ट्रीट फ़ूड्स बेचने वाले मोटर सायकल पर एक छोटा सा हाथ ठेला ज्वॉइंट कर लेते हैं। दुकान बंद करते समय उसी के नीचे बनी एक पेटी में सारा सामान भर गाड़ी को किक मार सीधे अपने घर को निकल पड़ते हैं।

ख़रीदी

ख़रीददारी के लिये थाईलैंड एक अच्छी जगह है। अच्छी इसलिये कि यहाँ की मुद्रा 'भात' भारतीय रूपये की तुलना में सिर्फ़ सवाई महँगी है। इसलिये यूरोप, सिंगापुर या मलेशिया की तुलना में यहाँ की क़ीमतें भारतीयों की जेब के अनुकूल नज़र आती हैं। सूती रेडीमेड कपड़ों की बेहद विस्तृत रेंज नज़र आती है और सस्ती भी, पर अपने यहाँ से सस्ती नहीं। यहाँ से कैमरे और टीवी भारत की तुलना सस्ते पड़ते हैं। ख़रीदी का पक्का बिल बनवा कर यदि फार्म भरा जाए और उस फ़ार्म पर दुकानदार से सील लगवा ली जाए तो एयरपोर्ट पर ही सात प्रतिशत का वेट रिफ़ंड नक़द मिल जाता है। यही इंतज़ाम सिंगापुर में भी है।

अभिवादन

हमारे नमस्ते में यदि थोड़ी विनम्रता और मिला दी जाए, तो बन जाता है थाई अभिवादन 'सवादे क्राप'।

नमस्ते की तरह दोनों हाथ जोड़िये, चेहरे पर मुस्कुराहट लाइये और रीढ़ की हड्डी को थोड़ा कष्ट दीजिए। इस तरह जो मुद्रा बनेगी, वह होगा थाई अभिवादन... 'सवादे क्राप'।

ईमानदारी की मिसाल

पटाया के ख़ास इलाक़ों की सैर करने के लिए हमने टैक्सी बुक की। टैक्सी ड्रायवर से कहा कि तीन बजे चलेंगे। हम अभी कहीं जा रहे हैं। पाँच सौ बाथ किराया हमने पहले ही दे दिया था। देर हो गई और हम होटल पहुँचे रात आठ बजे। लगा था कि पाँच सौ बाथ गए पानी में। मगर वहाँ तो टैक्सी वाला हमारा इंतज़ार कर रहा था। हमने कहा कि अब आज तो जाना नहीं हो पाएगा। उसने कहा कोई बात नहीं, बताइये कल कहाँ का प्रोगाम है। तय समय पर वो हमें लेने आया और हमने जहाँ भी कहा, उसने हमें घुमाया। हम उसे किराया देने लगे तो वह कहने लगा कल आपने दे तो दिया था। हमने कहा वह तो कल का था, तुमने अपनी रोज़ी का नुकसान कर हमारा इंतज़ार भी तो किया था। कहने लगा कि पर मैंने तो आपको घुमाया नहीं। अपने देश जाकर आप कहते कि पटाया के टैक्सी वाले ने घुमाया भी नहीं और पैसे भी ले भागा तो मेरा देश बदनाम होता...। उसके जवाब में हम कुछ कहें इसके पहले ही वो टैक्सी स्टार्ट करके फुर्र हो गया।

"विश्व में ऐसे बहुत से सुंदर स्थान हैं जहाँ मैं जाना चाहता था पर थाईलैण्ड की बात सबसे अलग है, यहाँ हर पच्चीस मील पर आप समुद्र व पहाड़ दोनों का आनंद ले सकते हैं।"

रॉबिन विलियम्स
(अमेरिकी निर्देशक)

चीन

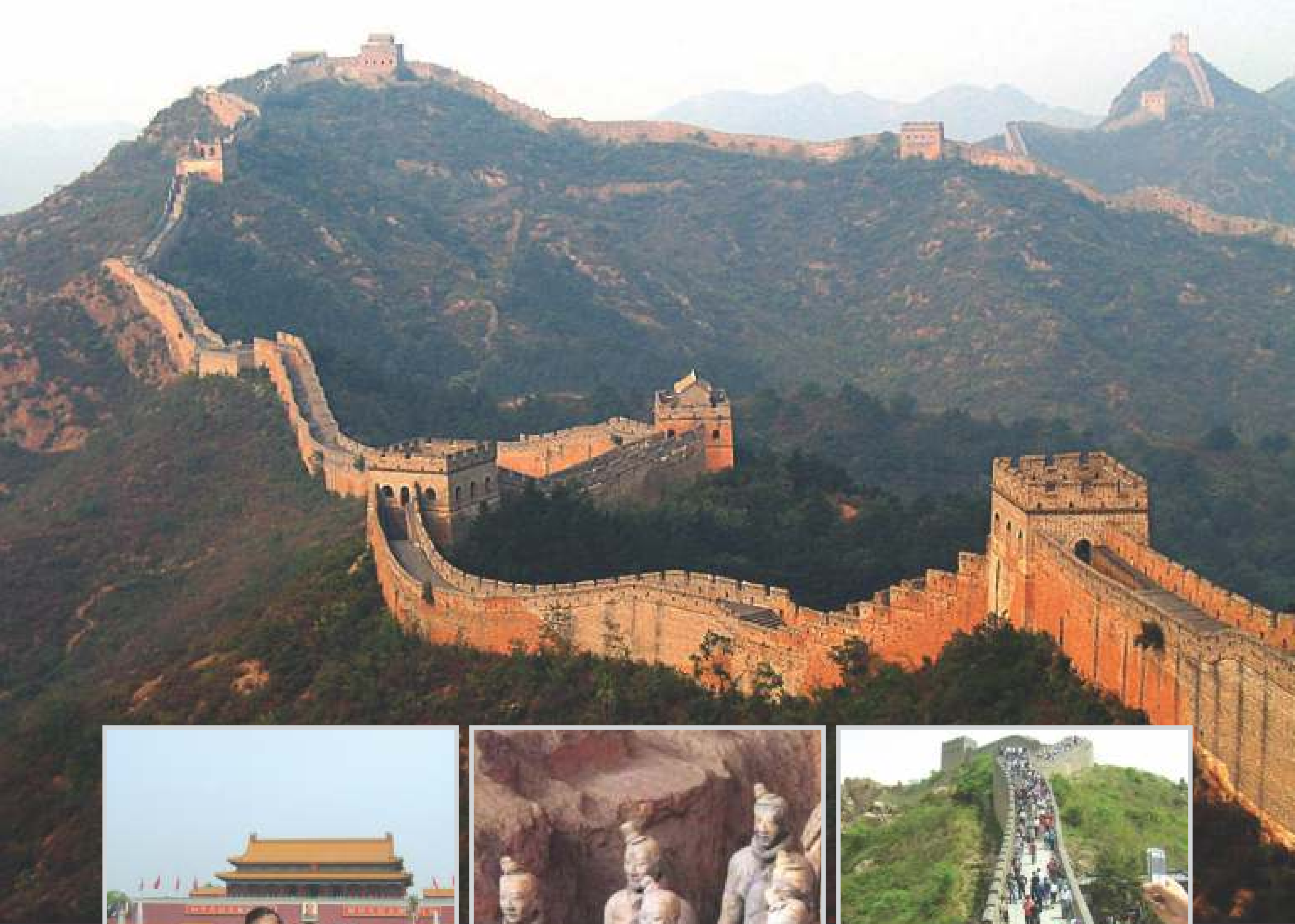

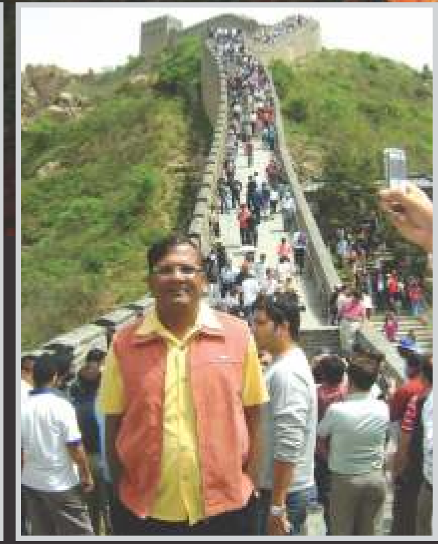

बोने कद के ऊँचे लोग...
चीन

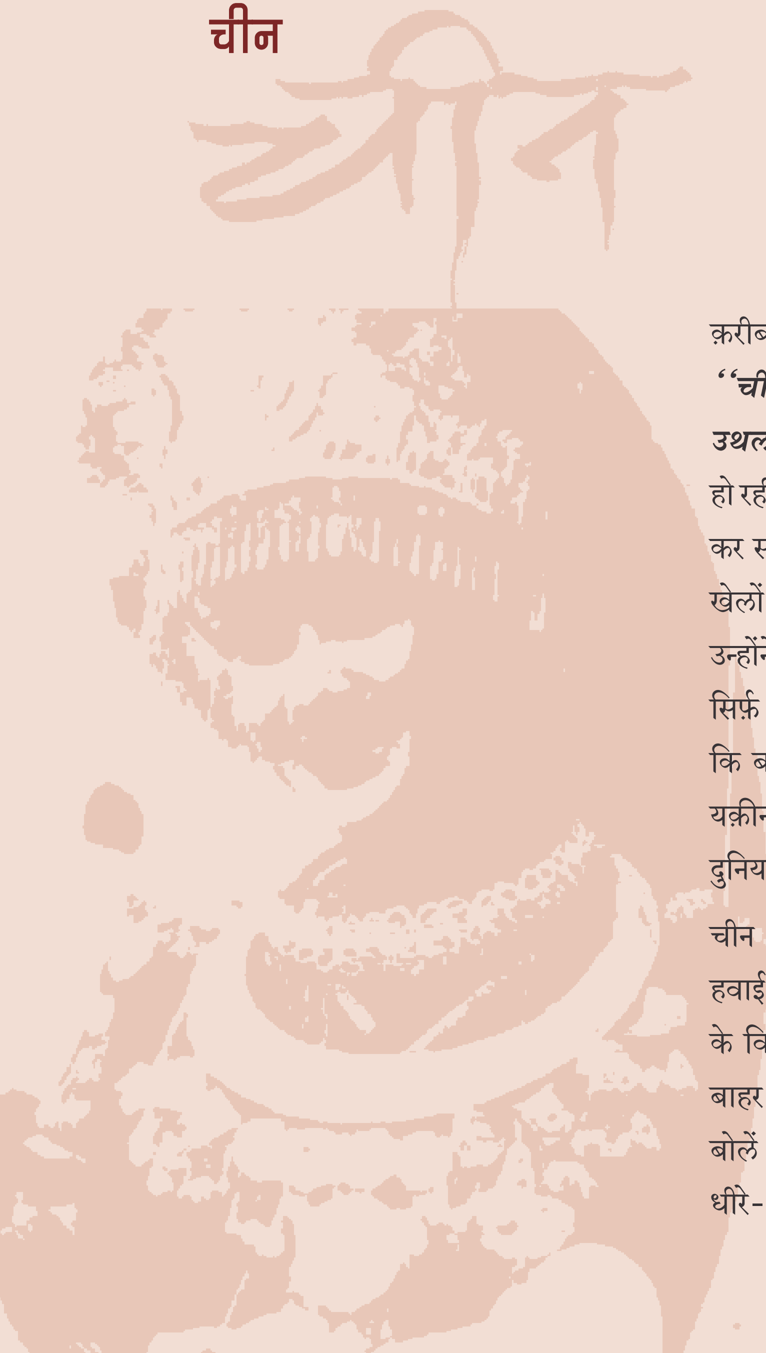

क़रीब दो शताब्दी पहले नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था ***''चीन को अभी सोने दो । यदि वह जाग गया, तो भारी उथल-पुथल मचाएगा।''*** नेपोलियन की भविष्यवाणी अब सच हो रही है। चीन ने इस धारणा को झुठला दिया कि तरक़्क़ी सिर्फ पश्चिम कर सकता है, उन्होंने इसे भी ग़लत साबित कर दिया कि ओलंपिक खेलों की विश्वस्तरीय मेज़बानी कोई एशियन देश नहीं कर सकता, उन्होंने इस अनुमान को भी ख़ारिज कर दिया कि वर्ल्ड इकॉनॉमी पर सिर्फ़ अमेरिका का ही क़ब्ज़ा रहेगा, उन्होंने इस सोच को भी नकार दिया कि बड़ी जनसंख्या वाले देश विकास नहीं कर सकते...और आज यक़ीनन चीन की बढ़ती आर्थिक और सामाजिक ताक़त से पूरी दुनिया भयभीत है।

चीन की राजधानी बीजिंग... बाहर कुछ छोटी-छोटी बदलियाँ हवाई जहाज़ को रोकने की ऐसी ही कोशिश कर रहीं थीं, जैसे चीन के विकास को रोकने के लिए पश्चिमी देशों ने की है । खिड़की से बाहर कुछ नज़र नहीं आ रहा था, जैसे दस विरोधी एक साथ बोलें तो मुद्दई को कुछ समझ में नहीं आता । हवाई जहाज़ ने धीरे-धीरे नीचे आना शुरू किया तो सब कुछ साफ होने लगा ।

जैसे हज़ार झूठ में से एक सच उजागर होता है...। ये सच था बीजिंग बिल्कुल क़रीने से सजा एक बहुत बड़ा शहर । बेहद चौड़ी और साफ़-सुथरी सड़कें, गगनचुंबी इमारतें, व्यवस्थित यातायात, कई मंज़िला ओवर ब्रिज...। एयर होस्टेस ने पहले चीनी भाषा में कुछ चीं-चाँ की, फिर एकदम साफ़ अंग्रेज़ी में कहा कि चीन की राजधानी बीजिंग में आपका स्वागत है। दो हज़ार साल पुराना ये शहर आठ सौ बरसों से चीन की राजधानी है । शायद दुनिया की सबसे प्राचीन अथवा प्राचीनतम राजधानी। इसे सिर्फ़ चीन की ही नहीं, इसे समूचे ईस्ट वर्ल्ड की राजधानी माना जाता है । बहुत कम लोगों को पता है कि पहले इसका नाम बीगिंग था, पर इससे बेगर्स यानी भिखारियों की ध्वनि आती है, सो उन्नीस सौ उनचास में सरकार ने इसे बदल कर बीजिंग कर दिया। बीजिंग से हम भारतीयों को बीज की याद भले आ जाए अंग्रेज़ी जानने वालों को भिखारियों की याद नहीं आती।

यात्राओं से ज़्यादा कोई और चीज़ नहीं सिखाती । ख़ास कर विदेश यात्राएँ, जिनसे हमें पता चलता है कि दुनिया कैसी है । लोगों की सोच, पहनावे और खान-पान में क्या फ़र्क़ है । सबसे आख़िर में यह कि समंदर का पानी कहीं से भी चखो; खारा है और बुनियादी रूप से इंसान हर जगह एक जैसा है । हाँ कुछ जातियों ने वह कर दिखाया है, जो और नहीं कर सके । कभी इसके कारण ऐतिहासिक होते हैं, तो कभी भौगोलिक। चीन के सफ़र से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं भारत और चीन; दोनों जगह समस्याएँ एक सी हैं। मसलन आबादी। आबादी को हमने बोझ माना, दिक्क़त माना, मगर चीन ने उसी आबादी को अपनी ताक़त बना लिया। हम पेट गिन कर बहाने बनाते रहे, उन्होंने हाथ गिने और उन हाथों को काम सौंप दिये । इसका मतलब यह नहीं कि उन्होने बढ़ती आबादी की चिंता नहीं की। उन्नीस सौ अस्सी में वहाँ एक जोड़ा, एक औलाद का क़ानून बना दिया था। सरकार सिर्फ़ पहले बच्चे को ही पहचान पत्र देती है, जो उसे जीवन के हर मोड़ पर काम आता है दूसरी औलाद अपने आप दूसरे दर्ज़े की नागरिक बन गई । सरकार ने गाँवों से शहर की ओर होते पलायन पर रोक लगाई, ताकि महानगर ख़ुद को आबादी के बड़े धमाके से बचा सकें। बड़े शहरों में किसी काम से आने वाले गाँव वालों को परमिट लेना पड़ता है। ये परमिट मिलता है शिक्षा, रोज़गार, इलाज और दूसरे काम के लिए शहर आने पर। यही कारण है कि बीजिंग इतना बड़ा शहर होने के बावजूद व्यवस्थित है। ट्रैफिक जाम की दिक्क़त से अमूमन आज़ाद है। धक्का-मुक्की भी देखने में नहीं आती।

बीजिंग को देखने के लिए यूँ तो बहुत सारा वक़्त भी थोड़ा है, पर ख़ास-ख़ास भी देखने के लिए हफ़्ता भर तो चाहिए। **फोरबिडन सिटी, थ्येनआमान चौक, मिंग टोम्स, लामा टेम्पल, बेइहाई पार्क** (बेहयाई नहीं), **केपिटल म्यूज़ियम और सबसे ख़ास द ग्रेट वॉल ऑफ़ चाइना...** चीन की दीवार....। बीजिंग की सैर पूरे

चीन की सैर जैसी है। चीनी जीवन में जितने रंग हैं, सबके सब बीजिंग में हैं। कला, संस्कार, संस्कृति, खान-पान, पूरा चीन जैसे बीजिंग में नमूना बन कर खड़ा है। 07 जून 1989 को जिस चौक में हज़ारों लोकतंत्र समर्थक छात्रों को टैंको से कुचल दिया गया था वो **'थ्येनआमन चौक'** बीजिंग के बीचोंबीच है। इससे पहले इस चौक का इतना नाम नहीं था। छात्रों ने थ्येनआमन चौक को अपने विरोध के लिए इसलिए चुना था कि रोज़ सुबह और शाम को यहाँ पर चीन का लाल झंडा फहराया और उतारा जाता है। यह बहुत ताम-झाम वाला आयोजन होता है और हज़ारों पर्यटक इसे देखने के लिए 'थ्येनआमन चौक' में पहुँचते हैं। ये वह जगह है जहाँ साठ साल पहले 1949 में माओ ने चीन के रिपब्लिक होने की घोषणा की थी। आज जब बहुत से लोग उस लाल झंडे को चढ़ता-उतरता, फ़हराता देखते हैं, तो उन्हें उस पर ख़ून के अनदेखे धब्बे महसूस होते हैं। लाल झंडा लाल ख़ून की याद दिलाता है। 'थ्येनआमन चौक' के शहीदों ने इस ध्वजारोहण समारोह पर उदासी का एक रंग पोत दिया है, जो देखने वालों को ही दिखता है। महबूब शायर मुनव्वर राना साहब का एक शेर है-

सियासत किस हुनरमंदी से सच्चाई छुपाती है
जैसे सिसकियों के ग़म शहनाई छुपाती है
जो इसकी तह में जाता है वो फिर वापस नहीं आता
नदी हर तैरने वाले से सच्चाई छुपाती है

इसी चौक के पीछे 'फारबिडन सिटी' है, जहाँ एक ज़माने में यहाँ का राजा और उसका परिवार रहा करता था। राजा का महल और बग़ीचा सुंदर चीनी वास्तुकला का नमूना है। यह सन 1406 से 1420 के बीच बनकर तैयार हुआ। यह महल ढ़ाई सौ एकड़ में फैला है। इसमें नौ हज़ार से अधिक कमरे हैं। स्वयं राजा ने भी शायद ही हर कमरे को देखा हो। मिंग राजाओं द्वारा बनाए 'टेंपल ऑफ़ हेवन्स' के लिए एक सुंदर बाग़ में से होकर जाना होता है, जहाँ खुले आसमान के नीचे दिन भर गीत-संगीत और नृत्य के कार्यक्रम चलते रहते हैं। 'टेंपल ऑफ़ हेवन्स' गहरे नीले रंग से की गई चित्रकारी और पच्चीकारी से जगमगाती एक कलाकृति है। बीजिंग घूमने जाओ तो उन खेल मैदानों, स्टेडियम्स की सैर ज़रूर कराई जाती है जहाँ सन 2008 में ओलंपिक खेल हुए थे। इनमें आधुनिक इंजीनियरिंग का एक नायाब नमूना है 'बर्ड नेस्ट'। ये वाक़ई चिड़िया का घोंसला नज़र आता है। बढ़िया मेज़बानी और सबसे ज़्यादा पदक जीत कर चीनी खिलाड़ियों ने बता दिया कि क़द छोटा और बदन दुबला होने के बावजूद वे सबसे ताक़तवर, हिम्मत और मज़बूत इरादों वाले इन्सान हैं। डॉ. राहत इन्दौरी साहब फ़रमाते हैं :

कभी धुएँ की तरह पर्वतों से उड़ते हैं
कभी महक की तरह हम गुलों से उड़ते हैं

कैंचियाँ क्या रोक पायेगी हमें उड़ानों से
हम परों से नहीं हौसलो से उड़ते हैं।

चीन की दीवार के बारे में आपसे क्या कहूँ ? मैने तो ख़ैर इसे वहीं जाकर देखा पर लोग कहते हैं कि ये अंतरिक्ष से भी दिखती है। मेरे ख्याल से अंतरिक्ष में जाकर देखने से चीन जाकर देखना कहीं अधिक सस्ता और सुविधाजनक है। एक नुकसान यह भी है कि अंतरिक्ष से आप इसे छू नहीं सकते, इस पर चल नहीं सकते।

बहरहाल मंगोलों के हमले से बचने के लिए चीनियों ने ये दीवार बनाई थी। आठ हज़ार किलोमीटर लंबी इस दीवार को बनाने में मिंग शासकों को सदियाँ लगीं। इसकी ऊँचाई आठ से दस मीटर तक है और चौड़ाई कहीं पाँच तो कहीं आठ मीटर। इस दीवार को बनाने में भी आम लोगों से बहुत बेगार ली गई और और जो लोग काम करते करते मर गए उन्हें इसी दीवार में दफ़ना दिया गया। इसकी ईंटे पास में से ही मिट्टी खोद कर बनाई गई। पुरातत्वविदों को इसकी ईंटो में कई मानव हड्डियाँ मिली हैं, जिनका मृत्यु काल वही है, जो इस दीवार का निर्माण काल। इसकी ईंटे ख़ास तरह से बनाई गई। लकड़ी की फ्रेम बनाकर गीली मिट्टी भरी गई, फिर ख़ास तकनीक से मिट्टी को दबाया गया और सूख जाने पर फ्रेम को हटा लिया गया। यह दीवार कोरिया के बर्फ़ के पहाड़ों से शुरू होकर गोनी के रेगिस्तानों में जाकर ख़त्म होती है। और तो और समुद्र में भी इस दीवार को खड़ा किया गया है और ऐसा बनाया गया है कि इस पर लहरों का असर न हो। वाक़ई यह धरती पर मानव निर्मित सबसे बड़ा अजूबा है।

गाइड ने जब बताया कि चीनी भाषा में सात हज़ार अक्षर होते हैं तो मैने शुक्र मनाया कि मैं चीन में पैदा नहीं हुआ, वरना बहुत सारा समय इसी को सीखने में लग जाता। टीचरों और घरवालों से पिटता सो अलग। बहरहाल सात हज़ार अक्षरों में से तीन हज़ार तो बहुत ज़रूरी हैं और रोज़ काम आते हैं। चीनी शासन अपनी लिपि को सरल करने के लिए तेज़ी से काम कर रहा है। लाल रंग को यहाँ उत्साह और ऊर्जा का प्रतीक मानते हैं सो जहाँ देखो वहाँ लाल रंग नज़र आता है। मेरा अटल विश्वास है कि बाबा कबीरदास भी ज़रूर चीन गये होंगे। मिसाल है उनका ये दोहा-

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल
लाली देखन मैं गई तो मैं भी हो गई लाल।

पीले रंग के कपड़े राजपरिवार की निशानी हैं। आम लोग यहाँ पीले रंग के कपड़े नहीं पहनते। अलबत्ता मेरी बड़ी इच्छा हुई कि पीला शर्ट पहनूँ और पूरे चीन में पीला शर्ट पहन कर घूमता रहा। बीजिंग में देर रात तक तरह-तरह के शो होते रहते हैं जिनमें चीनी सर्कस और जिमनास्टिक ख़ास हैं। जिमनास्टिक्स के ऐसे करतब दिखाए जाते हैं जिन्हें आप सपने में भी दोहराने की सोच लें तो नसें चढ़ जाएँ और महीनों वज़न उठाने से बचना पड़े। बीजिंग के ''याशो मार्केट'' (नाम नोट कर लीजिए) में मिलता है चीनी सामान। यह एक बहुमंज़िला शॉपिंग कॉम्पलेक्स है। यहाँ भाव-ताव करने की

छूट रहती है। चीनी भाषा में भी किसी दुकान पर 'एक भाव' की तख़्ती नहीं लगी होती। यहाँ से ख़रीददारी करने का गुर यही है कि जो क़ीमत चीनी भाई-भोजाई कहें उसके दस प्रतिशत से शुरू कीजिए। थोड़ी देर में बीस-तीस प्रतिशत में पर सौदा पट जाएगा। किसी और मामले में हिंदी-चीनी भाई-भाई हो ना हों, इस मामले में ज़रूर हैं। एक चीज़ की दिक्कत हो सकती है। बीजिंग में हिंदी का तो ख़ैर कोई सवाल ही नहीं। अधिकांश लोगों को अंग्रेज़ी भी ठीक से नहीं आती। मुमकिन है आप बाथरूम के बारे में किसी से पूछें और वो आपको लाइब्रेरी का पता बता दे। यहाँ दिल की भाषा से काम चलता है, जो एक ग्लोबल ज़ुबान है, यानी मुस्कुराइये और नमस्ते कीजिए। आपकी आँखों से यदि मुहब्बत छलकती है, तो सामने वाले के दिल पर उसके छींटे पड़ ही जाते हैं। फिर उसकी आँखों में भी वही मुहब्बत दिखने लगती है। भले ही फिर वो छोटी-छोटी चीनी आँखें ही क्यों न हों। और आत्मविश्वास से लबरेज़ इनकी आँखें जैसे हमें कह रहीं हों ***''मेरे पड़ोसियों, मेरे भाईयों ! बड़ी जनसंख्या या सीमित संसाधनों से घबराने की ज़रूरत नहीं है और ना ही तरक्क़ी पर सिर्फ़ पश्चिम का एकाधिकार है अगर आप लोग भी ठान लो तो कोई बड़ी बात नहीं है कि जिस तरह दुनिया आज चीन का लोहा मान गयी है, कल भारत के सामने भी घुटने टेक कर उसका अभिवादन करे''।***

बौने क़द के चीनी लोगों के ऊँचे जज़्बे को सेल्यूट कर मैं लौट

> *चाइनीज़ भाषा में लिखा शब्द ''विपक्ष'' दो शब्दों से मिलकर बना होता है, एक का अर्थ है 'ख़तरा' और दूसरे का 'अवसर'।*
>
> ***अज्ञात***

West Watchtower of the Forbidden City (Palace-Museum)-Beijing-China

सिंगापुर

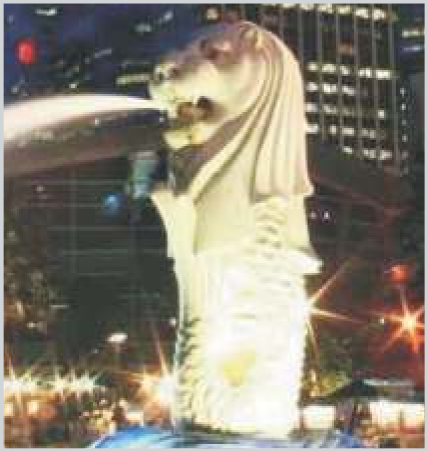

JURONG
BIRD
PARK

एशिया का स्वर्ग... सिंगापुर

न तो उन्हें विरासत में ताजमहल मिला और न एफ़िल टॉवर। न ही प्रकृति ने उन्हें नियाग्रा फ़ॉल जैसा अजूबा दिया और न तेल के कुँओं का वरदान। न तो स्वीट्ज़रलैंड जैसी ख़ूबसूरत वादियाँ दीं और न ही बेशक़ीमती खनिजों के भंडार। उन्होंने अपने देश को बुद्धि की कुशाग्रता और मेहनत के पसीने से सँवारा। आज सिंगापुर अपने छोटे आकार के बावजूद पूरे विश्व का ध्यान अपनी तरफ़ खींचता है और दुनियाभर के पर्यटकों को अपने पास बुलाता है। सिंगापुर भी एक ज़माने में अंग्रेज़ों का ग़ुलाम था। हमें आज़ादी मिलने के बारह बरस बाद उन्हें भी अंग्रेज़ों से मुक्ति मिली। मगर तरक्क़ी के मामले में सिंगापुर हमसे एक सौ बीस साल आगे है।

भारत आज भी जहाँ बुनियादी सुविधाओं के लिए तरस रहा है और लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ रहा है वहीं सिंगापुर वैश्विक स्पर्धा में पूरी ताक़त के साथ सरपट दौड़ चला है। हम मालवा-निमाड़ वालों के लिए ऐसी सड़क की कल्पना करना मुश्किल है जहाँ गड्ढे न हों। साफ़-सुथरे खण्डवा-परतवाड़ा रोड की कल्पना करना भी हमारे लिए सपने जैसा है मगर फिर भी कल्पना कीजिए एक ऐसी सड़क की जो शीशे की तरह सपाट और चिकनी हो, जहाँ बीसियों किलोमीटर तक एक चौराहा नहीं

आता जिससे ट्रैफिक धीमा हो। कल्पना कीजिए ऐसी जगह की जहाँ बिना कंडेक्टर और हेल्पर के बसें चलती हों। कल्पना कीजिए एक ऐसे शहर की जिसकी आबादी चालीस लाख हो, पर कचरे के नाम पर काग़ज़ का एक टुकड़ा कहीं नज़र नहीं आता हो। कल्पना कीजिए ऐसे सुव्यवस्थित शहर की जहाँ बारिश का पानी कुछ ही मिनटों में भूमिगत नालियों में चला जाता हो और सड़कें एक बार फिर सूख जाती हों। नहीं हम ऐसे शहर की कल्पना तक नहीं कर सकते। हमारी जो भी असमर्थता हो, पर सिंगापुर की ख़ूबियां अभी ख़त्म नहीं हुई है। शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है, और सासंद बनने की पहली शर्त ग्रेजुएट होना है। यहाँ उन्नीस सौ चौपन के बाद से कोई दंगा नहीं हुआ। युवाओं से ख़ूब टैक्स वसूल किया जाता है पर इसी में से एक बड़ा हिस्सा वृद्धावस्था पेंशन के रूप में वापस कर दिया जाता है। बहुसंख्यक हैं चीनी, जिनका आबादी में अनुपात है छिहत्तर फ़ीसदी। सोलह प्रतिशत मलय हैं। सात फ़ीसदी हिन्दुस्तानी मूल के लोग हैं।

यूँ तो पूरा सिंगापुर ही देखने लायक है मगर ख़ास तौर पर ख़ूबसूरत है 'सेन्टोसा आईलैंड'। समंदर के अंदर एक द्वीप। इस द्वीप तक जाने के लिए केबल कार का सहारा लेना पड़ता है। केबल कार कहने की कार है उसे अच्छा ख़ासा झूला कहना ही बेहतर होगा। केबल पर झूलने वाली ट्रॉली काफी ऊँचाई से द्वीप तक ले जाती है। हमसफ़र होते हैं ख़ूबसूरत नज़ारे। केबल झूले से दिखता है 'वर्ल्ड ट्रेड सेंटर', बंदरगाह, ऊँचाई से देखने पर बड़े जहाज़ भी बच्चों की काग़ज़ी नाव जैसे लगते हैं। नीले समंदर को जहाँ तक देखिए नीला है। इस द्वीप तक का सफ़र ही इतना मज़ेदार है कि द्वीप पर जो कुछ देखो, वो उस ब्याज की तरह लगता है, जो मूलधन से भी अधिक मिल रहा हो।

'सेन्टोसा द्वीप' पर एक दिन कुछ पलों में बीत जाता है। देखने को इतना है कि आँखें थक जाएँ, मगर पैरों का उल्लास कम न पड़े। एक बड़ा सा म्यूज़ियम है जहाँ सिंगापुर का इतिहास मोम के पुतलों के मार्फ़त सुरक्षित रखा गया है। पुतले इतने सजीव हैं कि लगता है अभी बोल पड़ेंगे। लंदन के मैडम तुसाद म्यूज़ियम की बहुत ख्याति है, मगर उसके मुक़ाबले ये पुतले भी कुछ कम नहीं हैं। यहाँ सिंगापुर के राष्ट्रीय प्रतीक मरलायन की बड़ी सीमेंट प्रतिमा भी है। एक सुंदर सी रेल भी जो पूरे द्वीप की परिक्रमा लगवाती है। बच्चों के लिए वॉटरपार्क, डॉल्फिन और थ्रीडी-शो भी हैं, जिसका मज़ा उम्र में बड़े लोग अधिक लेते नज़र आते हैं। तितलियों का भी एक पार्क है जहाँ तरह-तरह की तितलियों की रंगत बिखरी है।

सबसे अधिक रोमांचक है 'अंडरवॉटर वर्ल्ड'। कई फ़िल्मों में इसे दिखाया गया है। आप तो काँच की एक गुफ़ा में चलते हैं और आपके आस-पास होता है समुद्री जीवन, तरह-तरह की मछलियाँ, ऑक्टोपस, जीव-जंतु। सारे जीव आपके ऊपर से तैरते हुए निकलते हैं तो आपको लगता है कि आप समुद्र में चहलक़दमी कर रहे हैं। हैरत होती है कि ऊपर से नीले दिखने वाले समंदर के अंदर इतने रंग भी छुपे हो सकते हैं।

इस द्वीप का सबसे सुंदर और आकर्षक आयोजन है म्यूज़िकल फाउन्टेन-शो। विश्व के इस सर्वोत्तम संगीतमय फ़व्वारे का शो जब शुरू होता है तो आदमी पलक झपकाना भूल जाता है। आँखों और कानों की दावत हो जाती है। एक घंटे के शो में लेज़र किरणों की दमक और चमक होती है। साथ ही होता है संगीत पर थिरकता पानी। ऐसा लगता है मानो जल की अप्सराएँ नाच रही हैं। अंत में पानी के पर्दे पर ही फ़िल्म प्रदर्शन भी होता है; यानी सबकुछ जलमय।

सिंगापुर का जुरांग बर्ड पार्क दुनिया की उन थोड़ी सी जगहों में से एक है जहाँ आप वन्य पक्षियों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देख सकते हैं। पक्षियों के इस अद्‌भुत संसार में एक-एक घंटे के दो शो भी होते हैं जिनमें पक्षी करतब दिखाते हैं। वैसे ये विरोधाभास है कि एक तरफ़ पक्षियों को प्राकृतिक परिवेश भी दिया जा रहा है और दूसरी तरफ़ उनसे करतब दिखाने का काम भी लिया जा रहा है। (मेनका गाँधी ध्यान दें!)

इसी पार्क में ऊँचाई पर चलने वाली ट्रेन भी है, जो पूरी तरह वातानुकूलित है। ये ट्रेन पक्षियों की दुनिया के भीतर तक आपको ले जाती है। यहीं पर संसार का सबसे ऊँचा मानव निर्मित झरना है। पार्क में पेंग्विन मछलियों की परेड अवाक कर देती है। बहुत देर तक मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकलता।

उदारीकरण के बाद भारत में भी सारी दुनिया की चीज़ें मिलने लगी हैं। इसके बाद से तो कहीं और जाकर ख़रीदी करने का आकर्षण कम हो गया है। मगर फ़िर भी कुछ लोग इसलिए विदेश से ख़रीददारी करते हैं कि वह यादगार रहेगी। अगर आप भी स्मृति चिन्ह के रूप में कुछ ख़रीदना चाहते हैं तो बहुत कुछ यहाँ बड़े-बड़े स्टोर्स में है। इलेक्ट्रॉनिक गुड्स, दुनिया भर के ब्रांडेड (और असली) परफ़्यूम, लगेज़ बैग्स, मेलामाइन के बर्तन, तरह-तरह की टॉफ़ियाँ। जेब ख़ाली कराने की सैकड़ों चीज़ें यहाँ मौजूद हैं। पाँच मंज़िला मुस्तफ़ा सेंटर पर वह सब मिल सकता है जो इंसान की ज़रूरत में शामिल होता है और ऐश्वर्य में भी। रेट एकदम फ़िक्स हैं और इस लक्ज़री को देखते हुए वाजिब भी। ख़ास बात यह कि यहाँ पर एक ऐसी काग़ज़ी कार्रवाई भी की जाती है, जिसके कारण ख़रीदारी पर वेट टैक्स में छूट मिल जाती है। एक मनी एक्सचैंज काउंटर है जहाँ पर हर देश की मुद्रा को सिंगापुरी डॉलर्स में बदला जा सकता है। हम जैसे शाकाहारियों और वैष्णव भोजन के लिये भी यहाँ कई रेस्टारेंट्स हैं।

पर्यटकों को सबसे ज़्यादा लुभाते हैं वो बड़े-बड़े पानी के जहाज़ जिन्हें क्रूज़ कहा जाता है। बचपन में सुना था कि ऐसे जहाज़ होते हैं जिनमें स्वीमिंग पूल भी होता है। सुन कर यक़ीन नही आया था। पर यहाँ खुद अपनी आँखों से देखा ऐसा जहाज़ जिसमें तेरह मंज़िलें थीं। इन तेरह मंज़िलों में थे नौ सौ अस्सी कमरे। दो हज़ार लोग इस क्रूज़ पर सफ़र कर सकते हैं।

जिनकी ख़ातिरदारी के लिए स्टाफ़ है ग्यारह सौ लोगों का। यानी समुद्र पर तैरता एक छोटा सा शहर। स्वीमिंग पूल तो ख़ैर इस तैरते शहर में है ही, बच्चों के लिए वॉटर पार्क, ग़ेम्स रूम, वीडियो ग़ेम्स, जकूज़ी, हेल्थ क्लब, वॉलीबॉल कोर्ट, फुटबॉल मैदान, लायब्रेरी, स्टडी रूम, कम्प्यूटर रूम, आर्ट गैलेरी, पिक्चर हाल, नाट्य गृह, अस्पताल, डिस्को थेक और दुनिया भर की बेहतरीन चीज़ों से भरा एक बाज़ार। जुए का शौक रखने वालों के लिए कैसीनो, रमी फ़्लश के शौकीनों के लिए कार्ड रूम। एक पुलिस थाना, एक जेल और एक अदालत ये तीन चीज़ें और होतीं तो इस जहाज़ को ज़िला ही कहा जा सकता था। मगर इसका मतलब यह नही कि यहाँ आप मनमानी कर सकते हैं। हिडन कैमरे के ज़रिये लगातार चप्पे-चप्पे की निगरानी की जाती है। सुरक्षाकर्मी एक मिनट में हाज़िर हो कर गड़बड़ करने वाले को रोक सकते हैं। तीन सौ मीटर लंबे और तीस मीटर चौड़े इस जहाज़ पर यह पूछिए कि क्या नहीं है! सारी सुविधाएँ सात सितारा स्तर की। हमने जिस 'सुपर स्टार विग्रो क्रूज़' से यात्रा की वह 150 करोड़ की लागत से बनकर सन् 1999 में जर्मनी से सिंगापुर आया था। बनने में समय लगा था : अठारह महीने।

इस क्रूज़ पर दुनिया के कई देशों का खाना मिलता है। कोई आठ रेस्टोरेंट हैं जहाँ चाईनीज़, जापानी, थाई, सिंगापुरी, मलेशियन और हाँ इंडियन खाने का मज़ा भी लिया जा सकता है। पिक्चर हॉल में चौबीसों घंटे फ़िल्म चलती रहती है। बिना किसी शोर-गुल के ये जहाज़ अठारह घंटे में मलेशिया ले जाता है और वहाँ की सैर कराता है। पूरा एक दिन वहाँ रूक कर फिर अठारह घंटे में आपको सिंगापुर ले आता है। यात्रा मालूम ही नहीं पड़ती। जैसे पृथ्वी के घूमने का हमें कोई पता नहीं लगता लगभग उसी तरह हम मनोरंजन में मगन रहते हैं और सफर हो जाता है। अगर आप सफर को महसूस करना चाहें तो डेक पर खड़े होकर अनंत समुद्र को निहार सकते हैं और देख सकते हैं आते-जाते जहाज़ों को और द्वीपों पर अटखेलियाँ करतीं हुई मछलियों को। सफर इतने इत्मीनान से होता है कि पीछे छूटती रोशनियों से ही महसूस होता है कि अरे मलेशिया का किनारा छूट गया। वापसी के दौरान क्रूज़ में एक संदेश लिखा दिखता है- ***''आपकी मुस्कुराहट ही हमारे कर्मचारियों के लिए सबसे बड़ी टिप है।''***

ऐसा भी नहीं कि सिंगापुर-मलेशिया में सब कुछ उजला-उजला ही है। यहाँ दुनिया की अनेक भाषाओं में संकेत बोर्ड और संदेश पढ़ने को मिल जाएंगे जैसे चाइनीज़, जापानी, मलय तथा और भी कई भाषाओं में, लेकिन हिंदी में कुछ नहीं मिलता। सिंगापुर के बाज़ारों में दक्षिण भारतीय लोग ख़ूब टकराते हैं पर ये भी हिंदी में बात करने में अपनी हेठी महसूस करते हैं। एक तरह से ठीक भी है। जिस भाषा को अपने घर में ही इज्ज़त नहीं मिलती वह परदेस में क्यों सम्मानित हो ? आम तौर पर हिन्दुस्तानियों की पर्चेसिंग

पावर कम होती है। इसलिए वहाँ के गाइड और दुकानदार भी हिन्दुस्तानियों को बहुत तवज्जो नहीं देते। दुकानदारों को पता होता है कि हिन्दुस्तानी आदमी भले ही किसी चीज को पचास बार उलट-पलट के देख ले पर जैसे ही वह डॉलर में भाव को केल्कुलेटर से रुपये में बदलेगा; भाग खड़ा होगा।

सिंगापुर एयरपोर्ट पर जब हम उतरते हैं तो घड़ी को ढाई घंटे आगे करना होता है। ये इस बात का प्रतीक है कि सिंगापुर वाले हमसे बहुत आगे हैं। जैसे-जैसे हम सिंगापुर में घूमते जाते हैं, पता चलता है कि वे हमसे कितना आगे हैं। काश इस बात को हम चुनौती की तरह लें और अपने देश को भी ऐसा बना दें कि कहीं जाने पर घड़ी को आगे करना केवल तकनीकी अमल भर रहे। इस बात का प्रतीक न बने कि हम बहुत पीछे हैं।

कैसे जाएँ सिंगापुर ?

अपने देश के चारों महानगरों से नियमित फ्लाइट्स हैं। अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में चल रही गलाकाट स्पर्धा के कारण किराया कम हो गया है। पाँच-सात दिन का टूर ख़ुद भी बना सकते हैं। विश्वस्तरीय टूरिंग कंपनियाँ जो पैकेज़ टूर आयोजित कर रही हैं, उनके माध्यम से जाना सुविधाजनक और किफ़ायती रहता है। सिंगापुर पहुँचने के बाद पर्यटन स्थलों से संबंधित गाइड और पुस्तिकाएँ मुफ़्त मिलती हैं। ज़्यादा जाँच-पड़ताल करनी हो तो ये रही सिंगापुर टूरिज्म की वेबसाइट www.newasia-singapore.com। स्टार क्रूज़ के लिए वेब साइट www.starcruises.com की सैर कर लें। चाहे तो इसी टूर में बैंकाक, पटाया, फूकेट, मलेशिया या फिर हाँगकाँग को भी जोड़ा जा सकता है।

जुर्माने का देश सिंगापुर...

सिंगापुर को लोग जुर्माने का देश भी कहते हैं। पहली बार यदि आप सार्वजनिक स्थान पर सिगरेट पीते पकड़ाएँ तो एक हज़ार डॉलर का जुर्माना। दूसरी बार तो यह रकम बढ़ जाएगी। ग़लत तरीक़े से रोड पार करने का जुर्माना है पचास डॉलर। न देने पर जेल। चुइंगम चबा कर ग़लत जगह फ़ेकने और थूकने पर भी जुर्माना है। एक सिंगापुरी डॉलर की क़ीमत पैंतीस रुपये है। सिंगापुर के लोग सोच भी नहीं सकते कि दुनिया में कोई ऐसी जगह भी है जहाँ लोग थूकना तो क्या लघुशंका तक सड़क पर कर सकते हैं। सड़क पर आवारा पशुओं की तो कल्पना सिंगापुर में नामुमकिन है। यहाँ आएँ तो नागरिक-अनुशासन का सबक़ सीखने को मिलता है।

> *विश्व एक किताब की तरह है।*
> *जो यात्रा नहीं कर पाते वे किताब*
> *का बस एक पन्ना ही पढ़ पाते हैं।*
>
> ***संत ऑगस्तिन***

Singapore Skyline at Dusk

हांगकांग

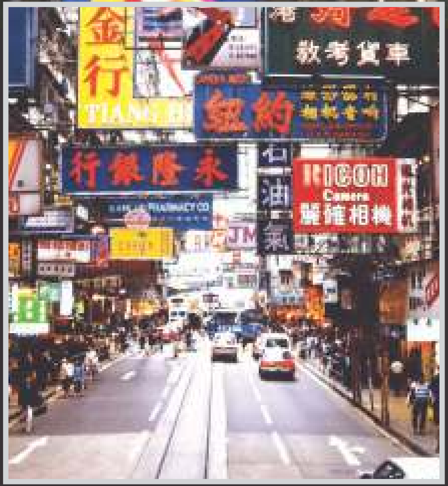
RICOH
Camera

रात का सूरज...
हाँगकाँग

हाँगकाँग यानि... पानी में तैरते दो सौ साठ द्वीपों का ऐसा समूह जहाँ रोमांच है तो धैर्य भी, तरक्की है तो संस्कृति भी, मस्ती है तो अनुशासन भी, भीड़ भरी गलियाँ है तो वीरान समुद्र तट भी, पर सबसे हटकर ये एक ऐसा देश है जहाँ पश्चिमी उदारता है तो पूर्वी सभ्यता भी... यक़ीनन गागर में सागर समेटे दो विपरीत ध्रुवों का मिलन।

बात है 1840 की, चीन और ब्रिटेन के बीच एक भीषण युद्ध छिड़ा। युद्ध के दौरान एक ब्रिटिश जहाज़ जिसमें बेशक़ीमती अफ़ीम भरी हुई थी, चीनी सेना ने डुबो दिया। इस घटना ने युद्ध की आग में और घी डाल दिया। युद्ध की परिणीति में चीन की हार हुई और एक छोटा किन्तु बेहद महत्वपूर्ण पोर्ट ब्रिटिश अधिपत्य में आ गया। 1842 के ऐतिहासिक युद्ध में विजय के बाद पूर्वी एशिया के एक पथरीले बंजर मछुआरों के गाँव पर अंग्रेजों ने अपना यूनियन जैक शान से फहरा दिया। हुक़ूमत-ए-बरतानिया को इस भूमि से इतना प्यार हुआ कि उन्होंने अपने पास उपलब्ध विकास के सारे संसाधन दिल खोल कर यहाँ उड़ेल दिये और देखते ही देखते हाँगकाँग सम्पूर्ण एशिया ही नहीं वरन विश्व का एक महत्वपूर्ण वित्तीय हब बन गया।

1984 में अंग्रजों और चीनियों के मध्य हुई एक संधि के तहत अंग्रजों ने 1 जुलाई 1997 को विशेष शर्तों के साथ इसे वापस चीन को सौंप दिया। चीन ने भी ''एक राष्ट्र, दो व्यवस्था'' के तहत एक बोर्ड (हाँगकाँग स्पेशल एडमिनिस्ट्रेटिव रीज़न) गठित कर उसे हाँगकाँग का प्रशासन सौंप दिया। चीन के अधिपत्य में आने के बाद उस बोर्ड ने 4000 साल पुरानी चीनी विरासत और 150 साल के ब्रिटिश प्रभाव की गंगा-जमुनी धारा को एक नई दिशा देते हुए विकास का प्रवाह और तेज़ कर दिया। ग्यारह सौ वर्ग किलोमीटर में 6.9 मिलियन जनसंख्या समेटे इस हाँगकाँग को भौगोलिक दृष्टि से चार भागों में बाँट सकते हैं, हाँगकाँग **आइलैंड, कोवलून, न्यू टेरेटरी और आउट लाइंग आइलैंड।** आज व्यापार, व्यवसाय, कला, संस्कृति का यह महत्वपूर्ण केन्द्र सारी दुनिया के पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित कर रहा है कि वे आएँ और हाँगकाँग पर्यटन बोर्ड के ***''लव इट-लिव इट''*** के नारे को स्वयं अनुभव करें। आप पूछिये तो सही... इस हाँगकाँग में पर्यटकों के लिये क्या नहीं है ? समंदर के ख़ूबसूरत किनारे, बेहतरीन खाना-पीना, आरामदेह होटल, किफ़ायती घूमना फिरना। मिसाल के तौर पर भारतीय रुपये के हिसाब से मात्र तीन सौ रुपये का टिकट लेकर आप एक लोकल ट्रेन में चौबीस घंटे कहीं भी घूम सकते हैं। लोकल ट्रेन यानी मुंबई की भीड़ भरी लोकल ट्रेन नहीं। 'एक चालीस की लास्ट लोकल' जैसी उजाड़ भी नहीं...। मुंबई में बीस रुपये का टिकिट लेकर दिन भर एसटी की बस में घूम सकते हैं, पर इतने ट्रैफ़िक जाम में भला कितनी जगह जाया जा सकता है ? दो-तीन जगह जाने में ही दिन ख़त्म हो जाता है। यहां हाँगकाँग में ऐसा नहीं है।

हाँगकाँग यूँ तो सर्वांग सुंदर है। मगर ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत औरत भी किन्हीं ख़ास परिधान में गरिमामय और सुंदर लगती है, इसी तरह दिया बत्ती के समय हाँगकाँग ख़ास ख़ूबसूरत लगता है। सूरज ढल रहा होता है और लाइटें जल रही होती हैं, तब ऐसा लगता है एक सूरज की कमी पूरी करने के लिए दूसरा सूरज रोशन किया जा रहा है। अब्दुल हमीद अदम का शेर है-

निकल आए है रात कि आफताब,
सहर हो गई है सरे शाम लो...।

तो सरे शाम वहाँ सहर, यानी सुबह हो जाती है। उर्दू में सहर के एक और मानी जादू से है। जादू भी हो जाता है। हाँगकाँग में शाम होते जादू ही हो जाता है। जैसे मुंबई की रौनक़ देखने के लिए हैंगिंग गार्डन है, उसी तरह यहाँ की रौनक़ दिखती है 'एवेन्यू ऑफ़ स्टार' नाम की जगह से। पूरी धरती पर निऑन लाइट्स का सबसे अधिक इस्तेमाल यहीं हाँगकाँग में होता हैं। 'एवेन्यू ऑफ़ स्टार' से देखने पर पता चलता है कि वाक़ई निआन लाइट्स की भरमार यहीं है। 'विक्टोरिया हार्बर' यहीं है। यहाँ से बोट के ज़रिये आप थोड़ा घूम सकते हैं। फिर दिखता है नशा सा तारी कर देने वाला नज़ारा 'सिम्फनी ऑफ लाइट' में। गिनिस बुक में ये शो दुनिया के सबसे बड़े

स्थायी लाइट एण्ड साउंड शो के रूप में दर्ज़ हैं। रात के ठीक आठ बजे चालीस से अधिक गगनचुंबी इमारतों पर एक साथ प्रकाश-सज्जा का ऐसा शो शुरू होता है, जिसे अपलक निहारते हुए पर्यटक सुध-बुध खो देते हैं। अचानक अपोलो टायर्स के हेड-सेल्स श्री राजेश दहिया मुझे शकील बदायूनी का यह शेर सुनाते हैं

ये दिल की लगी कम क्या होगी
ये इश्क़ भला कम क्या होगा
जब रात हो ऐसी मतवाली
फिर सुबह का आलम क्या होगा।

नशा सा कर देने वाले इस नज़ारे का उतारा 'हार्बर सिटी' में सबसे बढ़िया होता है। तीन सौ रुपये वाली लोकल यहाँ भी छोड़ती है। नशा उतारने के लिए यहाँ ख़रीददारी कीजिए। पैसे पर हाथ जाते ही हर भारतीय का नशा काफ़ूर हो जाता है और तर्क शक्ति काम करने लगती है। लोग कहते है नशा उतारने के लिए आदमी को नींबू चटाना चाहिए, नमक का पानी पिलाना चाहिए वग़ैरह-वग़ैरह। मैं कहता हूँ कि आदमी से उसका पर्स ले लेना चाहिए। नशा फ़ौरन उतर जाएगा और नहीं उतरना होगा तो नींबू से भी नहीं उतरेगा। बहरहाल हम बात कर रहे थे दो मिलियन वर्ग फुट में फैली 'हार्बर सिटी' की। ये दरअसल हाँगकाँग का सबसे बड़ा शॉपिंग मॉल है। हाँगकाँग में डर्बी का भी एक इतिहास है। ब्रिटिश आर्मी ने जब यहाँ अपनी छावनी बनाई तो समय व्यतीत करने और आनंद के लिए वे घुड़दौड़ और उससे जुड़े खेल खेलने लगे। धीरे-धीरे यह शौक चीनियों को भी लग गया और इसने एक पर्सनल स्पोर्ट्स का रूप लिया। आज हाँगकाँग डर्बी की वैश्विक राजधानी है।

यहाँ सात सौ दुकानें हैं। इन सात सौ दुकानों में मिलती हैं घड़ियां, खिलौने, कपड़े और ऐसी ही पैसा खर्च करने की ख़ुराफ़ाती चीजें। खाना-पीना भी है। आर्ट गैलरी और सिनेमाघर भी। छह या सात भारतीय रुपये का एक हाँगकाँग डॉलर आता है। इसे ख़र्च करने में ख़ासी सतर्कता की ज़रूरत होती है। और हाँ जिस तरह इंदौर में आड़ा बाजार और उसके आस-पास का इलाक़ा महिलाओं के लिए है, वैसे ही हाँगकाँग में भी एक लेडिज़ बाज़ार है। शायद हर शहर में होता है। नहीं है तो होना चाहिए...। एक जगह तो ऐसी हो, जहाँ महिलाएं खुल कर अपनी ज़रूरत की चीज़ें और मंजा सूतने की चीज़ें ले सकें। बहरहाल घड़ियों और खिलौनों का सबसे बड़ा निर्यातक देश हाँगकाँग ही है। हीरों का सबसे बड़ा मार्केट भी यही शहर है और ब्राँडी का सबसे बड़ा पियक्कड़ भी यही है। हम भारतीयों के हिसाब से हाँगकाँग का मौसम बेहद आरामदेह है। न सर्दी बहुत ज़्यादा और न गर्मी। सर्दी में पारा रहता है चौदह से उन्नीस डिग्री के बीच और गर्मी में पच्चीस से बत्तीस। यानी हम रहें तो हमें न गर्म कपड़ों की ज़रूरत है और न ही पँखे कूलर या एसी की।

हाँगकाँग अगर जाए तो **'मकाऊ'** भी हो आना चाहिए। वरना कोई जानकार पूछेगा कि 'मकाऊ' गए थे। आप कहेंगे कि नहीं 'मकाऊ' का तो ध्यान ही नहीं आया। जानकार बड़ी मक्कारी से हँसेगा। फिर कहेगा कि स्टीमर से एक घंटे में वहाँ पहुँच जाते। वीज़ा की भी कोई ज़रूरत वहाँ नहीं होती। स्पॉट वीज़ा हाथों हाथ मिल जाता है। 'मकाऊ' चले जाते तो एक ही टिकट में दो देशों का सफ़र हो जाता। आप माथा ठोक लेंगे कि लोगों को मीन-मेख निकालने के लिए कुछ न कुछ मसाला हमेशा क्यों मिल जाता है।

'मकाऊ' को छोड़कर अपन फिर हाँगकाँग पर लौटते हैं। सुंदर समुद्र तटों में से एक है **'रिटलस बे'**। यहाँ हाँगकाँग के देवताओं की दस-दस मीटर की दो मूर्तियाँ देखने लायक हैं। 'जंबो किंगडम' नाम का एक चाईनीज़ रेस्टॉरेंट तो ऐसा है, जहाँ दुनिया के लगभग हर हिस्से का खाना मिलता है। मुल्ला की दौड़ मस्ज़िद तक और आलोक सेठी की दौड़ शाकाहारी भारतीय खाने तक...। ज़ाहिर है उसने यहीं खाया।

हाँगकाँग जाएँ तो थोड़ी सी इतिहास की जानकारी भी लेते आना ज़रूरी है। वर्ना लोग कहेंगे कि क्या सिर्फ़ खाने-पीने और मज़ा करने गए थे। पढ़े-लिखे आदमी को इससे ज़्यादा भी कुछ करना चाहिए। सो ये किया कि हम **'गोल्डन बाहुनिया स्क्वेयर'** गए। ये वो स्मारक है, जो चीन में हाँगकाँग कि विलय का प्रतीक है। बीजिंग के 'थ्येनआमन चौक' की ही तरह यहाँ भी रोज़ सुबह सुनहरे सितारे टँका लाल रंग का चीनी झंडा फहराया जाता था। सन् 1842 में अंग्रज़ों ने हाँगकाँग जीता था तब से ये उन्हीं के पास था। उन्होंने इस पर ख़ूब प्यार लुटाया और इसे दुनिया भर के पर्यटकों में मशहूर कर दिया। फिर सन् 1984 में एक संधि हुई जिसके तहत ब्रिटेन ने हांगकांग चीन को देना क़ुबूल किया। हाँगकाँग चीन का ही हिस्सा था। फिर सन् 1997 को कुछ ख़ास शर्तों के साथ इसे चीन को सौंप दिया गया। चीन ने भी इसके विकास में रोड़ा नहीं अटकाया और जैसा चल रहा था वैसा ही चलने दिया। कुछ एक जगह थोड़े से बदलाव हुए पर ऐसे भी नहीं जिनका पता पयर्टकों को चलता हो।

कुछ मोटी जानकारी उन लोगों के लिए जो हर घाट-बाट की जानकारी रखना फर्ज़ समझते हैं। ख़ुद भले ही न जाएँ, पर दूसरों को रास्ता दिखा सकते हैं। मज़े की बात यह कि इस देश में घूमने-फिरने की कोई भी जगह होटल से एक घंटे से ज़्यादा दूरी पर नहीं है। इससे ज़्यादा वक़्त लगे तो समझ लीजिये टैक्सी वाला बदमाशी कर रहा है। यहाँ आप वह सब देख और कर सकते हैं जो पर्यटन के लिए मशहूर किसी भी समुद्र तटीय शहर में होता है। एक्वेरियम, डॉल्फिन शो, केबल कार, एयर बैलून, डिज़्नीलैंडनुमा पार्क, बौद्ध मंदिर। बौद्ध मंदिर से याद आया कि जॉइन्ट बुद्ध की ख़ास प्रतिमा भी यहीं है। ये सब तो किसी भी समुद्रतटीय शहर में होता है। मगर इससे परे एक चीज़ होती है, वह है किसी शहर का हवा पानी, उसका समग्र प्रभाव...। वाक़ई हाँगकाँग प्यार करने लायक है। सैकड़ों बरसों से यह ऐसे ही इतना लोकप्रिय नहीं है।

आप हाँगकाँग की भीड़ भरी गलियों में घुमें या फिर हरे-भरे बाग़ानों में। किसी शॉपिंग मॉल में ख़रीदी करें या फिर किसी रेस्तराँ में बैठकर ज़ायकेदार व्यंजनों का लुत्फ़ उठाएँ; आपको हर जगह कुछ नया मिल जाएगा। कुछ ऐसा जो जीवन में आपके लिये अभूतपूर्व हो। सूर्यास्त के समय किसी भी समुद्री तट पर डुबकी लगाते हुए जैसे ही आपकी नज़र उन गगनचुम्बी इमारतों में से झाँकती सूरज की लालिमा पर जाएगी तो आप स्वयं कह उठेंगे कि हाँगकाँग दुनिया तुम्हारे लिये सही कहती है .... ***Live it - Love it.***

हाँगकाँग एयरपोर्ट

सालों पहले 1.2 बिलियन डॉलर से भी अधिक राशि से निर्मित हाँगकाँग का एयरपोर्ट भी अपने आप में एक अजूबा है। ज़मीन की कमी से जूझ रहे इस छोटे से देश में समुद्र के बड़े हिस्से को पाट कर इसे बनाया गया है। अगर इस एयरपोर्ट के निर्माण और विशेषताओं पर लिखने बैठेंगे तो वह भी अपने आप में एक बेहद रोचक और बड़ी कहानी है। हमारे लिए सिर्फ इतना ही जान लेना काफी है कि विश्व में एयरपोर्ट पर यात्रियों को दी जाने वाली सुविधाओं पर विमान तलों की अंतर्राष्ट्रीय परिषद (ए.सी.आर) की रेंकिंग में यह विमानतल में तीसरा स्थान रखता है। अब बात निकली है तो बता दें कि पहले स्थान पर लगातार कई वर्षों से दक्षिण कोरिया का 'इनचेयोन एयरपोर्ट' और दूसरे स्थान पर सिंगापुर का **'चांगी एयरपोर्ट'** बने हुए हैं। इस बार हम भारतीयों के लिए भी सीना चौड़ा करने वाली बात यह है कि हैदराबाद का एयरपोर्ट इस रेंकिंग में पाँचवे स्थान पर है। एक और गौरव की बात यह है कि चौथे स्थान पर भी एशिया का ही बिजींग एयरपोर्ट है। विकास के नाम पर अपनी डींगे हाँकने वाली पश्चिमी दुनिया को यह करारा जवाब है कि दुनिया के पहले पाँच सर्वश्रेष्ठ एयरपोर्ट्स एशिया में ही है।

> *हर एक समय हाँगकाँग की पन्द्रह प्रतिशत इमारतों का विध्वंस, निर्माण, जीर्णोद्धार या पुनःनिर्माण हो रहा होता है।*
>
> **बूथ मार्टिन**

Hong Kong International Airport

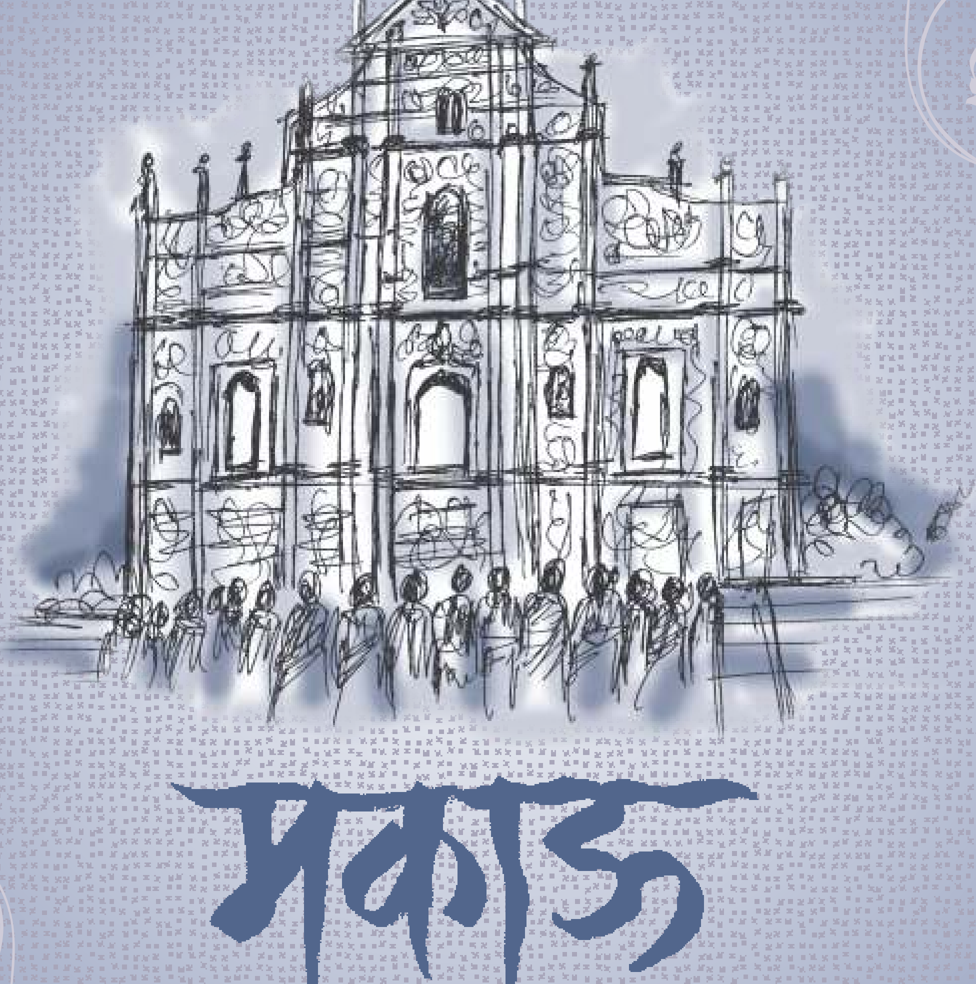

मकाऊ

पूर्वी दुनिया का लास वेगास...
मकाऊ

बेबाक बहती किसी पहाड़ी नदी की लहरों की तरह मचलती, उछलती, चकाचौंध कर देने वाली रोशनी, एक दूसरे से होड़ करती भव्य अट्टालिकाएँ, साफ-सुथरी चौड़ी सड़कों पर सरपट दौड़ती महँगी कारें, कलकल बहती रंगीनियत, मदहोश कर देने वाली मस्ती और अचम्भित कर देने वाली समृद्धि समेटे दुनिया के पूर्वी हिस्से का यह 30 वर्ग कि.मी. से भी छोटा देश मकाऊ बाहें फैलाए आपका इंतज़ार कर रहा है।

चीन के पूर्वी तरफ प्रशांत महासागर में हाँगकाँग के बिल्कुल समीप मकाऊ एक स्वतंत्र द्वीप है। लम्बे समय तक पुर्तगालियों और यूरोपियन देशों के राज ने इस द्वीप को पश्चिमी रंग में रंगने का काम किया तो इसकी रगों में फैले चीनी और पूर्वी संस्कारों ने इसका पूर्वी रंग बरक़रार रखने की भरसक कोशिश की। इन दोनों सभ्यताओं के इस 'फ़्यूज़न' ने मकाऊ को ईस्ट और वेस्ट का 'हाइब्रिड' बना दिया। यहाँ की गलियाँ आपको यूरोप का तड़का देंगी तो यहाँ के प्राचीन मंदिर और परम्परागत घर आपको 400 साल पुरानी चीनी सभ्यता का स्वाद चखाएंगे।

दिसम्बर 20, 1999 को एक संधि के तहत यूरोपियन देशों ने इसे चीन को वापस सौंप दिया। तब से आज तक के इन दस सालों में चीन ने इसका वही पुराना स्वतंत्र अस्तित्व क़ायम रखते हुए अपने संसाधनों से

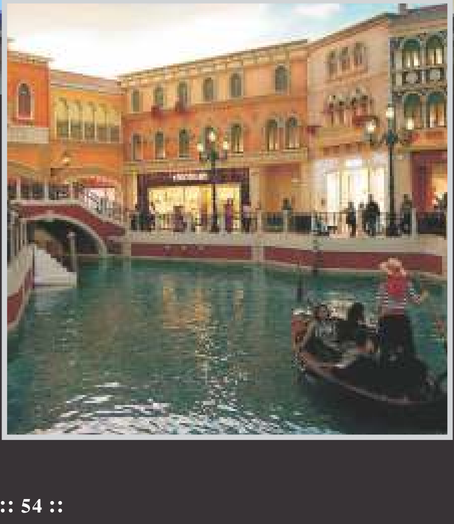

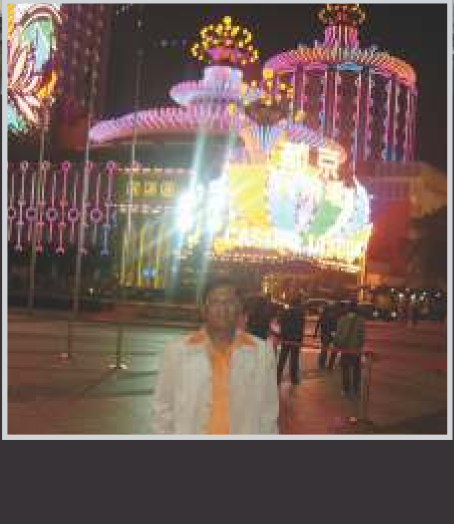

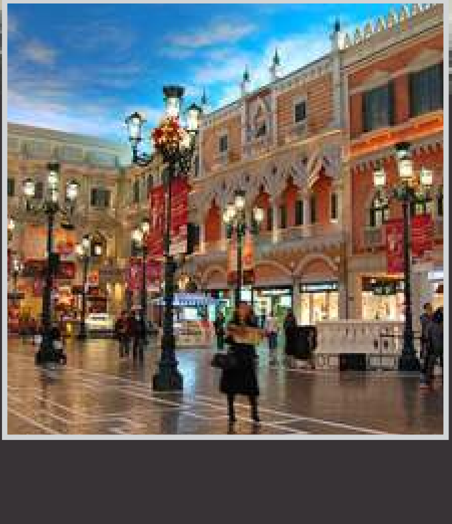

इसका रूप ही बदल दिया। आज मकाऊ चीन के अधीन एक ऐसा द्वीप है जिसकी अपनी स्वयं की मुद्रा, संविधान और कानून क़ायदे हैं।

मकाऊ यानि कि कमाल का द्वीप... जहाँ जाने के लिये सबसे सुलभ मार्ग व्हाया हाँगकाँग है। हाँगकाँग पोर्ट से दिन-रात मकाऊ के लिये समुद्री मार्ग से फेरी चलती रहती है, जो कि मात्र एक घंटे में आपको मकाऊ द्वीप पहुँचा देती है। मकाऊ में भारत से आए यात्रियों के लिये स्पॉट वीज़ा की सुविधा भी है भारतीयों को यहाँ की यात्रा के लिये पहले से वीज़ा नहीं लेना होता है।

अगर आपने ये किताब बीच में से नहीं खोली है और सिलसिलेवार ही पढ़ रहे हैं तो आपका याद होगा कि मैंने हाँगकाँग वाले पिछले अध्याय में मकाऊ का ज़िक्र किया था। बहरहाल कस्टम क्लियरेंस होते ही हमें चमचमाती बसें दिखीं। ये बसें ले जाती हैं, केसीनों तक, होटलों तक। ज़ाहिर है ये उन्हीं की बसें होती हैं। बिना शुल्क ले जाती हैं... इन्हें पता है कि होट्ल्स और केसीनों में जो माल ये लोग ख़र्च करने वाले हैं, उसके आगे बस का किराया कुछ नही है। मगर ये समझदारी भी मेहमाननवाज़ी में शामिल मानना चाहिए। अपने यहाँ कितनी ही ऐसी जगहें हैं, जहाँ पर्यटक ख़ूब आते हैं, पर मजाल है जो वहाँ मेहमानों का किसी भी तरह ख़याल रखा जाता हो। सलीक़ा देखिए; केसीनों वाले सीधे एयरपोर्ट पर बस भेज रहे हैं।

यहाँ बस ड्रायवर ही गाइड भी होता है। केसीनों ले जाते हुए बताता रहता है कि कौन सी चीज़ क्या है और उसका महत्व क्या है। बाक़ायदा माइक लगा होता है और पूरी बस में स्पीकर। शहर में दाख़िल होने से पहले तीन पुलों पर से गुज़रना होता है। ये तीनों पुल लहरदार बनाए गए हैं। समंदर की लहरों जैसे मज़ा बस में आता है। जो चीज़ इन लोगों ने इतनी मेहनत से बनाई है, हम मध्यप्रदेश वालों की ख़ुशक़िस्मती से हमें मुफ़्त मिलती है ! हमारी सड़कों पर चलते समय बहुत तरह के अनुभव होते हैं। कभी लगता है समंदर पर चल रहे हैं, कभी लगता है इस समंदर में तूफान आ गया है। बहुत बड़े गड्ढे पर जब बस उछलती है, तो पहले हवा में उड़ने का और फिर लिफ़्ट में गिरने का अहसास होता है। इस मामले में मकाऊ अभी हमसे बहुत पीछे है। इन्होंने केवल लहर वाले पुल बनाए हैं। ड्रायवर ने बताया कि पुल का डिज़ाइन पुर्तगाली इंजीनियर 'कारडोसा' ने बनाया है। मुझे यक़ीन है कि उसे इस डिज़ाइन की प्रेरणा हिंदुस्तानी रास्तों और बसों से मिली होगी। तीन पुलों में से सबसे पुराना 1974 में बना। फिर पुर्तगाली और चीनी मैत्री के नाम पर दूसरा पुल बना, फिर सबसे बाद में बना साइवान नाम का पुल जो मकाऊ के दो द्वीपों को आपस में जोड़ता है। ये तारों पर झूलता ऐसा पुल है जिसके दो पिलर्स की दूरी 180 मी. है। ये तीनों पुल मकाऊ की जीवन रेखा हैं। तीन लाइफ लाइन...।

पुर्तगाल वाला क़िस्सा यह है कि ये पुर्तगाल के क़ब्ज़े में था। अब ये चीन को सौंपा जा चुका है, मगर मकाऊ का अपना क़ानून, अपनी अलग मुद्रा और संविधान भी है। हालांकि इस शांत द्वीप पर ऊपर लिखी गई तीन चीज़ों में से दो ज़्यादा काम नहीं आती हैं। संविधान के ख़िलाफ़ कुछ होता होगा ये सोचना ग़लत है और क़ानून के इस्तेमाल का ज़्यादा मौक़ा नहीं आता। इन दो चीज़ों की पूर्ति वहाँ की मुद्रा करती है।

आइये अब थोड़ी बात करें मकाऊ की ख़ूबसूरती की। इस देश का कुल क्षेत्रफल तीस वर्ग किलोमीटर है। अगर आपने पत्थर भी ज़ोर से फैंक दिया तो देश से बाहर जा गिरेगा, वह भी बिना किसी पासपोर्ट या वीज़ा के। चीन के पूर्वी तरफ प्रशांत महासागर में हाँगकाँग के बिल्कुल नज़दीक़ एक शांत सुरक्षित देश। यहाँ की गलियाँ यूरोप की याद दिलाती हैं, तो प्राचीन मंदिर चीनी सभ्यता की। ज़मीन का सदुपयोग या स्पेस मेनेजमेंट किसे कहते हैं यहाँ आकर सीखा और देखा जा सकता है। सँकरी गलियों में नज़र आते हैं यूरोपियन शैली के घर... अंडाकर दरवाज़े, सफेद गोल पिलर, अतिसुंदर कारविंग डिज़ाइन और खिड़कियाँ-कंगूरे भी रोमन शैली के। मगर इन्हीं घरों की अंदरूनी सजावट चीनी ढंग की है। मकाऊ की ऐतिहासिक इमारतों में से एक है **'सेंटपॉल बिल्डिंग'**। इसे देख कर वह शायराना की पंक्ति याद हो आती है-

''खंडहर बता रहे हैं... कभी इमारत बुलंद थी।''

खंडहर हालत में भी इस इमारत की पुरानी शान शौक़त की एक झलक छुपी है। सोलहवीं शताब्दी में यहाँ एक केथेड्रल और एक विश्वविद्यालय हुआ करता था। कुछ अग्निकांडों ने इसके वैभव को नष्ट किया। इसमें स्लेटी रंग की सीढ़ियाँ है और ऊपरी भाग में एक क्रॉस है। तीसरे चढ़ाव के बाद काँसे की मूर्ति है। एक ज़माने में मकाऊ में भी हथियारों का कारख़ाना था। ये मूर्ति वहीं ढाली गई है। सुर्ख़ पत्थरों और हरी ग्लेज़्ड टाइल्स से बना एक मंदिर भी यहाँ है, जो चीनी स्थापत्य कला का नमूना है। एक सौ बीस साल पुरानी इस इमारत को **'नाचा मंदिर'** कहते हैं। नाचा का चीनी या मकाऊ भाषा में न जाने क्या मतलब है लेकिन त्योहारों पर मकाऊ के लोग यहाँ आकर अपने परंपरागत नाच-नाचते हैं ज़रूर। लॉयन डांस, ड्रेगन डांस। मुल्क़ों की सरहदें अलग होती हैं लेकिन अनायास कुछ शब्द-ध्वनियाँ कभी उनके एक होने का अहसास देती हैं। मकाऊ की पुरानी गलियों से अलग यहाँ के दूसरे द्वीपों की गलियाँ आधुनिकता और संपन्नता की पहचान हैं। इन गलियों का वैभव इन्हें 'लास-वेगास' के नज़दीक ले जाता है। टाइवा सेंट्रल एरिया में बने दो लक्ज़री सुपर फाइव स्टार बिज़नेस होटल दुनिया में अनूठे हैं। एक का नाम है **'वेनिशिएन'** और **'दूसरे का सिटी ऑफ़ ड्रीम्स'** दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने हैं। रोम के शहर वेनिस के नाम पर बने होटल वेनिशियन का दावा है कि उसका केसीनों दुनिया भर में सबसे बड़ा है। मुमकिन है यह

बात सच हो। बहुत बड़े भू-भाग पर बने इस होटल की पहली दो मंज़िलों में तो केसीनों ही है। जुआरियों का यहाँ इतना ख़याल रखा जाता है, जैसे बाराती हों। इनके लिए बहुत कुछ फ्री है। कई तरह के पेय और नाश्ता।

इसी इमारत की तीसरी मंज़िल पर है, वह चीज़ जिसके लिए इसका नाम 'वेनीसन' रखा गया है। यूरोप के वेनिस में सारा आवागमन नावों पर होता है। सड़क की जगह वहाँ नहरें हैं। वेनिस की ही नकल पर इस फ़ाइव स्टार होटल की तीसरी मंज़िल पर नकली नहरें बनाई गई हैं और नहरों के किनारों पर हैं दुनिया के बेहतरीन ब्रांड्स की दुकानें। नाव में बैठ कर इस बाज़ार की सैर की जा सकती है और ख़रीदी भी। इसकी छत पर नकली बादल बनाए गए हैं ताकि पर्यटकों को नाव में घूमने का अहसास पूरी तरह हो, उसमें कुछ नकली न रहे। बादल भी ऐसे हैं कि जिन्हें आप नकली नहीं मान सकते। धीमे-धीमे बजता संगीत इन सबको और भी जादुई बना देता है। भारत के महानायक अमिताभ बच्चन को यह जगह इतनी पसंद आई थी कि उन्होंने सन 2009 के 'आईफा अॅवार्ड' यहीं रखवाए थे।

दूसरा होटल 'सिटी ऑफ़ ड्रीम्स' विश्वव्यापी मंदी के बावजूद पिछले साल ही खोला गया। इसमें इतने बड़े-बड़े काँच लगे हैं कि हैरत होती है कि ये कैसे बने होंगे और कैसे लगाए गए होंगे। इसकी अंदरूनी सजावट एकदम आधुनिक और हाइटेक है। अंदर एक पानी का पर्दा है, जिस पर लेज़र के ज़रिये जलपरी तैराई जाती है। ये जलपरी इतनी वास्तविक लगती है कि छू कर देखने की इच्छा होती है। 'सिटी ऑफ़ ड्रीम्स' की एक सबसे बड़ी विशेषता है इसमें बना एक हाइटेक थियेटर 'बबल'। यथा नाम तथा गुण की कहावत के अनुरूप ये बुलबुले जैसा है। इस थियेटर में बैठ कर मैंने एक एक्शन मूवी देखी। समुद्र में डूबने वाले एक सीन में दर्शकों को लगा कि वे भी डूब रहे हैं। ये दो होटल एशिया की तरफ से सारे विश्व को जवाब है कि हम भी कुछ हैं। सब कुछ तुम्हारे ही पास नहीं, कुछ हमारे भी पास है।

मकाऊ कलाकारों के लिए भी जाना-पहचाना नाम है। कला के लिए यहाँ काफी कुछ है। मिसाल के तौर पर विशाल ऑपेरा, संगीत थियेटर, कला दीर्घाएँ, सिने थिएटर। मकाऊ सरकार समय-समय पर ढेर सारे सांस्कृतिक आयोजन करती रहती है। पैंतालीस हज़ार वर्ग मीटर में फैले मकाऊ कल्चरल सेंटर में प्रदर्शनियाँ लगती रहती हैं। इसके अंदर बने विशाल ऑडिटोरियम में हज़ारों दर्शक एक साथ बैठ सकते हैं।

एक बात में मकाऊ हम मध्यप्रदेश वालों की याद दिलाता है और वह है इनका भोजनप्रेम। मकाऊ जाने पर सलाह मिलती है कि आप स्थानीय भोजन ही करियेगा। हमने शाकाहारी मकाऊ खाना खाया और पछताए नहीं। यहाँ की औरतें घर में खाना बनाना पसंद नहीं करती। आरामतलबी का जीवन है। अक्सर लोग बाहर ही खाना खाते हैं। रात भर जागने वाला ये शहर अलसुबह सोता है और देर दोपहर को जागता है। दो बजे बाद ही खाने-पीने की चीज़ों की दुकान पर भीड़

लगती है। यहाँ का खाना भी पूर्व और पश्चिम का मिश्रण है। इसमें हैं सेंडविच, बिनकर्ड और मैंगो जूस। खाने का मुख्य आधार यही तीन चीज़े हैं। इसके बाद पसंद के हिसाब से चीज़ें घटती-बढ़ती रहती हैं। अच्छा खाने के लिए मकाऊ के लोग दूर तक जाना पसंद करते हैं। यहाँ प्रसिद्ध बेकरी से बेक्ड टार्ड ख़रीदने के लिये और एक प्याला बॉल पाईपिंग हॉट ओपल जूस पीने के लिये ये कड़क धूप में आधा घंटा खड़ा रहना बर्दाश्त कर लेते हैं।

चीन को यहाँ के लोग अपना घर कहते हैं। यानी ये पहले भी भावनात्मक रूप से चीन के साथ ही जुड़े थे। चायना विलय के बाद दस सालों में मकाऊ शान से कहता है कि मै सिर्फ एशिया का ही नहीं पूरी दुनिया का लास-वेगास हूँ।

जब दुनिया देखने निकला तब जाना कि अब तक का जीवन तो बर्बाद कर दिया।

ग्राहम बेल

The Macau Tower Entertainment & Convention Centre.

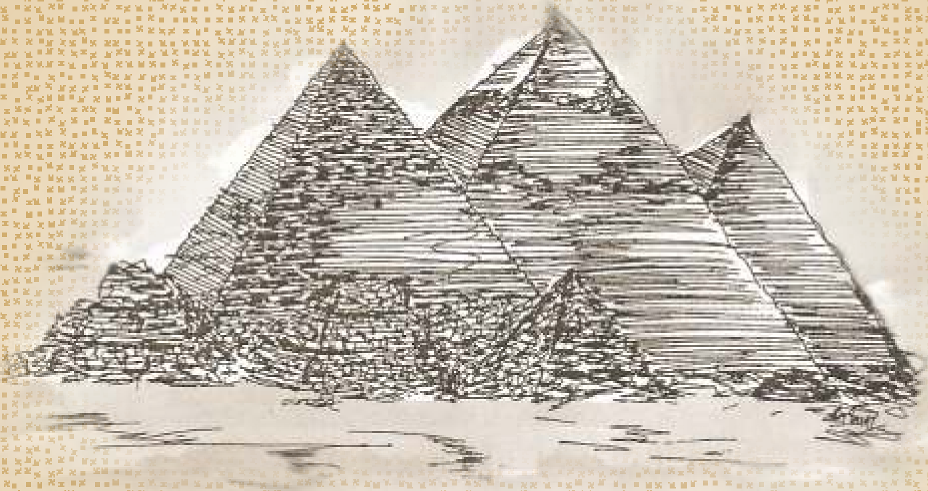

मिस्र

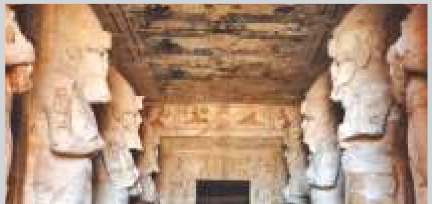

मानव सभ्यता का पालना...
मिस्र

बात है पाँच हज़ार साल से भी ज़्यादा पहले की। एक बड़ी नदी के किनारे सभ्यता धीरे-धीरे पाँव पसार रही थी। नदी भी ऐसी कि साल भर अपने किनारे बसने वाले लोगों को तरह-तरह के उपहार देती और फिर साल के आख़िर में भीषण बाढ़ से नेस्तनाबूद कर देती। मगर इंसान के आगे नदी तो क्या समंदरों की भी नहीं चली है। अपनी ज़िद और संकल्प से उस नदी के किनारे रहने वाले लोगों ने नदी को हरा दिया। कहीं उसे बांध कर अपने अनुकूल कर लिया और कहीं ख़ुद उसके हिसाब से ढल गए। इस तरह **'नील नदी'** के किनारे मानव सभ्यता के शुरूआती अध्याय का आग़ाज़ हुआ। अगर आप इंसानी सभ्यता की समय-यात्रा को देखना और उससे कुछ सीखना-समझना चाहते हैं तो इजिप्ट घूम आईये। दुनिया की सबसे लंबी नदी... नील। सात हज़ार किलोमीटर लंबी। इसी के किनारे इंसान ने सभ्यता का ककहरा सीखा। नदी के तटवर्ती इलाक़ों में खेती ईजाद हुई। इंसान ने ख़ूब खेती की। ईसा मसीह के पैदा होने से तीन हज़ार साल पहले यहाँ क्या नहीं था। बर्तन, गहने, फ़र्नीचर, काग़ज़। जो सुविधाजनक जीवन आज हम जी रहे हैं, इसकी नींव नील नदी के किनारे ही रखी गई थी। पाँच हज़ार बरस पहले। दुनिया की पहली क़िताब यहीं लिखी गई। ये जगह ज्ञान का उद्गम भी है।

बहरहाल पर्यटकों के लिए मिस्र आने का सबसे बड़ा कारण है यहाँ कि **'ममी'** और **'पिरामिड'**। ये पिरामिड मिस्र को जैसी पहचान देते हैं, वैसी दूसरी बहुत कम चीज़ें दे पाती हैं। जैसे पेरिस का 'एफिल टावर', जैसे अमेरिका का 'स्टेच्यू ऑफ़ लिबर्टी'। पिछले दिनों दुनिया के सात अजूबे तय करने के लिए सारी दुनिया की रायशुमारी हुई थी। ***''सारी दुनिया ने निर्विरोध यह माना कि पिरामिड दुनिया का पहले नंबर का अजूबा हैं।''*** मिस्र में यूँ तो एक सौ अठारह पिरामिड अवशेष हैं, पर मुख्य पिरामिड राजधानी काहिरा से साठ किलोमीटर दूर गीज़ा के माने जाते हैं। जैसे ताज की ख़ूबसूरती को कैमरे में क़ैद नहीं किया जा सकता उसी तरह इन पिरामिडों की विशालता, भव्यता और दिव्य स्वरूप को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। यहाँ बिताया एक-एक लम्हा एक-एक अध्याय के बराबर है। पर्यटक जैसे ही पिरामिड के सामने पहुँचते हैं, इसके वास्तविक आकार को देखकर भौंचक्के रह जाते हैं। बावन मीटर ऊँचाई के इस पिरामिड के सामने इंसान गुलिवर की कहानियों के बौनों जैसे लगते हैं। तीन-तीन टन का एक पत्थर और इसे बनाने मे लगे हैं कुल अठारह हज़ार पत्थर। आज भी दुनिया भर के वास्तुविदों के लिए ये पिरामिड एक पहेली हैं कि चार हज़ार बरस पहले, जब तकनीक मौजूद नहीं थी, कैसे इन पत्थरों को इकट्ठा किया गया होगा! कैसे सही आकार में तराशा गया होगा और बावन मीटर की ऊँचाई पर चढ़ाया गया होगा। फिर कैसे बिना चूना-सीमेंट या गारे के जोड़ा गया होगा। गणितज्ञ ये देख कर दाँतों तले उंगली दबा लेते हैं कि इसकी चौड़ाई, ऊँचाई और सारी भुजाओं के नाप में चारों तरफ से राई रत्ती के बराबर भी फ़र्क़ नहीं है।

पिरामिड के प्रवेश के लिए एक छोटा सा रास्ता बना हुआ है। इस रास्ते में झुकते हुए पहले पैंतालीस मीटर नीचे, फिर पैंतालीस मीटर ऊपर चढ़ना होता है। इस रोमांच भरे सफर के बाद हम पहुँच जाते हैं एक विशाल कमरे में। गाइड बताता है कि उस दौर के राजाओं की (जिन्हें यहाँ की भाषा में फेरो कहते हैं) अजब मान्यता थी। वे मानते थे कि मरने के बाद एक मौक़ा ऐसा आएगा, जब देवता आकर उन्हें फिर से जीवित कर देंगे। इसी विश्वास के चलते वे जीते जी यह पिरामिड बनवा लेते थे। उनके मरने पर उनके वंशज शव विशेषज्ञों से शव को विशेष लेप से सुरक्षित करा कर पिरामिड के केंद्र में बने इस कमरे में रख देते थे। यहीं पर रख दी जाती थी, वह सारी सामग्री, जो राजा को विशेष प्रिय होती थी और माना जाता था कि ज़िंदा होने के बाद उन्हें इसकी आवश्यकता पड़ेगी। यहाँ तक कि रथ, नाव, खाने-पीने की चीजें, कपड़े, नक़दी, सोना-चाँदी...।

यह सब रखने के बाद पिरामिड को कुछ ऐसा सीलबंद कर दिया जाता था कि सालों साल किसी चोर, लुटेरे, सेंधमार के लिए घुस कर माल निकाल पाना नामुमकिन हो जाए। पर लुटेरे तो लुटेरे ठहरे। इन पिरामिडों में छुपे ख़ज़ाने को लूटने लुटेरे आते रहे, लूटते रहे।

जिन पिरामिडों को वो लूट सके ले गए। जिन्हें नहीं लूट सके, वे आज भी ऐसे ही खड़े हैं। उनके भीतर यदि किसी ने राजा को ज़िंदा भी कर दिया होगा, तो इतने दिन में राजा यक़ीनन फिर मर गया होगा... । हम दूसरों की मान्यताओं की हँसी तो ख़ूब उड़ाते हैं, पर आस्थाएँ तो हमारे यहाँ भी हैं। क्या हम श्राद्ध नहीं करते ? क्या हम यह नहीं मानते कि श्राद्ध में कौऐ खाँएगे तो हमारे पितरों के पेट में खीर-पूरी जाएगी ?

चार सौ साल के अनगिनत आक्रमणों और कई प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी, जिस अजूबे का बाल बाँका नहीं हो सका, वह हैं **गीज़ा के ये पिरामिड**। इन्हीं तीन पिरामिडों के आगे खड़े होकर खिंचाई तस्वीरें इस लम्हे को सहेज सकती हैं, हमेशा के लिए। ज़िंदगी में ऐसे बहुत कम लम्हे होते हैं। गीज़ा में बने इन तीनों पिरामिडो को निहारते हुए आप पहुँच जाते हैं एक छोटे से बाज़ार में, जहाँ आप ख़रीद सकते हैं, अपने दोस्तों रिश्तेदारों के लिए छोटे-बड़े स्मृति उपहार। जिन्हें हिंदी में कहते हैं स्मृति चिन्ह । गीज़ा के पिरामिडों के पास से शुरू होता है रेगिस्तान में कैमल राइडिंग का सिलसिला...। आप चाहें तो ऊँट पर बैठ कर रेस भी लगा सकते हैं। ऊँट की सवारी अंजर-पंजर हिला डालती है मगर थकान का मीठा अहसास भी देती है। रात को पिरामिडों को देखना एक अलग ही अनुभव है। रात के अंधेरे में मानो पिरामिडों का व्यक्तित्व बदल जाता है। जब इन पर लाईट डाला जाता है और शुरू होता है लाईट एंड साउंड का एक अद्‌भुत कार्यक्रम। सुप्रसिद्ध हॉलीवुड एक्टर **ओमर शरीफ़** पैदाईशी इजिप्शियन हैं। उनकी रौबदार गूँजती आवाज़ में पेश किया जाता है चार हजार बरस का इतिहास। क़दम दर क़दम, एक-एक पल की सिलसिलेवार कहानी।

'काहिरा' का एक नाम 'कैरो' भी है। काहिरा में इतिहास का पहला सिरा भी मिलता है और इधर वर्तमान का दूसरा छोर भी। सन् 1176 में बनी एक ऐतिहासिक मस्ज़िद यहाँ हैं जिसे **'व्हाइट मास्क'** कहा जाता है। इसे बनवाया था सलाह एन दीन ने। यह बहुत विशाल और सुंदर मस्ज़िद है, जिसकी भीतरी दीवारों पर मन को असीम शांति देने वाली चित्रकारी की गई है। इसी 'काहिरा' में वे सारी आधुनिक सुविधाएँ भी हैं, जो संसार के किसी भी महानगर में होती हैं। इसीलिए कहते हैं कि 'काहिरा' में इतिहास की ममी भी हैं और वर्तमान की साँसे भी। नील नदी की सैर के बिना कैसा इजिप्ट और कैसा काहिरा ? रात होने पर जब सारा शहर रोशनी से जगमगाने लगता है, तब नदी पर तैरते
ब . ड `
क्रूज़-जहाज़ों पर शुरू हो जाता है आनंद और उल्लास का त्यौहार। नील नदी की लहरों से सुर मिलाती अरेबियन धुनें और तरह-तरह के बैले। माहौल रोमांटिक हो जाता है और ले जाता है एक रूहानी लोक में। क्रूज़ पर खाना खाने के बाद पर्यटक चले जाते हैं छत पर जिससे दिखती है नील नदी की विशालता। शाम होते-होते काहिरा में ठंडी हवा

भी चलने लगती है। छत पर ये हवा और ठंडी हो जाती है। संसार के सबसे समृद्ध संग्रहालयों में से एक 'काहिरा' के पास है और ज़ाहिर है 'काहिरा' को इस पर गर्व है। ये संग्रहालय जिस भवन में बना है, वह सन् 1902 का निर्माण है। भवन ख़ुद एक नायाब चीज़ है । फ्रांसीसी वास्तुकला का अनूठा-अचूक उदाहरण...। इस संग्रहालय में संग्रहित हैं चार हज़ार साल...। यानी चार हज़ार सालों से भी पुराने ज़ेवरात, घरेलू सामान, फ़र्नीचर, बर्तन, रोज़ाना उपयोग में आने वाली ढेर सामग्री । मूर्तियाँ तो ऐसी हैं, मानों अभी बोल पड़ेंगी। इस म्यूजियम का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है 'द रॉयल ममी रूम' इस बहुत बड़े ए.सी. हॉल में उन राजाओं के पार्थिव शरीर हैं, जो ममी में ज़िंदा होने की आस में दफनाए गए थे। एक अर्थ में ये अब भी ज़िंदा हैं। इनके शरीर का कुछ सूखा हिस्सा बचा लिया गया है, इनका नाम लिया जाता है। दाद देनी पड़ती हैं शव को संभालने वाले उन पुराने जानकारों की, जिन्होंने ऐसे लेप, ऐसी तरकीबें ईजाद कीं जिससे चार हजार साल में इनका एक नाख़ून तक नहीं बिगड़ा । इस संग्रहालय में घूमते हुए और पिरामिडों को देखते हुए हमारा घमंड चकनाचूर हो जाता है। हम इस बात पर गर्व करते हैं कि अतीत के मुक़ाबले वर्तमान ज्ञान-विज्ञान और तकनीक में आगे है । मिस्र की सुरक्षित ममीज़ बतातीं हैं कि हमसे पहले भी तकनीक-विज्ञान और अध्यात्म के जानकार हो चुके हैं।

किसी भी देश की सैर का समापन तब होता है, जब निशानी के तौर पर उस देश से कुछ सामान ख़रीद लिया जाए । ख़रीदी की ख़ूबसूरती इसी में है कि उपयोगिता का ख़याल बिलकुल बीच में न आने दिया जाए। ख़रीदी ऐसे की जाए कि जैसे जिनके देश में आए हैं, उन्हें कुछ शुल्क चुकाना हमारा धर्म भी तो है। सो इस काम के लिए यहाँ है **'ख़ान ए ख़लीली बाज़ार'** । मिस्र की इन गलियों में कभी ग़ुलाम बिका करते थे । आज ग़ुलाम थैली संभालते हैं, पर्स निकाल कर पेमेंट करते हैं और मालकिन यानी उनकी पत्नी ख़रीदारी करती है 'ख़ान ए ख़लीली बाज़ार' से आप आकर्षक पेंटिंग्स, शाल, पिरामिड्स की प्रतिकृति, चमड़े के कपड़े, पर्स, टी-शर्ट और मिस्र का विश्व प्रसिद्ध इत्र ख़रीद सकते हैं। वैसे ये चीजें क़हीं और से भी ख़रीदी जा सकती हैं, पर वह जगह मिस्र का 'ख़ान ए ख़लीली बाज़ार' तो नहीं है ना। मिस्र की सैर बहुत मज़ेदार रही। जाते हुए ये हसरत रही कि एक बार फिर आएँ। किसी ने क्या ख़ूब कहा है-

सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ
ज़िंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?

मिस्र का राजनैतिक इतिहास...

341 बीसी से यहाँ पर्शियन लोगों ने राज किया। 641 इसवी में अरब की मुस्लिम आर्मी यहाँ लगभग चुपचाप आ गई और सैकड़ों बरस तक उसका शासन रहा। 961 इसवी में इजिप्ट के लोगों ने ख़ुद का राजतंत्र विकसित कर लिया और छह सौ बरस सत्ता अपने हाथ में रखी। अठारहवीं सदी के

बीच में स्वेज़ नहर बनाने के बाद यह देश समुद्री यातायात का बड़ा केन्द्र बन गया, मगर स्वेज़ नहर बनाने के कारण कर्ज़ में डूब चुके मिस्र पर सन् 1882 में ब्रिटेन ने कब्ज़ा कर लिया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद ये देश आज़ाद हो पाया। इसी भू-भाग के एक हिस्से पर उन्नीस सौ अड़तालीस में अमेरिका के सहयोग से यहूदियों ने अपना एक अलग देश बना लिया। यहाँ रह रहे लोगों को इस कारण हटना पड़ा और यहीं से इज़राइल-फिलिस्तीन की समस्या जन्मी। इज़राइल के एक हिस्से पर पुराने रहवासियों ने अपने कब्ज़े की घोषणा की और बन गया फिलिस्तीन...। उन्नीस सौ बावन में इजिप्शियन आर्मी के अधिकारी गतल अंदल नासेर ने देश की कमान संभाली और देखते ही देखते वो खाड़ी देशों का हीरो बन गया। 1979 में तत्कालीन राष्ट्र प्रमुख अनवर सादात ने अरब देशों में सबसे पहले इज़राइल से एक समझौता किया। शांति के इन्हीं प्रयासों के चलते उन्हें नोबल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

अनवर सादात की 1981 में एक मिलेट्री परेड के दौरान हत्या कर दी गई। उनके बाद होस्नी मुबारक ने सत्ता संभाली। प्रारंभ में जनता में लोकप्रिय होस्नी मुबारक अपनी कुर्सी को बचाने की फ़िक्र में निरकुंश तानाशाह बन गये। भ्रष्टाचार के चलते वे और उनका परिवार तो दुनिया के सबसे अमीर परिवारों में से एक हो गया पर मिस्र बेरोज़गारी और ग़रीबी की ग़र्त में जाने लगा। बग़ावत के डर से उन्होनें देश में पद्रंह लाख से भी अधिक ख़ुफिया पुलिसकर्मियों की नियुक्ति कर दी थी। जिसकी संख्या मिस्र की मिलेट्री से चार गुना ज़्यादा थी। शायर कहता है-

संघर्षो के साये में
असली आज़ादी पलती है,
इतिहास उधर मुड़ जाता है
जिस और जवानी चलती है।

एक बेरोज़गार पढ़े-लिखे सब्जी विक्रेता युवा के आत्मदाह से भड़के 'काहिरा' के तहरीर चौक आंदोलन ने 18 दिन में मिस्र के साथ ही साथ अमेरिका की भी नींद उड़ा दी और 18 फ़रवरी 2011 को अपने तीस साल से चले आ रहे सत्ता सुख को त्याग कर होस्नी मुबारक को 'काहिरा' से भागना पड़ा।

अफ्रीका के उत्तरी भाग में ग़ाज़ा पट्टी, सूडान, नॉर्थ एशिया, मेडिटेरियन सी और सीरिया से घिरे इस देश के दक्षिण में अफ्रीका, पूर्व में एशिया और उत्तर में यूरोप है। ढाई करोड़ जनसंख्या वाले शहर 'काहिरा' को इस देश की राजधानी होने के गौरव प्राप्त है। साथ ही ये अफ्रीका महाद्वीप का सबसे बड़ा शहर है। बहरहाल इस विकासशील देश का क्षेत्रफल दस लाख वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या है साढ़े सात करोड़। चौरानवे फीसद आबादी मुस्लिम है और छह प्रतिशत ईसाई व अन्य। मुख्य भाषा अरबी है और मुद्रा है इजिप्शियन पौंड। एक इजिप्शियन पौंड इस वक़्त लगभग नौ रूपये का है। देश की आमदनी का मुख्य ज़रिया है पर्यटन व स्वेज़ नहर

से आने वाला टोल टैक्स।

नील नदी वरदान भी, अभिशाप भी...

बचपन में जब किसी दोस्त को ख़त लिखता था, तो लिफाफे पर लिखा करता था- इसे नील नदी जितनी लंबी मुस्कान के साथ खोलिए...। फिर जब क्रुज़ की छत पर खड़े होकर नील नदी को देखा तो यक़ीन नहीं हुआ कि मैं उसी नील नदी पर आ गया हूँ, जिसका ज़िक्र बचपन से कर रहा था। अपार नीली जलराशि को कल-कल की आवाज़ के साथ बहते देखना, सो भी तारों की रोशनी में... एक दिव्य अनुभव था ! ऐसा लगा जैसे पिरामिडों में से ममी निकल कर कह रहीं हों कि हम भी इसी सुंदर नज़ारे को देखने के लिए जीवित होना चाहते हैं। नील नदी का उद्‌गम मीठे पानी की एक झील से हुआ है। दुनिया में मीठे पानी की इससे बड़ी केवल एक और झील है। नील नदी जिस झील से निकलती है, उसका नाम है विक्टोरिया और राह के जंगलों से जहाँ खूब तेज़ बारिश होती हैं नील नदी का आकार बड़ा होता चला जाता है। अफ्रीका महाद्वीप से आगे चलकर यह नदी सूडान में प्रवेश कर जाती है। सूडान की राजधानी खादम के पास एक बड़ी नदी आकर इसमें मिल जाती है। इस नदी का नाम है 'ब्लू नील'। दोनों नदियाँ मिल कर नील को और ताकतवर बनाती हैं। सूडान की उत्तरी रेखा के पास छह मनोरम झरने भी इसमें आते हैं। मेडिटेरिनियन सागर में मिलने से पहले यह नदी नील वैली से होकर गुज़रती है। सागर में मिलने से पहले नील त्रिभुज के आकार का विशाल डेल्टा बनाती है।

छह हज़ार छह सौ पिचानवे किलोमीटर लंबी यह नदी मिस्र को दो भागों में बाँटती है। 'लोअर इजिप्ट' और 'अपर इजिप्ट'। इस नदी में गर्मियों में बाढ़ आती है और पहले ऐसी तबाही मचाती थी कि आस-पास का पूरा क्षेत्र पानी मे डूब जाता था। मगर उतरते समय ये नदी इतनी उपजाऊ मिट्‌टी छोड़ जाया करती थी कि खेत सोना उगलने लगते थे। पहले राष्ट्रपति गमाल नासेर ने इकहत्तर में इस नदी पर बाँध बनवाया। बाँध से बाढ़ रोकने में बहुत मदद मिली। बिजली भी बनी, मगर मिट्टी का उपजाऊपन भी ख़त्म होता रहा। रासायनिक खादों के इस्तेमाल से नील नदी का पानी भी ज़हरीला हुआ एवं मिट्टी और ज़्यादा सूख गई। मिस्र में जहाँ-जहाँ भी नील नदी बहती है, जनसंख्या सघन है। आपको शायद ही विश्वास होगा कि मिस्र की अधिकांश जनसंख्या इसी तीन प्रतिशत क्षेत्र में सिमटी है। बाक़ी का हिस्सा एकदम सूखा रेगिस्तान है। रेगिस्तान भी ऐसा कि ठंड में पानी जम जाए और गर्मी में तपन इतनी कि आदमी सह न सके। नील नदी दुनिया की ऐसी अनूठी नदी है, जो दक्षिण से उत्तर की ओर बहती है। इस बहाव के कारण इसमें परिवहन की लागत एकदम कम हो जाती है। उत्तर की तरफ जाते समय तो केवल बहाव के दम पर नाव चलती है। दक्षिण की तरफ जाते समय नाव पर पाल बाँध लिया जाता है। हवा के दबाव से दक्षिण का

सफ़र भी आसान हो जाता है। कहावत है कि जिसने नील नदी का पानी पी लिया, वो दोबारा मिस्र ज़रूर आता है। मैं भी इसी यक़ीन के साथ नील नदी का पानी पीता हूँ और भारतीय संस्कारों के मुताबिक़ पानी सिर पर पोंछ लेता हूँ। हे नील मैया...। हमें एक बार फिर मिस्र बुलाना... घर से दूर जब माँ की बात निकल ही गई तो चलते-चलते अज़ीम शायर मुनव्वर राना साहब का यह शेर भी मुलाहिज़ा फरमाइएगा -

हमारे कुछ गुनाहों की सज़ा भी साथ चलती है
अब मैं तन्हा नहीं चलता, दवा भी साथ चलती है।

इन पिरामिड्स की ऊँचाई पर से 40 सदियाँ हम पर हँसती हुई दिखाई देती हैं।

नेपालियन बोनापार्ट

Egypt Cairo - Khan El Khalili Bazaar.

परिशिष्ट

समंदर पार... एक और भारत
मॉरीशस

कहते हैं गन्ना मीठा हो, तो भी जड़ से नहीं खाना चाहिए। मगर मॉरीशस ऐसा गन्ना है, जिसे जड़ से खा जाने की इच्छा होती है। फिर मॉरीशस में गन्ने होते भी बहुत हैं। मॉरीशस की आधी से अधिक ज़मीन पर गन्ना लहलहाता है। बाक़ी ज़मीन पर ज़रूरत की और चीज़ें जैसे - चाय, मसाले, कपास, तंबाकू और सब्ज़ियाँ...। मॉरीशस ख़ूबसूरत है मगर ख़ूबसूरत तो बहुत सारे देश हैं। मॉरीशस जैसा खुला-खुला कहीं और महसूस नहीं होता। वजह है यहाँ की जनसंख्या जो मात्र साढ़े बारह लाख है। आबादी का घनत्व है एक किलोमीटर में केवल छह सौ लोग। यही वजह है कि बाज़ार खुले-खुले हैं, ज़मीन की कोई ख़ास क़ीमत इधर नज़र नहीं आती। इस मॉरीशस में हर साल बीस लाख पर्यटक आते हैं। यानी देश की आबादी से भी ज़्यादा पर्यटक।

हर तरफ लोगों में एक धीमापन और सुकून है। ड्राइवर भी आराम से गाड़ी चलाते हैं कि गंतव्य तक पहुँच कर भी क्या हो जाएगा? गोवा की तर्ज़ पर बाज़ार दोपहर को बंद हो जाते हैं। शाम को दुकानदार भी जल्दी घर जाने की फ़िराक़ में रहते हैं। कमाने की अपने जैसी होड़ वहाँ देखने में नहीं आती। लगभग सभी लोग सुकून का जीवन जीते हैं। अंग्रेज़ी यहाँ की अधिकारिक भाषा है। फ्रेंच और क्रियोल भी बोली जाती है। भोजपुरी और हिंदी भी सुनने समझने और बोलने वाले मिल जाते हैं।

मॉरीशस एकदम शांतिप्रिय देश है। झगड़े-टंटे से एकदम दूर। कुल सैनिक हैं अठारह सौ। राष्ट्रीय आय का दो प्रतिशत ही सैनिकों पर ख़र्च किया जाता है। अगर भारत और पाकिस्तान भी अपना सैनिक ख़र्च इतना ही कर लें, तो दोनों देश रातोंरात अमीर हो जाएँ। इसी पर दूसरे लोग भी अमल करें तो वारे-न्यारे हो जाएँ। हाँ हथियारों के सौदागर ज़रूर भूखे मरने लगें और कुछ नेता भी बेकाम हो जाएँ।

एक कहावत है कि समंदर का पानी जहाँ से चखो वहीं से खारा है। बात ठीक है मगर हर जगह समंदर के पानी का रंग एक सा नहीं होता। न ही समुद्र तट एक से होते हैं। मिसाल के तौर पर मुंबई का समुद्र तट गंदला, धूसर नीला है। मगर मॉरीशस का समुद्र गहरा नीला है। पानी भी एकदम साफ़-शफ़्फ़ाक़। समुद्र तट पर रेत का रंग भी अलग, जैसे सोने का बुरादा बिखेर दिया गया है। यक़ीन नहीं होता कि इतना सुंदर और साफ़ देश अपने यहाँ से केवल पाँच हज़ार किलोमीटर दूर है।

यहाँ आना इसलिए भी अच्छा लगता है कि यहाँ पूर्ण आस्था के साथ वही भगवान पूजे जाते हैं, जिन्हें आप अपने देश मे पूजते हैं। श्रीराम, गणेश, शिव ...। यहाँ का मुख्य त्यौहार शिवरात्रि है। लोगों के नाम अनिरूद्ध, शिवशंकर, सुनीता और रमेश होना आम है। यहाँ चालीस प्रतिशत आबादी हिंदुओं की है, बत्तीस फ़ीसदी ईसाई रहते हैं। सत्रह प्रतिशत मुस्लिम हैं। ऐसा होने का ऐतिहासिक कारण तो आपको पता ही होगा।

चलिए; फ़्लैश बैंक में चलते हैं। भारत के सुदूर पश्चिम और अफ़्रीका के पूर्व में दो हज़ार चालीस वर्गमील के इस द्वीप पर सबसे पहले अरबों की नज़र पड़ी। मगर वे आकर लौट गए। यहाँ पर उनको कुछ जमा नहीं। ये दसवीं सदी की बात है। फिर पंद्रहवीं सदी में पुर्तगाली आए और वे भी लौट गए। उनको इधर टिकने का कोई कारण नहीं मिला। हाँ वह एक नुकसान कर गए। यहाँ एक पक्षी होता था डोडो। पुर्तगालियों ने डोडो को ऐसी बेरहमी से खाया कि वह प्रजाति ही ख़त्म हो गई। पुर्तगालियों को डोडो बहुत पसंद आया और उसके अंडे वे जहाज़ में रख कर ले गए कि अपने यहाँ इसे पैदा करके खाएँगे। पर जहाज़ के चूहों ने अंडे चट कर दिये और पुर्तगालियों के हाथ सिंगट्टा भी नहीं लगा। फिर सत्रहवीं सदी में फ्रेंच आए। उन्होंने पाया कि यहाँ गन्ना उपजाया जा सकता है। उन्होंने गन्ना उपजाया, गन्ने से शकर बनाई, व्हिस्की बनाई। अठारहवीं सदी में अंग्रेज़ों की नज़र इस द्वीप पर पड़ी। उन्होंने हमला कर दिया। फ्रेंच सेना ने उनके दाँत खट्टे कर दिये। फिर अंग्रेज़ों ने अपने जहाज़ों पर फ्राँसीसी झंडे लगाए। फ्रेंच सेना ने सोचा कि ये तो अपने लोग हैं, अपने देश आ रहे हैं। मगर जहाज़ में शातिर अंग्रेज़ निकले। इस बार धोखे से अंग्रेज़ जीत गए। हमारे यहाँ अंग्रेज़ व्यापारियों के भेस में आए थे। बहरहाल अंग्रेज़ों को ज़रूरत थी यहाँ काम करने वाले ग़ुलामों की। उस समय भारत पर उनका राज था। लिहाज़ा वे बिहारी मजदूरों को पकड़ कर लाए। इन्हें ही गिरमिटिया कहा गया।

अठारह सौ पचास को सौ मज़दूर जहाज़ से जिस जगह उतरे थे, उसका नाम ही 'अप्रवासी घाट' हो गया है। बाद में और मज़दूर आते रहे, काम करते रहे, जीते रहे-मरते रहे और यहीं अपना जीवन बसाते रहे । आज इस देश में जो चवालीस फीसदी आबादी हिंदुओं की है, ये सब उन्हीं परिश्रमी मज़दूरों की संताने हैं।

बहरहाल, उन्नीस सौ अड़सठ की बारह मार्च को अंग्रेज़ यहाँ से चले गए। गन्ने की तरह चूसा हुआ देश आज़ाद हो गया। फिर बानवे मे सर शिवसागर रामग़ुलाम मॉरीशस के पहले प्रधानमंत्री बने । उनसे पहले मॉरीशस के सबसे बड़े हिंदी साहित्यकार के रूप मे 'अभिमन्यु अनत' हिंदी दुनिया में अपनी पहचान बना चुके थे । अभिमन्यु अनत की कई किताबें मॉरिशस से ज़्यादा भारत में बिकीं हैं और पढ़ी गई हैं। बहरहाल चौदह साल तक रामग़ुलाम ने शासन किया । फिर एक और भारतीय मूल के आदमी को सत्ता मिली । नाम था अनिरूध्द जगन्नाथ। पाँच साल बाद सर शिवसागर रामग़ुलाम के बेटे नवीन रामग़ुलाम प्रधानमंत्री बन गए । अनिरूध्द अभी राष्ट्रपति हैं । मॉरीशस का सबसे बड़ा तीर्थ **'गंगा तालाब'** है । मन में तो वही भारत वाली गंगा है, पर उसकी प्रतिकृति के रूप में इन्होने यहाँ एक तालाब को ही गंगा तालाब नाम दे दिया है। इसके किनारे पर शिवजी का एक सुंदर मंदिर बना है, जिसे तेरहवें ज्योर्तिलिंग की मान्यता है। महाशिवरात्री पर मॉरीशस की आधी से अधिक आबादी इस तालाब पर आ जाती है। यहाँ से इस तालाब का पानी कांवड़ में लेकर लोग यात्रा करते हैं और पैदल अपने गाँव पहुँचते हैं । इस पानी से अपने गाँव के मंदिर का अभिषेक किया जाता है। इसी तालाब के किनारे तिरासी फ़ीट ऊँची शिव प्रतिमा है। इस तीर्थ स्थली पर गंदगी बिल्कुल नहीं है। साफ़-सफ़ाई इतनी है कि लगता ही नहीं ये भारत या भारतीयों का कोई तीर्थ स्थल है । आइये, अब वापस मॉरीशस की बात करें। तीन सौ साठ किलोमीटर कोस्टल एरिया वाले इस देश के सभी होटल समंदर किनारे हैं जिनमें ज़्यादातर का अपना समुद्री तट है। होटल में चेक-इन होने के बाद समझिए आप बिना बाहर निकले मॉरीशस ही घूम रहे हैं। होटल वाले समुद्र किनारे ही डिनर का आयोजन भी करते हैं। देश छोटा है, पर होटलों की सुविधाएँ विश्व स्तर की हैं। फिर भी होटल से बाहर घूमने का मन तो होता ही है। तो बाहर भी वहीं है। दर्ज़नों सुंदर समुद्र तट और पानी के तरह-तरह के खेल...। फिर समुद्र की तलहटी को खंगालने का भी एक विकल्प है। अगर तैरना और गोताख़ोरी आती हो, तो ड्रेस मौजूद है। चौकस सुरक्षा अधिकारी भी हैं, जो आपको गोताख़ोरी विश्व रिकार्ड बनाने नहीं देते ! मास्क पहन कर आप पानी के अंदर बोल भी सकते हैं। वॉटर प्रूफ़ कैमरे लिए गोताख़ोर भी खड़े रहते हैं कि जनाब आप गोता लगाइए मछली के साथ आपकी तस्वीर खींचने के लिए मैं हूँ ना...। मगर यदि आप खुद गोताख़ोरी करना नहीं चाहते तो आपके लिए पनडुब्बी है, जो आपको पैंतीस मीटर नीचे तक पानी के पाँच फ़ीट नीचे एक अलग ख़ामोश दुनिया में ले जाती है।

पैंतीस मीटर नीचे तो उस दुनिया की राजधानी होती है। मॉरीशस के पहाड़ों पर सुप्त ज्वालामुखी हैं। कल-कल करते झरने भी हैं। यहीं पर वह अलौकिक जगह है, जहाँ आप मिट्टी को भी इंद्रधनुष की तरह सात रंगों में देख सकते हैं। मिट्टी में ये रंग बिखेरे हैं ज्वालामुखी से निकले लावा ने। यहाँ भी **संरक्षित वन** हैं, जहाँ तरह-तरह के जंगली जानवर भी हैं, जो पालतू सरीखे हो गए हैं। जहाँ चीते शेर के साथ खड़े होकर आप फ़ोटो खिंचवा सकते हैं , अपने दोस्तों पर झाँकी जमाने के लिए ...।

मात्र डेढ़ लाख की आबादी वाला **'पोर्ट लुईस'** मॉरीशस का सबसे बड़ा शहर है। राजधानी भी यही है और यहीं सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह। यहीं पर देश का एकमात्र शॉपिंग मॉल है। ख़रीदारी का नशा करने वालों के लिए बुरी ख़बर यह कि यहाँ ख़रीदारी करने के लिए कुछ है नहीं। कुछ है भी तो बहुत मँहगा। मॉरीशस में भी मुद्रा का नाम रूपया ही है। एक क़िले कि कमी थी, सो वो भी है। हमारे क़िलों के मुक़ाबले ये कील जैसा ही है, पर है। इसका एक इस्तेमाल ये है कि इस पर चढ़कर लोग 'पोर्ट लुईस' का नज़ारा देखते हैं।

पर सच कहूँ तो ये सब किसी मतलब का नहीं है। यहाँ मज़ा तो समंदर के किनारे है, उससे दूर नहीं। यहाँ ट्रेफ़िक जाम नहीं होता, भीड़ नहीं है, हार्न की आवाज़ और धुंआ नहीं है। सिएट टायर्स के प्रेसीडेंट श्री पारस चौधरी कहते हैं... ***''यह देश हूबहू हमारे द्वारा बचपन में बनाए गए उसी चित्र की तरह है जिसमें चंद झोपड़ियाँ पगडंडी, दो चार पहाड़, एक नाव और ढेर सारा सूकून नज़र आता था।''*** आते-आते मॉरीशस के हिंदी कवि परमेश्वर बिहारी का ये गीत मन में गूँज रहा था-

''मेरे पुरखों के तुम हो सुयश,
तुमको मेरा नमन मॉरीशस...।''

> *मॉरीशस का निर्माण पहले हुआ फिर स्वर्ग का और स्वर्ग को मॉरीशस के हुबहू उतार लिया गया।*
>
> ***- मार्क ट्वेन***

श्रीलंका

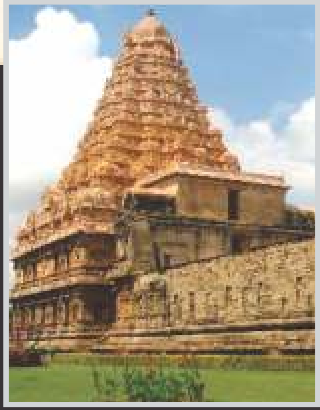

तूफान के बाद की शांति में...
श्रीलंका

''विदेशी पर्यटकों की गिनती लाखों से घटकर हज़ारों में रह गई थी। शायद अब भगवान को हम पर तरस आ रहा है। इस महीने मैं चौबीस दिन बुक हूँ...।'' विक्टर ने राहत की साँस लेकर कहा। विक्टर कोलंबो के पुराने गाइड हैं। ठिगना क़द, साँवला रंग, साधारण और कुछ ख़स्ता सा पहनावा, पके हुए बाल, चेहरे पर झुर्रियाँ...। हिंदी पर उनकी पकड़ अच्छी है। इसलिए जब भारत से कोई पर्यटक आता है, तो उन्हीं को याद किया जाता है। विक्टर ने बताया की 26 जुलाई 1983 को हुए बम विस्फ़ोट के बाद श्रीलंका में ज़िंदगी वैसी नहीं रही, जैसी पहले थी। छब्बीस साल तक गृह युद्ध चला। पारिभाषिक रूप से गृह युध्द ख़त्म हुआ, लिट्टे प्रमुख प्रभाकरन को मार गिराए जाने के बाद। ये तारीख़ थी 17 जून 2009...। बहुत लंबे ये छब्बीस साल गुज़ारना श्रीलंका की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत मुश्किल था। ज़ाहिर है इस अरसे में पर्यटन उद्योग की तो कमर ही टूट गई थी। ''हमने कैसे हमारा पेट पाला - हम ही जानते हैं।'' विक्टर को जब वे पुराने दिन याद आते हैं, तो वह उदास भी हो जाते हैं। भारत के इस पड़ौसी देश की स्थिति अब सुधर रही है। पर्यटक भी आने लगे हैं और होटल भी बुक होने लगे हैं। हवाई अड्डा '**कोलंबो**' से बत्तीस किलोमीटर की दूरी पर है।

जब सुबह सवेरे हमारी गाड़ी एयरपोर्ट से शहर की तरफ दौड़ रही थी, तो मौसम ख़ुशनुमा था। हवा में हल्की सी ठंडक। श्रीलंका में दो नये सबेरे हो रहे थे। एक सूरज से सड़कों का अंधेरा मिट रहा था तो दूसरे उम्मीद के सूरज से निराशा का। देखने में कोलंबो तमिलनाडु या केरल के किसी भी बड़े शहर के जैसा है, मगर संयम, अनुशासन और व्यवस्थित ट्रेफ़िक इसे भारतीय शहरों से अलग करता है। कोलंबो शहर को पंद्रह टुकड़ों मे बाँटकर अलग-अलग नंबर दिए गए हैं। सबसे अच्छा हिस्सा है कोलंबो वन, जहाँ दूतावास हैं, समुद्र तट हैं, राष्ट्रपति का घर है और लगभग सभी फ़ाइव स्टार होटल भी। जैसा दिल्ली में जनपथ वैसा यहाँ का कोलंबो-1...। श्रीलंका भी साढ़े चार सौ बरस ग़ुलाम रहा है। सन् पंद्रह सौ पाँच से लेकर सन् सोलह सौ अड़तालीस तक पुर्तगालियों का। एक सौ त्रियालिस साल की ग़ुलामी पुर्तगालियों की। फिर सन् सत्रह सौ छियानवे तक डच आ गये...सबसे अंत में गोरों ने राज किया। उन्नीस सौ अड़तालीस में श्रीलंका ब्रिटिश ग़ुलामी से मुक्त हुआ। यहाँ की संस्कृति में डच, पुर्तगाली और अंग्रेज़ी रंग दिखाई पड़ते हैं। अनेक इमारतें कहती हैं कि वह किस दौर की हैं और किन लोगों की बनाई हुई हैं। हमारे देश की ही तरह यहाँ भी अंग्रेज़ों के कारण रेल लाईनें हैं, चाय के बाग़ान हैं, रबर प्लान्टेशन हैं और हार्बर भी।

श्रीलंका में बौद्ध धर्म भारत के राजा अशोक के कारण है और फलफूल रहा है। ईसा से दो सौ चालीस साल पहले सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेंद्र और बेटी संघमित्रा को बोधिवृक्ष की टहनी देकर श्रीलंका भेजा था। तब से बौद्ध धर्म ने अपने पाँव यहाँ जमा लिए। यहाँ के राजा देवानाम और सम्राट अशोक के बीच ख़तो-किताबत हुई। भाषाएँ, लिपि और विचारों में समानता होने से ही देवानाम ने अशोक के भेजे धर्म को अपनाया। श्रीलंका की उनसत्तर प्रतिशत जनसख्या बौद्ध है। सात प्रतिशत आबादी मुस्लिम, बकाया अन्य लोग हैं। भाषाई लिहाज़ से चौहत्तर प्रतिशत लोग सिंहली बोलते हैं। सत्रह प्रतिशत तमिल। संघर्ष तमिल और सिंहलियों में था... और अंदर ही अंदर अब भी है।

बौद्ध मंदिर तो अनेक देशों में देखने को मिलते हैं। श्रीलंका में भी हैं। मगर कोलंबो में अनेक सुंदर और विशाल बुद्ध प्रतिमाएँ हैं। भारत में जोधा-अकबर की तरह यहाँ के अंतिम राजा विक्रमराज सिंह और उनकी पत्नी बौद्ध और हिंदू थे। यही कारण है कि उनके समय के मंदिर में दोनों ही धर्मों का मान रखा गया है। कोलंबो से ढ़ाई सौ किलोमीटर दूर श्रीलंका की राजधानी **'अनुराधापुर'** में वो टहनी अब भी है, जो सम्राट अशोक ने भेजी थी। अब वो टहनी वटवृक्ष बन कर लहलहा रही है। इसी जगह पर सुंदर स्तूप और बौद्ध प्रतिमाएँ भी हैं। कोलंबो की सैर करते-करते वह इमारत भी दिखी जिसे सारा भारत रेडियो सिलोन के नाम से जानता है। वही रेडियो सिलोन जिसके प्रोग्राम बिनाका गीत-माला ने बरसों-बरस तक भारतीय श्रोताओं के दिलो-दिमाग़ पर राज किया।

जहाँ तक शहर कोलंबो की बात है, देखने को यहाँ बहुत कुछ है । **पेरियाड म्यूज़ियम, फ़ोर्ट क्लॉक टॉवर और इन्डिपेंडेंस हॉल** जैसी भव्य और ऐतिहासिक इमारतें ..। क़ुदरती नज़ारों की बात की जाए, तो कोलंबो से बाहर निकलते ही कई झरने हैं। झरनों के नाम भी बड़े मज़ेदार हैं- **दियालुमा किरिंडी ओया, सेंट क्लेइयर, लक्सयाना, देवान, टवाना**... नाम ऐसे हैं जैसे झरने का पानी तेज़ी से गिर कर शोर मचा रहा हो।

कोस्टल एरिया यानी समुद्र का किनारा है एक हज़ार तीन सौ चालीस किलोमीटर लंबा। इस लंबे किनारे पर कुछ जगहें बहुत ही ख़ूबसूरत हैं और समुद्र तट पर मौज करने वालों में बहुत लोकप्रिय भी। हम भारतीय नंगे होकर धूप में बदन नहीं सेकते हम धूप से इतने पके हुए होते हैं कि छाँह ढूँढते हैं। हिमपात और ठंड से परेशान रहने वाले देशों में श्रीलंका के समुद्र तट ख़ासे लोकप्रिय हैं । इनके नाम भी मज़ेदार हैं- लिवीनिया, कलतारा, बेरूवेला , बन्टोटा...। विदेश यात्रा और ख़रीदारी एक दूसरे के पर्याय हैं। श्रीलंका में हैं चटपटे मसाले, तरह-तरह की ख़ुशबूदार चाय, समुद्री मोतियों और अन्य रंगीन समुद्री पत्थरों के ज़ेवरात...। कपड़ों में ब्रांडेड शर्ट, ट्राउज़र्स, सूट लैंग्थ...। अविश्वसनीय रूप से कम क़ीमतों में यहाँ सब मिलता है । फिर एक मज़ा यह है कि भारत का एक रूपया यहाँ सवा दो रूपये में बदल जाता है। आपका पैसा बिना जादू के यहाँ डबल से भी ज़्यादा हो जाता है । बाज़ारों में फ़िल्मों के पोस्टर भी ख़ूब दिखे...। भारतीय तमिल फिल्मे यहाँ ख़ूब देखी जाती हैं। हिंदी फ़िल्मों के प्रति भी रूचि वैसी ही है। क्रिकेट के लिए दीवानगी भारत से भी बढ़ कर है । क्रिकेट इनकी ज़िंदगी का एक ख़ास हिस्सा है।

भारत के नक्शे में श्रीलंका जितना छोटा दिखता है, उतना है भी। पैंसठ हज़ार वर्ग किलोमीटर का देश... मगर शिक्षा के प्रति लगाव ऐसा है कि अठानवे फ़ीसद जनसंख्या साक्षर। लिट्टे के ख़ात्मे के बाद अब शिक्षा का अभियान उन इलाक़ों तक जाएगा, जहाँ पहले नहीं जा पाता था। योजना सौ प्रतिशत साक्षरता की है । यहाँ महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक है। नब्बे पुरूषों के मुक़ाबले सौ महिलाएँ हैं। आमदनी का मुख्य ज़रिया है खेती, चाय बाग़ानों पर काम और कुछ छोटे-मोटे उद्योग। जे.के. टायर्स के मार्केटिंग डायरेक्टर श्री ए.एस. मेहता बताते हैं कि इस देश को सबसे ज़्यादा इनकम होती है, बाहर से कमा कर भेजने वालों द्वारा। यहाँ के आठ लाख लोग बाहर जाकर काम करते हैं। इनके द्वारा हर साल कमा कर भेजी जाने वाली राशि होती है एक बिलियन डॉलर...। महिलाएँ पुरूषों के साथ हर काम करती हैं । कहीं कोई भेदभाव नहीं हैं। दुनिया की सबसे पहली महिला प्रधानमंत्री देने का गौरव भी इसी देश को है। याद दिला दूँ कि उन्नीस सौ साठ में **सिरिमाओ भंडारनायके** देश की ही नहीं विश्व की पहली महिला प्रधानमंत्री थीं।

नौ प्रांतों के बाइस ज़िलों में फैले श्रीलंकाइयों ने छब्बीस साल के गृहयुध्द में साठ हजार से ज़्यादा परिजनों को खोया है।

आतंक की इंतेहा यह थी कि राजा से लेकर प्रजा तक किसी के घर लौटने की गारंटी नहीं थी। एक बार घर छोड़ने का मतलब होता था अनंत ख़तरे में समा जाना। सन् दो हज़ार में पद संभालने के बाद राष्ट्रपति महेंद्रा राजपक्षे ने लिट्टे से दो-दो हाथ करने की ठानी और श्रीलंका के हीरो बन गए। देशभक्ति का जोश लोगों में ऐसे बढ़ा कि खुद-ब-खुद पुलिस और सेना में भर्ती होने के लिए लोग आगे आने लगे। देखते ही देखते दो करोड़ जनसंख्या वाले देश मे वर्दीधारियों की संख्या छह लाख हो गई। आख़िरकार लिट्टे का खात्मा हुआ और पुरानी शांति लौट आई। मगर दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक के पीता है। समुद्र तटों से लेकर सड़कों तक श्रीलंका आज भी सैनिकों की छावनी बना हुआ है। लिट्टे को भारत के दक्षिणी राज्यों से मदद मिलती थी। इसके कारण यहां भारतीयों के प्रति नाराजगी नजर आती है। भारत पर पूरी तरह निर्भर होने के बावजूद भारतीय लोगों के प्रति इनका मन मैला है। इसीलिए इनका आयात भारत से केवल उन्नीस प्रतिशत है। बाकी सामान ये अन्य देशों से मंगाते हैं। किफ़ायती और ख़ूबसूरत विदेश यात्रा के लिए श्रीलंका बुरा नहीं है। कम से कम छुट्टियाँ वहाँ बिता कर अपने पड़ोसी देश की आर्थिक मदद कर सकते हैं और लिट्टे की वजह से पैदा हुआ मैल भी धो सकते हैं।

विक्टर के फ़्रूट...

विक्टर के फ़्रूट बतर्ज़ शबरी के बेर...। एक टायर कंपनी के आयोजन में आये हुए हम पाँच-सात डीलर निकल पड़े कोलंबो देखने। वही विक्टर गाइड हमारे साथ था। विक्टर बहुत ही सधी हुई अंग्रेज़ी में हमें ऐतिहासिक चीज़ें दिखा रहा था। समय ख़ूब हो चुका था और हम सब भूखे थे। एक डीलर की आँखें बाज़ार में कुछ खाने को तलाश रही थीं। गृहयुद्ध से उबरे कोलंबो की सड़कों पर कुछ ख़ास था नहीं। तभी एक डीलर बंधु ने हिंदी में कहा-यार साला बड़ा घटिया और ग़रीब देश है। बाज़ार में नाश्ता तो क्या फल भी नज़र नहीं आ रहे। इतने में एक मंदिर आ गया। विक्टर ने हम सबको बौद्ध मंदिर मे धकेला और ख़ुद गायब हो गया। हम मंदिर देख कर वापस आए तो हाथ में दो थैली फल लिये विक्टर खड़ा था। कहने लगा कि मेरी माँ भारत की थी, सो हिन्दी मुझे भी आती है। ये फल खाइये... पर कृपया भारत जाकर किसी से ये मत कहिएगा कि श्रीलंका में अच्छे फल नहीं मिलते।

> *अगले जन्म में ख़ुशी चाहते हो तो तीर्थ यात्रा किजिए, इस जन्म में ख़ुशी चाहते हो तो पयर्टन यात्रा किजिए.... पर यात्राएँ ज़रूर किजिए।*
>
> ***अज्ञात***

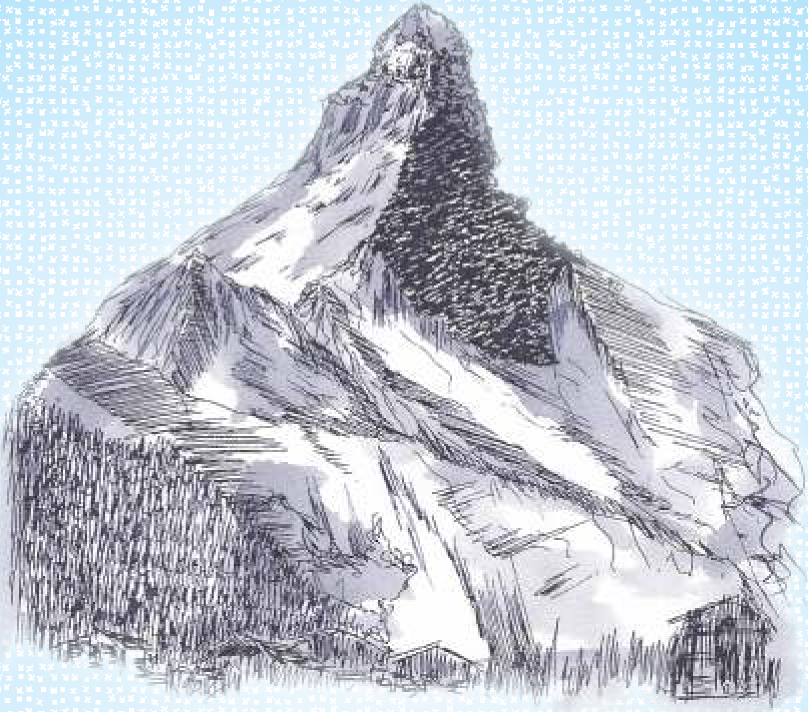

स्विट्ज़रलैण्ड

धरती का स्वर्ग...
स्विटजरलैण्ड

अवाक होना किसे कहते हैं, ये पहली बार स्विट्ज़रलैण्ड में पता चला। आँखों के आगे एक ऐसा ख़ूबसूरत नज़ारा था, जिसके पोस्टर भर देखे थे और मन ने कहा था वाह! कि चित्रकार; क्या ख़ूब कल्पना की है। पर यहाँ आकर पता चला कि ये कल्पना नहीं हक़ीक़त है। बर्फ़ से ढँके पहाड़ों की तलहटी में बने ढलवाँ छत के मकान, मकानों की गैलरी में रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ, मख़मल जैसी घास और उस पर तफ़री करतीं मोटी-ताज़ी सफ़ेद गायें, जिनके गले में रस्सी से बंधी रंगीन घंटियाँ...। ये सब जब पोस्टर में देखा था तो कभी नहीं सोचा था कि मैं ऐसी किसी जगह को ख़ुद जाकर देख पाऊँगा। पर देखा और देखा तो मुँह से कई मिनट तक बोल नहीं फूटा...। अवाक होना अनुभव किया। ख़ुद को अपने ही हाथ से चिमटी भरी। दर्द हुआ। मुँह से बार-बार निकल रहा था सपने से सुंदर...। बर्फ़ से ढँके पहाड़ों और फ़ूलों का चित्र किसी ने कितना भी सुंदर क्यों न बनाया हो, वहाँ जाकर जो अहसास होता है, उसे शब्दों मे बयान नहीं किया जा सकता। एक तो हवा में ऐसी ताज़गी जैसी नवजात बच्चे की साँस में होती है। सब कुछ बहुत स्वच्छ और शीतल होता है। अनाम पहाड़ी फूलों की गंध भी हवा, आसमान अधिक नीला, धूप का सुनहरा और सूरज प्यार लुटाता हुआ। कुल मिलाकर ज़मीन पर पवित्र जन्नत का नज़ारा।

ख़ैर ! स्विट्ज़रलैण्ड के क़ुदरती नज़ारे बयान करने के लिए तो महाकवियों का शब्द सामर्थ्य कम पड़ जाए, मैं तो साधारण सा आदमी हूँ। बस एक मुसाफ़िर, जिसे दुनिया में जगह-जगह भटकना और अलग-अलग शहरों की धूल चख कर देखना और फिर उनमें फ़र्क़ निकालना अच्छा लगता है। क़ुदरत ने अपनी तमाम नेमतें इस हरियाणा जितने बड़े यूरोपीय देश पर लुटा दी है। आबादी केवल बहत्तर लाख़...। दुनिया का सबसे मँहगा देश...। हर आदमी की औसत आय है अठहत्तर लाख़ रूपये साल...। यहाँ के लोग ख़ूबसूरत भी हैं और ख़ूबसीरत भी। मर्द इतने बहादुर हैं कि पूरा यूरोप इनका लोहा मानता है। पोप की हिफ़ाज़त करने वालों की फ़ौज़ स्विस सैनिकों से ही बनाई गई है। सैनिक शिक्षा लेना अनिवार्य है। भाड़े के सैनिकों के रूप में यहाँ के लोग सैकड़ों बरसों से लड़ते रहे हैं। शायर राहत इंदौरी साहब का शेर है

जंग में काग़ज़ी अफ़राद से क्या होता है
हिम्मतें लड़ती हैं तादाद से क्या होता है

यहाँ के लोग बुद्धिमान हैं। अभी तक सबसे ज़्यादा नोबल पुरस्कार स्विस लोगों को मिले हैं। औसतन हर आदमी के पास यहाँ दो कारें हैं। ये अमीरी अमेरिका के मुक़ाबले की है। औरतें भी बला की ख़ूबसूरत हैं। यूँ तो इथोपिया और यूगाँडा जैसे भुखमरी के मारे देश भी अपने पर गर्व करते हैं। पाकिस्तान और बांग्लादेश के राष्ट्रगीतों में अपनी महानता का बख़ान है। मगर वाकई अगर सबसे पहले किसी को अपने देश की तारीफ़ करने का हक़ है, तो वह स्विट्ज़रलैण्ड। बाक़ी लोग बाद में अपने देश की तारीफ़ में जो झूठ-सच कहें वह उनका अपना ईमान होगा।

बहत्तर लाख़ की आबादी में से अधिकतर लोग ईसाई हैं। बीस लाख़ के लगभग मुसलमान हैं। भाषा के लिहाज़ से देखा जाए, तो चौंसठ फ़ीसदी जर्मन बोलते हैं। उन्नीस फ़ीसदी फ्रेंच, आठ फ़ीसदी इटैलियन और एक प्रतिशत रोमन भाषा बोलते हैं। आपको यदि अंग्रेज़ी आती हो, तो यहाँ कोई दिक्क़त नहीं होगी। भारतीयों की गिनती केवल यहाँ छह हज़ार की है और उनमें से भी सात सौ डॉक्टर हैं। यहाँ का स्थायी वीज़ा मिलना बहुत कठिन है। नागरिकों को यह हक़ है कि वो जब चाहें, जिस मुद्दे पर जनमत संग्रह करा सकते हैं। जनता के सामूहिक फ़ैसले पर कोई न्यायिक समीक्षा या पुनर्विचार नहीं हो सकता। स्थानीय जनता द्वारा जनमत संग्रह के बाद ही किसी को स्थायी वीज़ा मिलता है। अलबत्ता टूरिस्ट वीज़ा हासिल कर हर साल पैंसठ हज़ार भारतीय इस स्वर्ग के वासी होने आते हैं।

इस बहादुर देश पर भी सन् सत्रह सौ अठानवे में फ्रांस ने कब्ज़ा कर लिया था। मगर बमुश्किल पचास साल बाद भीषण गृहयुद्ध हुआ। उन्नीसवीं सदी में ये देश महाशक्ति बन कर उभरा। ये एकमात्र देश है, जो पूरी तरह तटस्थ होने का दावा करता है। आठ बरस पहले जनमत संग्रह के बाद ये देश संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना।

स्विट्ज़रलैण्ड की वाणिज्यिक राजधानी कहलाने वाला **'ज्यूरिख़'** इतना खुला-खुला, सुव्यवस्थित और सलीक़ेमंद है कि भरोसा नहीं होता यह इस देश का सबसे बड़ा शहर है। इतने बड़े शहर की आबादी है केवल सवा तीन लाख...। जनसंख्या का घनत्व इतना कम है कि किसी जगह मनुष्य नज़र ही नहीं आता। भीड़-भड़क्के और धक्का-मुक्की के आदी हम भारतीयों को ये आशंका होती है कि कहीं शहर में कर्फ़्यू तो नहीं लगा। दसवीं शताब्दी का ज्यूरिख़ शहर न्यूयार्क, लंदन और टोकियो के बाद विश्व का चौथे नंबर का स्टॉक मार्केट है। विश्व का सबसे बड़ा गोल्ड बुलियन मार्केट तो ये है ही।

नीर-कंच पानी से भरी कल-कल करती झीलें ...ख़ूबसूरत और भव्य पुरानी गरिमामय इमारतें... लीमन नदी के किनारे बसे इस शहर में घूमना और रहना मेरे जीवन का सबसे सुखद अनुभव है। शहर को सजाने-सँवारने में प्रशासन किस मुस्तैदी से लगा रहता है, इसकी एक मिसाल हैं फ़व्वारे...। पूरे शहर में ग्यारह सौ फ़व्वारे हैं। एक भी फ़व्वारा ऐसा नहीं है जो बंद पड़ा रहता हो। वैसे तो आप रांउड टिकट लेकर रेल, ट्राम, बस किसी भी साधन से शहर घूम सकते हैं, पर बोट में घूमने का अलग ही मज़ा है। फुटबॉल यहाँ का सबसे लोकप्रिय खेल है। मैदानों में लोग आपको फुटबॉल खेलते नज़र आएँगे। रेस्टॉरेंट्स में भी बड़ी स्क्रीन्स लगी हैं, जहाँ लोग मैच देखते हैं। यातायात के नियम बहुत ही कड़क हैं। छोटे से एक्सीडेंट की भी सूचना पुलिस को देना ज़रूरी है। पुलिस रिपोर्ट की कॉपी न हो, तो मैकेनिक गाड़ी रिपेअर नहीं करता। वैसे भी पुलिस गुप्त कैमरों से हर पल, हर सड़क पर नज़र रखती है। स्विट्ज़रलैण्ड में वैभव जैसे बिखरा पड़ा है। आप सड़क पर घूमने जाएँ तो दुनिया की सबसे क़ीमती कारें और महँगी मोटरसाइकिलें नज़र आती हैं। साइकल चलाने वालों और स्केटिंग करने वालों के लिए अलग ट्रेक है। हमारे यहाँ की तरह शेर और बकरी को एक घाट पर पानी पिला कर बकरी का शिकार नहीं कराया जाता। हमारे यहाँ ट्रक भी उसी ट्रेक पर चलता है और साइकल भी। ट्रक चूँकि बड़ा और मज़बूत होता है इसलिए एक्सीडेंट होने पर ज़्यादा नुकसान साइकल वाले का ही होता है। अधिकांशतः साइकल वाला मर ही जाता है। बच जाता है तो मरने की दुआ करता है क्योंकि ज़िंदगी उस पर बोझ हो जाती है। ये सिंपल सी बात स्विट्ज़रलैंड के लोग समझ गए हैं पर हमारे इस महान देश के लोग ?

दुनिया का हर नामी ब्रांड ज्यूरिख़ की दुकानों पर मिलता है। मगर भाव ऐसे कि मुझ जैसे खाते-पीते (और खर्चते) भारतीय को चक्कर आ जाएँ। यहाँ के बोनफ़ोर्ड रोड पर ज़मीन के भाव हैं पचास हज़ार डॉलर स्क्वेयर फुट। यानी पच्चीस लाख़ रूपये में एक फुट ज़मीन...। और हाँ उन सभी बड़े स्विस बैंकों के मुख्यालय यहाँ हैं (अब समझ में आया आपको कि यहाँ ज़मीन की इतनी क़ीमत क्यों है?)। यहाँ तरह-तरह की घड़ियाँ मिलती हैं। कुछ लोग घड़ियों में भी पैसा निवेश करते हैं। ऐसे लोगों के लिए ये जगह बड़े काम की है।

ज्यूरिख़ में झील पर क्रूज़ से सैर की जा सकती है। इसके अलावा बड़ी संख्या में आर्ट गैलरीज़ हैं। थियेटर हैं, पुराने चर्च हैं , म्यूज़ियम और कॉफ़ी हाऊस भी हैं। पैदल सैर करना भी इधर बहुत मज़ेदार है। यहाँ की शाम को यादगार बनाने के लिए **'टॉप ऑफ़ सिटी'** है। टॉप ऑफ़ द सिटी... यानी ऐसा पहाड़ जहाँ से पूरा शहर नज़र आता है। एक रेल है जो यहाँ तक लाती है। भारतीय खाने के तीस रेस्टॉरेंट्स इस शहर में हैं। खाने-पीने की ऐसी कोई दिक्क़त नहीं होती। ज्यूरिख़ के बारे में इटली की टॉप ट्रेवल मेग्ज़ीन सही लिखती है कि यह शहर न्यूयॉर्क, लंदन, पेरिस और वेनिस का कॉकटेल है। सुना है पंडित नेहरू कश्मीर के एक झरने का पानी पिया करते थे। जब यहाँ के **'राइनफॉल'** जाकर पानी पिया तो समझ में आया कि जो लोग ऐसा करते हैं, वो क्यों करते हैं। राइन नदी के पानी को सीधे बोतलों में पैक कर के बेच दिया जाता है। सच्चा मिनरल वॉटर...। यह यूरोप का सबसे बड़ा झरना है। यहाँ के पर्यटन विभाग ने ये नहीं किया कि दूर से झरना देखने का इंतज़ाम करके बैठ गए। वे पर्यटकों को नदियों से, पहाड़ी रास्तों से सीधे झरने के नज़दीक ले गए कि लीजिए... पानी में नहाइये, झुक कर साफ़ पानी पीजिए और बोतल में भर भी लीजिए। ये नदी यहाँ से ब्लैक फ़ॉरेस्ट होती हुई सीधे जर्मनी चली गई है। वाक़ई ये दुनिया का सबसे बेहतरीन झरना है। हर एंगल से...। स्विट्ज़रलैण्ड का दूसरा ख़ूबसूरत शहर है लुज़र्न। ज्यूरिख़ के मक़ाबले ज़रा कम मशहूर। समंदर किनारे बसे इस शहर की सैर करके स्विट्ज़रलैण्ड को और बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

यहाँ के विशाल म्यूज़ियम में स्विट्ज़रलैण्ड का पूरा इतिहास है, पूरी गौरवगाथा है। साथ ही दुनिया के बारे में तमाम जानकारियाँ हैं। संसार की चुनिंदा बड़ी घटनाओं के चित्रों की एक गैलरी भी। इस गैलरी में भोपाल गैस त्रासदी का चित्र देखकर मन पीड़ा से भर गया। आधुनिक अविष्कारों का इतिहास भी यहाँ मौजूद है। शहर में अठारहवीं सदी का चैपल ब्रिज आज भी ऐसे संभाल कर रखा है, जैसे नारी अपने प्रिय गहने सहेजती है। सदियों पहले बने दुनिया के इस पुल पर से गुज़रने का अपना ही सुकून है। यहाँ भी क्रूज़ की सैर तो है ही।

मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा आया उस पहाड़ की यात्रा में जिसे **'माउंट पीलाटस'** कहते हैं। ट्रेन द्वारा दुनिया की सबसे सीधी और कठिन चढ़ाई के बाद जब हम शिखर पर पहुँचे तो हाड़ कंपा देने वाली ठंड ने बता दिया कि हम समुद्र तट से दो हज़ार फुट (2132) की ऊँचाई पर हैं। अब बात माउंट टिटलीस की, जो स्विट्ज़रलैण्ड की जान भी है और शान भी। इस पर जाने के लिए अलग-अलग केबल कारों का सहारा लेना पड़ता है। इन्हीं के ज़रिये हम पहुँचते हैं स्टैंड रेस्टोरेंट पर। जब पता चला कि यहाँ भी भारतीय खाना मिलता है, तो पहले गर्व हुआ। फिर शंका हुई कि ये लोग कहीं हमें पेटू तो नहीं समझते ? वरना इतनी ऊँचाई पर भी भारतीय खाने की क्या ज़रूरत... बहरहाल भूख तेज़ थी तो पहले खाना खाया। फिर थोड़ा सा सुस्ता कर निकल पड़े मांउट टिटलीस देखने...।

हम लोग सफ़ेदी की उपमा दूध से देते हैं। कहते हैं दूध जैसा सफ़ेद...। ऐसा इसलिए हैं कि हमें दूध से ज़्यादा सफ़ेद कोई और चीज़ पता ही नहीं है। पहाड़ों की चोटी पर जो बर्फ़ होती है, उनकी सफ़ेदी दूध की सफ़ेदी से कहीं ज़्यादा गहरी होती है। जिसके लिए शब्द हैं शुभ...। 'माउंट टिटलीस' भी ऐसी ही शुभ बर्फ़ से ढँका है। यहाँ का सफ़र किया हमने रोटरर केबल कार द्वारा। इस तरह की केबल कार दुनिया में सबसे पहले यहीं शुरू हुई है। 'माउंट टिटलीस' की ऊँचाई है समुद्र तट से तीन हज़ार मीटर...। इस ऊँचाई पर संगीत की मस्ती है, धमाल, ज़िंदगी की रौनक और हंगामा है। ऐसा कि यहाँ से जाने को दिल नहीं करता। आल्प्स पर्वत शृंखलाओं के बारे में भूगोल की किताबों में बहुत पढ़ा था। यहाँ आकर देखा कि ये पर्वत शृंखला कितनी भव्य है, कितनी सुंदर और म न ा े र म है। 'माउंट टिटलीस' इन्हीं आल्प्स पर्वत शृंखलाओं की एक कड़ी है। माता-पिता के आशीर्वाद और भगवान की कृपा से मैं दुनिया का एक बड़ा हिस्सा घूम चुका हूँ। कम से कम पृथ्वी के चारों कोने तो नाप ही चुका हूँ। पर मैंने ऐसा सुंदर और व्यवस्थित गाँव नहीं देखा जैसा 'माउंट टिटलीस' की तलहटी में बसा **'एंजलबर्ग'**। जनसंख्या है दो हज़ार आठ सौ...। छोटे-छोटे बाज़ार, रास्ते और गलियाँ... सभी फूलों से ढके हुए जहाँ भी नज़र घुमाएँ हरियाली और फूल। सफ़ाई ऐसी कि एक तिनका भी कहीं नज़र नहीं आएगा। यहाँ पहाड़ी पर एक होटल है, जिसके पास अपनी एक रेल है। दिन-रात का आना-जाना इसी रेल से होता है। यहाँ का रेल्वे स्टेशन बेहद सुंदर और बिल्कुल निर्जन। बिल्कुल वैसा जैसा हमने **'दिल वाले दुल्हनियाँ ले जाँएगें'** में देखा था।

अगला सफ़र शुरू होता है टॉप ऑफ़ द यूरोप **'जंगफ्राजूज़'** के लिए। दो झीलों के बीच बसा सुंदर शहर इंटरलेकन रास्ते में आता है। फिर यहाँ से चॉकलेट फ़ैक्ट्री... स्विट्ज़रलैण्ड के बैंकों की ही तरह यहाँ की चॉकलेट भी दुनिया में मशहूर है। 'जंगफ्राजूज़ा' जाते समय रास्ते में जो देखा वह कहीं नहीं देखा। सुंदरता की चर्चा बार-बार करूँगा तो आप बोर हो जाँएगे और मैं दुःखी कि काश ! ऐसे सुंदर देश में बस क्यों नहीं गया? (मज़ाक़ कर रहा हूँ; आज भी सारे जहाँ से अच्छा...!) बहरहाल जो देखा उसकी चर्चा करते हैं। रास्ते में चरागाह देखे, मगर ढोर रास्ते पर न आ जाएँ इसके लिए सड़कों पर जगह-जगह तार लगे हैं। जगह-जगह हवा से बिजली बनाने के पंखे दिखाई देते हैं। यानी इस देश के लोग इस बात से आगाह है कि पानी रोककर कोयले से बनाई जाने वाली बिजली पर्यावरण के लिए बहुत ख़तरनाक है। रास्तों में जो गुफाएँ आतीं हैं उन्हें हम अपनी स्थानीय भाषा में बोगदे कहते हैं। गाइड बता रहा था कि स्विट्ज़रलैण्ड में रेल के सफ़र में सबसे लंबा बोगदा ग्यारह किलोमीटर का है। भारत में सड़क मार्ग पर सबसे बड़ा बोगदा जवाहर टनल से है जो ढाई किलोमीटर का है। मगर जवाहर टनल में डीज़ल की गंध नाक को सता देती है;

साथ ही भुतहा सा अहसास होता है सो अलग । जगह-जगह छत से पानी रिसता दिखता है । लगता है हम इससे गुज़रने वाले आख़िरी यात्री हैं, हमारे निकलते ही टनल ढह जाएगी।

गाइड ने स्विट्ज़रलैण्ड की राजधानी **'जिनेवा'** के बारे में बताया कि यहाँ दुनिया के तमाम लोग काला धन रखते हैं (स्विट्ज़रलैण्ड की बैंकों के बारे में तो राई रत्ती बात मालूम है अपने नेताओं की कृपा से । रोज़ ही अख़बार में छपता रहता है ।) मगर गोपनीयता के क़ानून यहाँ बहुत कड़े हैं । कई लोग बैंक में अकूत संपत्ति जमा करने के बाद मर गए। उनका कोई दावेदार भी नहीं आया कि बैंक उनको पैसा दे दे। मुझे दु:ख हुआ । सोचा न जाने कितना भारतीय पैसा इन बैंको में सड़ रहा होगा।

'जिनेवा झील' में एक सौ पैंतालीस मीटर का फ़व्वारा विश्व में सबसे ऊँचा है। यहाँ का **'अल्माइपर वॉटर पार्क'** यूरोप का सबसे बड़ा वॉटर पार्क है। **'सेंट मोरिज़'** की बड़ी झील सर्दियों में जमी रहती है । लोग उस पर घोड़ों की रेस लगाते हैं। क्रिकेट खेलते हैं और जो कुछ ठोस ज़मीन पर कर सकते हैं करते हैं। बस नींव खोद कर मकान नहीं बनाते और अतिक्रमण से ज़मीन नहीं दबाते । गाइड की बातों से पलकें भारी होकर मूँदने लगी थीं कि आ गया वह स्टेशन जहाँ से हम अपने जीवन की सबसे सुंदर रेल यात्रा शुरू करने वाले थे । लोगों को शोर से बचाने के लिए सरकार कितनी फ़िक्रमंद है इसका पता तब चला जब हमने पटरी के आस-पास ऊँची दीवार बनी देखी। रहवासी इलाक़ों से गुज़रते समय पटरी के पास दीवारें शोर को पी जाती हैं। विशाल पहाड़ों को चीरते हुए... शांत, लंबी, अंधेरी सुरंगों से गुज़रने का अपना ही एक आनंद है। कई रेल्वे स्टेशन तो बने ही सुरंगों के अंदर हैं। रेल में बैठ कर आसमान छुते पहाड़ों को देखना और दिलकश अहसास है। ऐसा लग रहा था कि इन नज़ारो को आँखों में क़ैद करके पलके मूँद ली जाएँ। आख़िरकार रेल रुकी...। छोटे-छोटे लाल-लाल डिब्बों वाली रेल एकदम खिलौनों जैसी...। ये रेल सदा याद रहेगी और इसका मनमोहक सफ़र भी।

हाई स्पीड लिफ़्ट ने डेढ़ मिनट में पहुँचा दिया हमें उनतीसवीं मंज़िल पर। समुद्र तट से साढ़े तीन हज़ार मीटर की ऊँचाई पर बने एक बर्फ़ के म्यूज़ियम में। यहाँ है दुनिया भर की हस्तियों की बर्फ़ से बनी मूर्तियाँ । **मैडम तुसाद के संग्रहालय में मोम से मूर्तियाँ बनती हैं तो यहाँ बर्फ़ से।** और लीजिए... अब तो शर्म आने लगी है । भारतीय खाना यहाँ भी मौजूद है । भारतीय खाना बार-बार याद दिलाता है कि हम कहाँ के हैं और अंत मे हमें कहाँ जाना है । एक तरह से यह अच्छा भी है। आदमी स्विट्ज़रलैण्ड घूमे पर याद रखे कि उसे रहना निमाड़ में ही है । शिखर पर बने सबसे ऊँचे पोस्ट-आफिस पर आप ख़त लिख कर डाल सकते हैं । भारतीय डाक विभाग की मेहरबानी से दस-बीस साल बाद जब आपको यहाँ से अपना लिखा हुआ ख़त मिलेगा तो यादें ताज़ा

हो जाएँगी... डाउन मेमोरी लेन इन स्विट्ज़रलैण्ड । ये लोग तो दूसरे ही दिन ख़त भारत पहुँचा देंगे पर ख़त लेकर भारत वाले आप तक निरात से आएँगे। गाइड ने बताया कि यहाँ पर सुभाष घई ने फ़िल्म हीरो की शूटिंग की थी। शूटिंग यहाँ होती ही रहती है और कहाँ होगी?

स्विट्ज़रलैण्ड के शाम सबेरे हम भारतीयों के लिए अचरज पैदा करते हैं। ठंड में यहाँ सुबह दस ग्यारह बजे उजाला होता है और अंधेरा शाम चार-पाँच बजे ही हो जाता है। गर्मियों में सूरज सुबह चार बजे से निकल कर बैठ जाता है, तो रात नौ बजे तक घर नहीं जाता! रात्रि भोजन निषेध वाले कट्टर जैन परिवारों के लिए ख़ुशख़बरी है कि वे यहाँ रात्रि नौ बजे तक खाना खा सकते हैं। वैसे यहाँ गर्मी आने का अफ़सोस नहीं किया जाता बल्कि गर्मी के मौसम का जमकर इस्तक़बाल किया जाता है। ख़ूब हंगामा रहता है। उत्सव मनाए जाते हैं।

अगर ईमानदारी से देखा जाए तो भारत का और नेपाल का हिमालयी इलाक़ा स्विट्ज़रलैण्ड से उन्नीसा नहीं न ही गंगोत्री, जमुनोत्री, राइन नदी से कम हैं। राइनफ़ॉल का मुक़ाबला जबलपुर का भेड़ाघाट आराम से करता है। जगदलपुर का जलप्रपात भी राइनफ़ाल से कम नहीं है। फ़र्क़ है अपनी धरोहरों को संभालने का, उनकी मार्केटिंग करने का और पर्यटकों के साथ अच्छे ईमानदार बर्ताव का। पूरी दुनिया में घूमने के बाद मुझे लगता है कि क़ुदरत ने भारत को वह सब दिया है जो समूची दुनिया में है। तरह-तरह के मौसम, जंगल, बर्फ, समुद्र। नहीं है तो बस इन सब चीज़ों की क़द्र! अगर हमारा पर्यटन विभाग जाग जाए, तो दुनिया की सैर जिस तरह अभी स्विट्ज़रलैण्ड के बिना अधूरी है, वैसे ही भारत के बिना अधूरी रहेगी। और हाँ बुरा मत मानियेगा! अपनी धरोहरों की

एक स्वतंत्र नागरिक होने के कारण मेरा क़द स्विट्ज़रलैण्ड में सबसे बड़ा है।

जॉर्ज बनार्ड शॉ

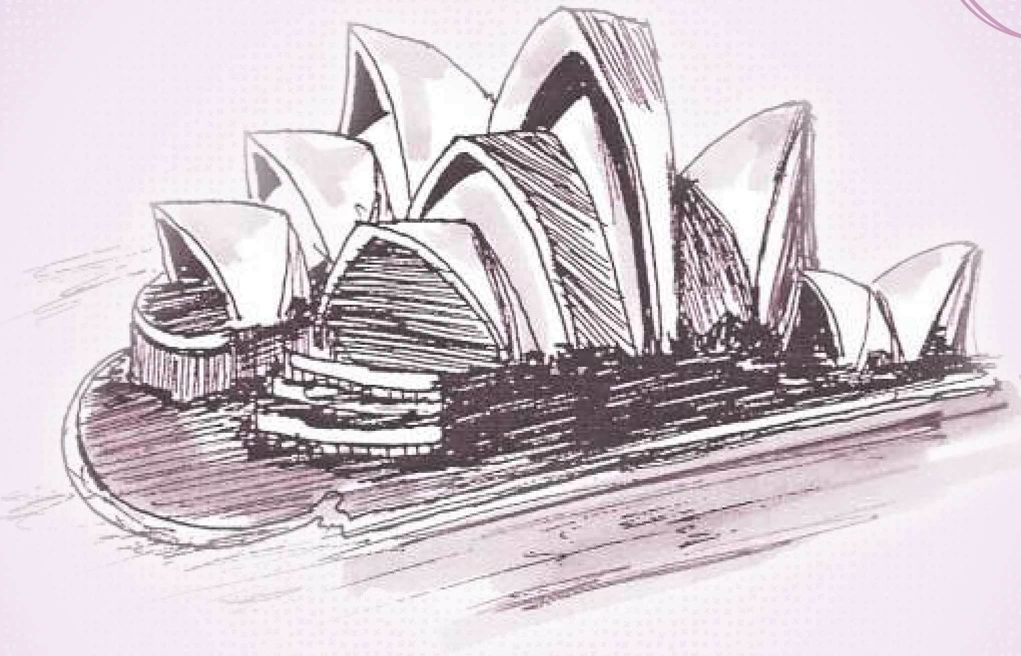

ऑस्ट्रेलिया

देश भी, महाद्वीप भी... ऑस्ट्रेलिया

बहुत ज़्यादा समय नहीं हुआ जब भारत के सुदूर पूर्व के एक महाद्वीप के जंगलों में, जानवरों और आदिवासियों का बोलबाला था। तरक्क़ी की करवट ले चुकी दुनिया से बिल्कुल दूर और महरूम दुनिया की सैर पर निकले यूरोपियन देशों के घुमक्कड़ों की नज़र से यह वीरान और पिछड़ा महाद्वीप नहीं बच पाया। उन नाविकों को अपने देश के क़ैदियों को काले पानी की सज़ा देने के लिये यह जगह सबसे उपयुक्त लगी और देखते ही देखते यह महाद्वीप यूरोपियन देशों के लिये एक प्राकृतिक जेल बन गया। क़ैदी जेल में सज़ा के साथ ही साथ कुछ काम करें इसी विचारधारा को ज़मीनी हक़ीक़त देते-देते इस द्वीप का विकास भी होता गया। अंग्रेज़ों के इस अतिक्रमण को बाहर करने के लिये यहाँ के स्थानीय आदिवासियों ने छुट-पुट प्रयास किये पर साधन और नेतृत्व विहीन वे बेचारे इन मज़बूत अंग्रेज़ों से कहाँ लड़ पाते। आख़िर धीरे-धीरे वे भी अंग्रेज़ों के इशारों पर काम करने लगे और उनके जोश और अंग्रेज़ों के होश ने इस महाद्वीप का कायाकल्प कर दिया। ऑस्ट्रेलिया यानि की एक ऐसा देश या महाद्वीप जिसमें विकास का शंखनाद हुए दो शताब्दी भी नहीं हुई पर वह आज सारी दुनिया को अर्थ, कला, संस्कृति, खेल, शिक्षा और शांति का पाठ पढ़ा रहा है।

जैसे-जैसे वैश्विक पर्यटन के महत्व को सारे विश्व ने जाना दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर ऑस्ट्रेलिया भी तेज़ी से उभरने लगा। पर्यटन विकास के क्षेत्र में यहाँ हुए अद्‌भुत काम दुनिया के पर्यटकों को अपने यहाँ बुलाने को आतुर हैं। भारत से लगभग साढ़े ग्यारह घंटे की सीधी फ़्लाइट जैसे ही **'ब्रिस्बेन एयरपोर्ट'** पहुँचती है वहाँ महसूस होती विकास की बयार जिससे यात्रियों की सारी थकान काफ़ूर हो जाती है। यात्रियों को एयरपोर्ट से बाहर आने में कड़ी जाँच से गुज़रना होता है। बाहर से लाये गये फल, दूध से बना खाना या कोई भी ऐसी सामग्री जिससे इस देश में किसी भी प्रकार की बीमारी फैलने का ज़रा सा भी ख़तरा हो, स्वास्थ के प्रति अत्यंत जागरूक इस देश में लाना वर्जित है। इस भाग्यशाली देश की सीमाएँ चारों ओर समुद्र से घिरी हैं। इस प्राकृतिक सुरक्षा की बदौलत यहाँ का सैनिक सुरक्षा व्यय एकदम कम है और यहाँ की अर्थव्यवस्था अमेरिका से भी ज़्यादा मज़बूत है।

दक्षिण पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के **'क्वींसलैंड'** प्रांत में प्रशांत महासागर के किनारे बसा **'गोल्ड कोस्ट'** ऑस्ट्रेलिया का सबसे तेज़ी से आगे बढ़ने वाला शहर है। इस शहर में पर्यटन विकास की गति का अंदाज़ा लगाने के लिये सिर्फ़ इतना जानना काफ़ी है कि मात्र दो दशकों में इसकी आबादी तीन गुना हो गई। 50 कि.मी. लंबे समुद्र किनारे फैले अनेक छोटे-छोटे गाँवों को मिलाकर बना यह शहर घुमक्कड़ों की दुनिया में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। दुनिया भर के पर्यटक यहाँ तैराकी, वॉटर स्पोर्ट एवं मछली पकड़ने के लिये खिंचे चले आते हैं। 'सरफ़र्स पेराडाइज़' के नाम से प्रसिद्ध इस शहर का मुख्य बीच 21 कि.मी. से भी अधिक लंबा है। बड़े होटल्स और अन्य तरह के कंस्ट्रक्शन को तो यहाँ के शासन ने बीच से दूर रखा ही है वहीं किसी तरह की छोटी-मोटी दुकानों को भी बीच पर लगाने की अनुमति नहीं है। 'गोल्ड कोस्ट' नाम को सार्थक करते इस समुद्र तट की सुनहरी रेत पर साफ़-सफ़ाई का इतना ख़्याल है कि आपको बारीक कचरा भी ढूँढे से नहीं मिलेगा और तो और यहाँ पर नहाने जाने से पूर्व बीच पर लगे शॉवर से आपको स्नान करके ही जाना होता है। बीच पर अनेकों मशीनें आप को रेत साफ़ करती नज़र आएँगी तो थोड़ी-थोड़ी सी दूरी पर पर्यटकों की सुरक्षा के लिये गॉर्ड मुस्तैद नज़र आएँगे। दूर-दूर तक साफ़ नज़र आने वाले ख़ूबसूरत समुद्र तट पर आपको पानी में अंदर दूर-दूर तक पर्यटक सर्फ़िंग का आनंद लेते मिलेंगे। भारत में समुद्र तटों पर आपको बच्चे या फिर युवा ही नज़र आते हैं क्योंकि हमने बुज़ुर्गों को मंदिरों और तीर्थों तक ही सीमित कर दिया है। यहाँ आकर सुखद आश्चर्य होता है जब बड़ी संख्या में अधेड़ और बूढ़े भी प्रकृति के इस अनमोल ख़ज़ाने का आनंद लेते दिखाई देते हैं। ऑस्ट्रेलिया का प्लेग्राउंड कहलाने वाले 'गोल्ड कोस्ट' शहर में बेहद बड़े केसिनो हैं तो वहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर का रेसिंग स्टेडियम भी है। यहाँ का यह अद्‌भुत समुद्र तट अखिल विश्व में अपना प्रमुख स्थान रखता है साथ ही यहाँ दुनिया के श्रेष्ठतम होटल्स भी हैं।

अगर आपने अक्षय कुमार स्टारर **'सिंग इज़ किंग'** देखी हो तो आपको 'गोल्ड कोस्ट' के तमाम ख़ूबसूरत नज़ारे इसमें मिल जाएँगे। अपनी बेपनाह ख़ूबसूरती के चलते एरियल व्यू में यह वाकई किसी सुनहरे तट सा नज़र आता है। पैसिफ़िक ओशन के किनारे बसे 'गोल्ड कोस्ट' का हर नज़ारा किसी पिक्चर पोस्टकार्ड से कम नहीं। ग़ौरतलब है कि यह शहर सिर्फ़ सागर किनारे ही नहीं बसा है, बल्कि शहर के भीतर भी नदी, कैनाल व बैकवॉटर का जाल सा बिछा है, जो कई बार आपको वेनिस में होने का अहसास करवाता है। इसके अलावा यह शहर अपने सबट्रॉपिकल क्लाइमेट, गगनचुंबी इमारतों, सर्फ़िंग बीचेस, थीमपार्क, गोल्फ़ कोर्सेस, वॉटर स्पोर्ट्स, वॉटर एक्टिविटीज़, ख़ूबसूरत जंगलों व हरियाली, स्वादिष्ट फ़ूड, बेहतरीन रेस्त्राँ, होटेल व रिसोर्ट और कुछ दुर्लभ फ़्लोरा व फॉना के लिए भी जाना जाता है। शायद इन्हीं सबके कारण पर्यटन की दुनिया इसकी
तुलना अक्सर अमेरिका के
मियामी शहर से करती है।

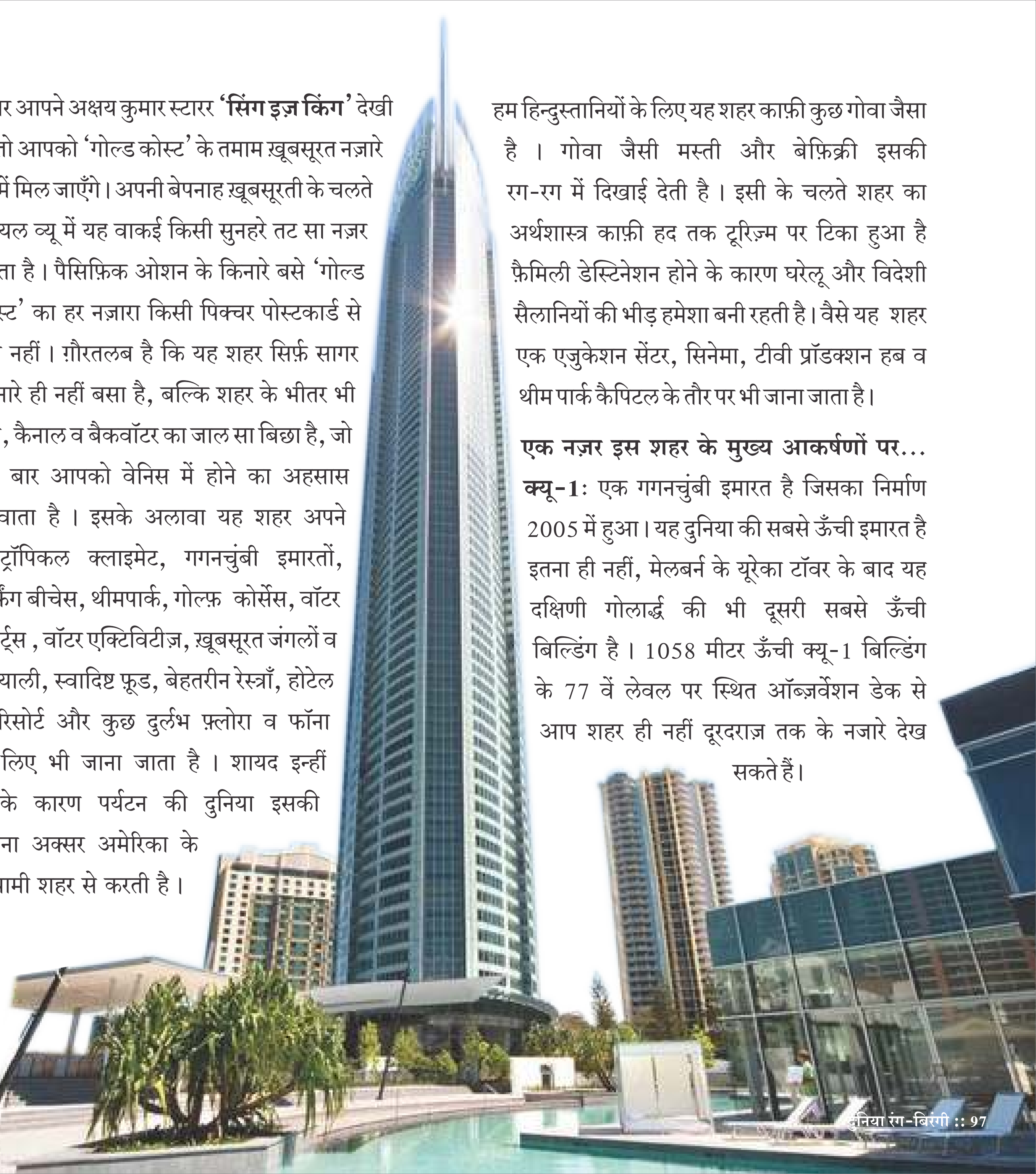

हम हिन्दुस्तानियों के लिए यह शहर काफ़ी कुछ गोवा जैसा है। गोवा जैसी मस्ती और बेफ़िक्री इसकी रग-रग में दिखाई देती है। इसी के चलते शहर का अर्थशास्त्र काफ़ी हद तक टूरिज़्म पर टिका हुआ है फ़ैमिली डेस्टिनेशन होने के कारण घरेलू और विदेशी सैलानियों की भीड़ हमेशा बनी रहती है। वैसे यह शहर एक एजुकेशन सेंटर, सिनेमा, टीवी प्रॉडक्शन हब व थीम पार्क कैपिटल के तौर पर भी जाना जाता है।

एक नज़र इस शहर के मुख्य आकर्षणों पर...

क्यू-1: एक गगनचुंबी इमारत है जिसका निर्माण 2005 में हुआ। यह दुनिया की सबसे ऊँची इमारत है इतना ही नहीं, मेलबर्न के यूरेका टॉवर के बाद यह दक्षिणी गोलार्द्ध की भी दूसरी सबसे ऊँची बिल्डिंग है। 1058 मीटर ऊँची क्यू-1 बिल्डिंग के 77 वें लेवल पर स्थित ऑब्ज़र्वेशन डेक से आप शहर ही नहीं दूरदराज़ तक के नजारे देख सकते हैं।

755 फ़ीट पर स्थित डेक से ब्रिस्बेन से लेकर बाइरन-बे तक के नज़ारे मिलते हैं। अपनी इन्हीं ख़ूबियों के चलते यह इमारत टूरिस्ट्स के आकर्षण का बड़ा केन्द्र बन चुकी है।

यहाँ के प्रमुख बीचेज़ में **सरफ़ेस पैराडाइज़, ब्रॉड बीच, कालांगुटा बीच, मेन बीच, मर्मेड बीच, बरलेंघ बीच, बरलेंघ हेड बीच, टॉलबुडगेरा बीच, पाम बीच, करंबिन बीच, तुगुन बीच, बिलिंगा कीरा बीच, ग्रीनमाउंट बीच, बेरबो-बे बीच, व फ्रॉग्री बीच** माने गए हैं।

'गोल्ड कोस्ट' को थीम पार्क कैपिटल माना जाता है। टूरिस्टों के लिए यहाँ के थीम पार्क विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं। अक्सर माना जाता है कि थीम पार्क बच्चों या युवाओं की पसंद होती है, लेकिन यहाँ के थीम पार्क इस तरह से बनाए गए हैं, जहाँ बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए कुछ न कुछ ज़रूर हो। **ड्रीम वर्ल्ड , सी वर्ल्ड , मूवी वर्ल्ड , वेट एन वाइल्ड वॉटर वर्ल्ड , वाइट वॉटर वर्ल्ड** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहाँ के साउथ पोर्ट में सी वर्ल्ड अपने आप के मनोरंजन और जानकारी का इतना बड़ा अजूबा है कि जहाँ पूरा दिन कब ख़त्म हो जाता है पता ही नहीं चलता। यहाँ पर्यटकों के लिये डाल्फ़िन और शॉर्क मछलियाँ हैं तो हेलिकॉप्टर की मज़ेदार सैर भी... इतना ही नहीं, युवाओं की पसंद को ध्यान में रखते हूए कुछ चीज़ें डिज़ाइन की गई हैं। मसलन **'ड्रैकूला हॉन्टेज हाउस'** में अगर आपको डरावना वातावरण मिलेगा, तो **'किंग ट्रुस पुट-पुट'** में आपको

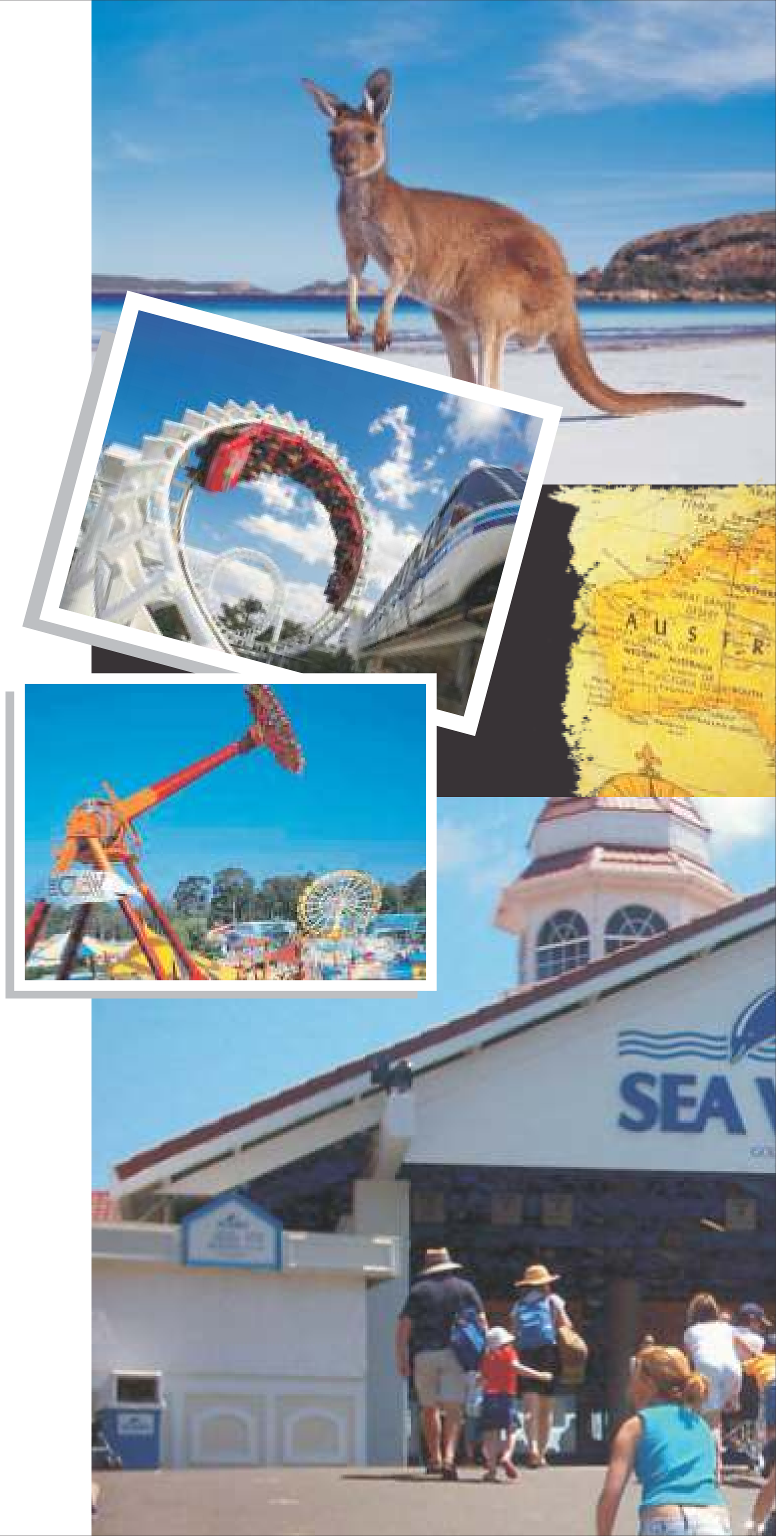

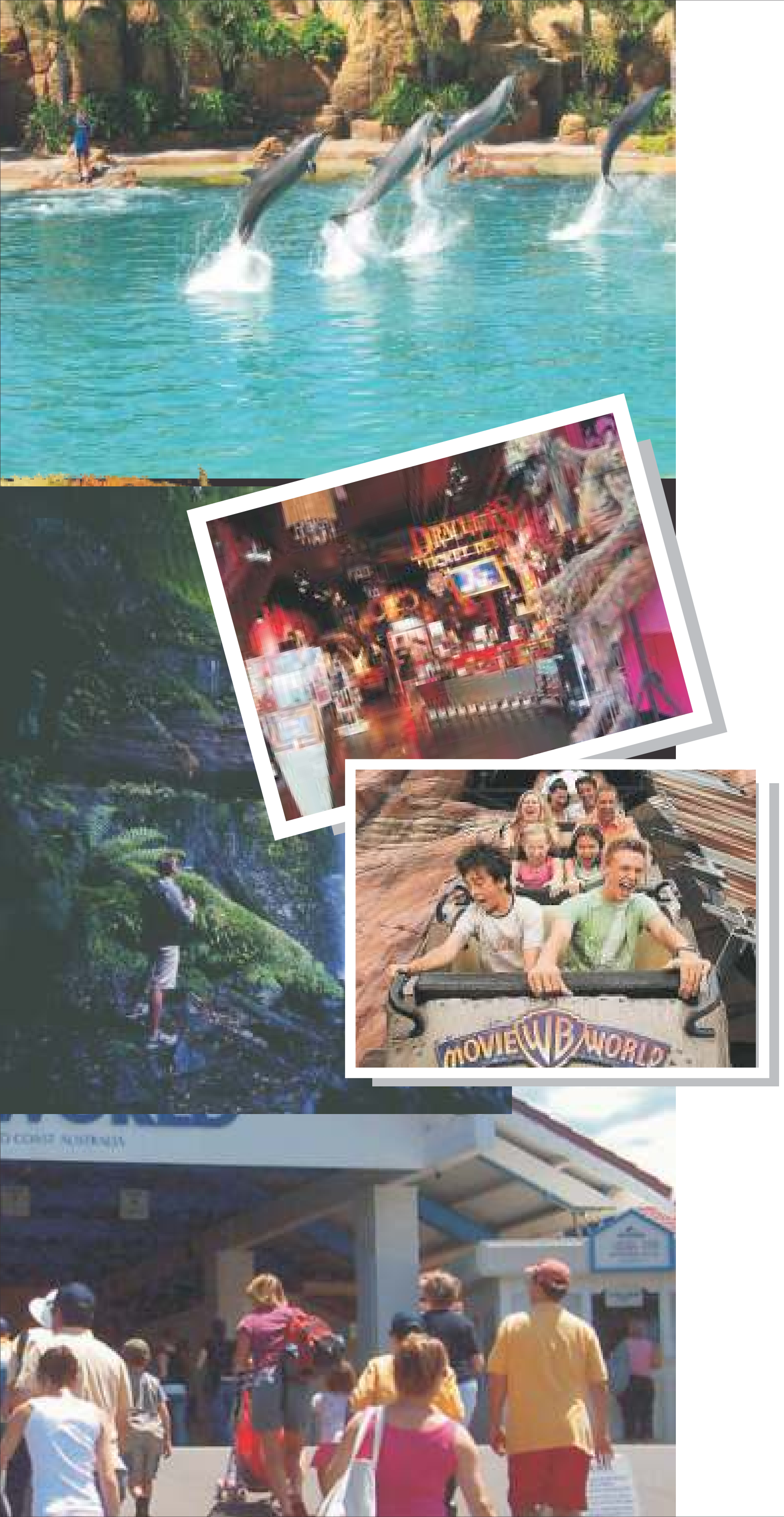

एंशियंट-इज़िप्शियन अंदाज़ में आउटडोर व इनडोर गतिविधियाँ मिलेंगी। विज्ञान में रूचि रखने वालों के लिए इनफ़िनिटी अट्रैक्शन एक बेहतर विकल्प हो सकता है। वॉर्नर ब्रदर का **'मूवी वर्ल्ड'** थीम पार्क के साथ-साथ आपको हॉलीवुड की भी सैर करवाता है । ज़्यादातर जगहों पर एम्यूज़मेंट के साथ-साथ वन्य जीवन को भी पेश करने की कोशिश की गई है। डॉल्फ़िन, कंगारू, काक्ला, शुतुरमुर्ग से लेकर बंगाल टाइगर जैसे जानवर इन थीम पार्क्स में मिल जाएँगे।

इसके अलावा यहाँ की वाइल्ड लाइफ़ व मरीन लाइफ़ काफ़ी समृद्ध है। अगर आप प्रकृति प्रेमी हैं तो **करम्बिन वाइल्ड लाइफ़ सेंचुरी, ऑस्ट्रेलियन आउटबैक स्पैक्टेक्युलर, पैराडाइज़ कंट्री ऑसी फॉर्म, सी वर्ल्ड, मांउट वर्न नेशनल पार्क व लेमिंग्टन नेशनल पार्क** जैसी जगहों पर जाया जा सकता है। ऑस्ट्रेलिया में पर्यटकों के लिये दूसरा सबसे बड़ा आकर्षण यहाँ की व्यावसायिक, सांस्कृतिक एवं कला राजधानी सिडनी है। यह वह शहर है जहाँ सबसे पहले अंग्रेज़ों ने स्थायी रूप से बसना प्रारंभ किया था, आज 4 मिलीयन जनसंख्या को समेटे है। यह शहर ऑस्ट्रेलिया के सबसे विकसित और संपन्न प्रदेश न्यू साउथ वेल्स की राजधानी भी है। सिडनी का नाम कानों मे आते ही सबसे पहले जो इमारत हमारी आँखों में घूम जाती है वह है खिले कमल की पत्तियों के आकार वाला ऑपेरा हाउस। इसे आकार देने के लिये 1956 में यहाँ एक प्रतियोगिता रखी गयी।

डेनिश वास्तु शास्त्री जॉन उडजन की डिज़ाइन ने सबको पीछे छोड़कर इस ऑपेरा हाउस को बनाने का सुअवसर प्राप्त किया। कंसर्ट हॉल, रिकॉर्डिंग हॉल, थियेटर, बैले, सिंफ़नी ऑर्केस्ट्रा जैसे अनेक कला केन्द्रों को अपने अंदर समेटे ऑस्ट्रेलिया का यह लैंडमार्क **'ऑपेरा हाउस'** विश्व का एक बड़ा कला केन्द्र है। कहते हैं अगर आप 'एम्पायर स्टेट बिल्डिंग' के ऊपर नहीं चढ़े तो इसका मतलब है आपने न्यूयॉर्क नहीं देखा। अगर आपने 'बिगबेन' को नहीं निहारा तो इसका मतलब है आपने लंदन नही देखा। इसी तरह अगर आपने **'हार्बर'** पर कदमताल नहीं किया तो इसका मतलब है आपने सिडनी नहीं देखा। 'ऑपेरा हाउस' के समीप ही सिडनी हार्बर ब्रिज की तलहटी में बसा यह एरिया शाम बिताने के लिये संसार की सबसे मनमोहक जगहों में से एक है। पानी पर चलते क्रूज़ यहाँ की मस्ती में चार चाँद लगा देते हैं। नृत्य, संगीत, ज़ायकेदार खाना, ठंडी-ठंडी हवा और दुनियाभर के पर्यटकों की चहलक़दमी के बीच मन बस यही दुआ करता है कि ये शाम कभी ना ख़त्म हो।

दुनिया में मछलियों का सबसे बड़ा कलेक्शन, 11500 से भी अधिक सुन्दर मनमोहक जलपरियों का केन्द्र **'सिडनी एक्वेरियम'** भी अपने आप में एक अजूबा है। सिडनी में अनेको म्यूज़ियम भी हैं, ऑस्ट्रेलियन म्यूज़ियम में आप डायनासोर एवं अन्य पक्षियों के अवशेष देख सकते हैं तो नेशनल मेरिटाइन म्यूज़ियम में दुनिया की सबसे तेज़ चलने वाली बोट, पावर हाउस म्यूज़ियम नयी दुनिया मे हो रही विज्ञान और तकनीकी तरक्क़ी का ख़ज़ाना है। डॉर्लिंग हार्बर पर स्थित **'पेनासॉनिक आइमेक्स थियेटर'** दुनिया का सबसे बड़ा स्क्रीन है। यहाँ बैठकर 2डी. या 3डी. फ़िल्म देखने पर ऐसा महसूस होता है मानो हम भी उसी फ़िल्म के एक पात्र हैं। मेरी नज़र में दुनिया में शायद सिडनी ही एक ऐसा शहर है जिसको देखने के लिये हर तरह के कोण और साधन उपलब्ध हैं। आप हेलिकॉप्टर, हॉट एयर बैलून या ग्लाइडर पर उड़कर आकाश मार्ग से इसके नज़ारे लूट सकते हैं तो 'सिडनी टॉवर' या 'हार्बर ब्रिज' पर चढ़कर स्काय वॉक के द्वारा रोमांच के साथ इस शहर का विहंगम दृश्य देख सकते

हैं, वहीं बस, कार, ट्रॉम या फिर स्काय ट्रेन से इस शहर का चप्पा-चप्पा छाना जा सकता है तो 'हार्बर' पर इवनिंग क्रूज़ से इस शहर की रातों को रोशनी से नहाते हुए भी निहार सकते हैं। शहर एक, देखने के साधन अनेक ....!

सिडनी का **'बोंडी बीच'** दुनिया के उन समुद्र तटों में एक है जहाँ सदैव पर्यटकों का हुजूम डटा हुआ रहता है। मीलों तक नज़र आते लोगों में कोई संगीत का आनंद ले रहा है तो कोई पार्टी मना रहा है। कोई सर्फ़िंग कर रहा है तो कोई बीच वॉलीवॉल के मैच में पसीना बहा रहा है। इस बीच को ऑस्ट्रेलिया का वॉटर प्लेग्राउंड भी कहते हैं।

1983 में निर्मित सिडनी की **'क्वीन विक्टोरिया बिल्डिंग'** विशाल डोम्स, ख़ूबसूरत पिलर एवं स्टेन ग्लास के अद्भुत काम का बेहतरीन मिश्रण है। सिडनी का पोर्ट भी अपने अंतर महाद्विपीय व्यापार के कारण प्रशांत क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह है। **'सिडनी ओलम्पिक पार्क'** वर्ष 2000 में यहाँ हुए ओलम्पिक खेलों के शानदार आतिथ्य की याद ताज़ा कर देता है।

आईये ! अब ज़रा सिडनी से बाहर निकलकर प्रकृति की गोद में खुलकर साँस ली जाए । इसके लिये सिडनी से 70 किमी दूर थ्री सिस्टर के नाम से विश्व प्रसिद्ध तीन पहाड़ पलकें बिछाऐ आपका इंतज़ार कर रहे हैं । **कटुम्बा, जमिसन वॅली और गोवेट्स लीप** नाम के ये तीनों पहाड़ यूनेस्को की विश्व संरक्षण सूची में हैं । यहाँ पर लगी केबलकार से आप आकाश को चीरते हुए जुरासिक रेन फ़ॉरेस्ट के ऊपर से गुज़रते हुए इलेक्ट्रो सिनींग ग्लास फ़्लोर में से लगे फ़र्श पर लगे काँच से रोमांच और आनंद के साथ 200 मीटर नीचे तक का नज़ारा ले सकते हैं। इस ब्ल्यू मॉउंटेन में ढेर सारे पक्षी और कलकल करते झरने आपको मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

ऑस्ट्रेलिया सही मायनों में एक देश नहीं महाद्वीप ही है । दुनिया भर की शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, खेल, कला और प्रगति का एक अनूठा संगम। एक ऐसा देश जिसके पास ख़ुद अपना कुछ भी नहीं था लेकिन खुले दिल से दुनिया भर से आने वाली हर अच्छी और नई बात को स्वीकार करना और उसे आत्मसात कर लेना यहाँ के लोगों की एक ख़ास ख़ूबी थी। इसी उदारता ने इतनी कम उम्र में ऑस्ट्रेलिया को दुनिया के सबसे विकसित देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। एक ऐसा देश जहाँ से वापस 11 घंटे की लंबी फ़्लाइट से वापस आने के बाद भी वहाँ की यादों की भीनी-भीनी खुश्बू आसपास बनी रहती है।

पर्यटक नहीं; राजदूत ...!

क़ुदरत ने प्रकृति को अनेक बेहतरीन और ख़ूबसूरत नियामतें दीं हैं। हरे-भरे ऊँचे पहाड़ उनमें से एक हैं। ऑस्ट्रेलिया में सिडनी के समीप है थ्री सिस्टर्स या ब्ल्यू माउंटेन। ये जितने सुंदर हैं उससे अधिक नज़ाक़त के साथ ऑस्ट्रेलियावासियों ने इन्हें संभाला और सहेजा है। कहीं भी गंदगी या कचरे का कोई नामो-निशान नज़र नहीं आता।

इन पहाड़ों पर भारतीय खाने की कोई समुचित व्यवस्था न होने के कारण हमें होटल से ही पार्सल पैक दे दिया गया था। माउंटेन की तलहटी के उस सुन्दर बाग़ ने लंच का स्वाद कई गुना बढ़ा दिया। अपने ख़ाली पार्सल और कचरे को डस्टबीन में डालकर हम अपनी आगामी बस में आ गए। बस चली ही थी कि हमारे साथ भारत से आई गाइड ने तुरंत बस रूकवा दी। वह यात्रियों से इजाज़त लेकर वापस उस बाग़ की और गई, जहाँ बैठकर हमने लंच लिया था। बस से साफ़ नज़र आ रहा था कि उसने लॉन पर हम में से एक यात्री द्वारा छोड़ दिये गये ख़ाली पार्सल को बीन कर वहाँ रखे डस्टबीन में डाला। सधे क़दमों से वापस आकर वह निर्विकार भाव से बस में बैठ गई। देरी के कारण उसने एक बार फिर सबसे क्षमा माँग ड्रायवर को बस चलाने को कह दिया। हम सबसे मुख़ातिब होकर वह विनम्रता से इतना भर बोली ***"हम यहाँ सिर्फ़ यात्री ही नहीं; भारत के राजदूत भी हैं।"*** बाग़ में ख़ाली पार्सल छोड़कर आया वह यात्री वाक़ई शर्मिंदगी महसूस कर रहा था।

ऑस्ट्रेलिया एक नज़र

• Area	76,82,300 km.
• Coastline	25,760 km.
• Life expectancy	80.6 years (2007 estimate)
• Population Australia	2,04,34,176 (2007 estimate)
Sydney	35,02,301 (2001 estimate)
Melbourne	31,60,171 (2001 estimate)
Brisbane	15,08,161 (2001 estimate)
• Religious Affiliations	
Roman Catholic	29 percent
Anglican	22 percent
Protestants	14 percent
Other Christian	15 percent
Non-Religious	14 percent
Others	6 percent
• Literacy rate	100 percent (1995)
• Government	
Form of government	Governor-General representing the British Monarch
Constitution	Universal and compulsory at age 18
• Total number of military personnel	52,872 (2004)

• Military expenditures as a share of gross domestic product 2.3 percent (2003).

• 1 Australian dollar ($A), Consisting of 100 cents.

"जितने लोग ऑस्ट्रेलिया में रहते हैं इतने लोग तो हमारे देश में एक समय में रेल में सफ़र कर रहे होते हैं।"

पंडित जवाहरलाल नेहरू

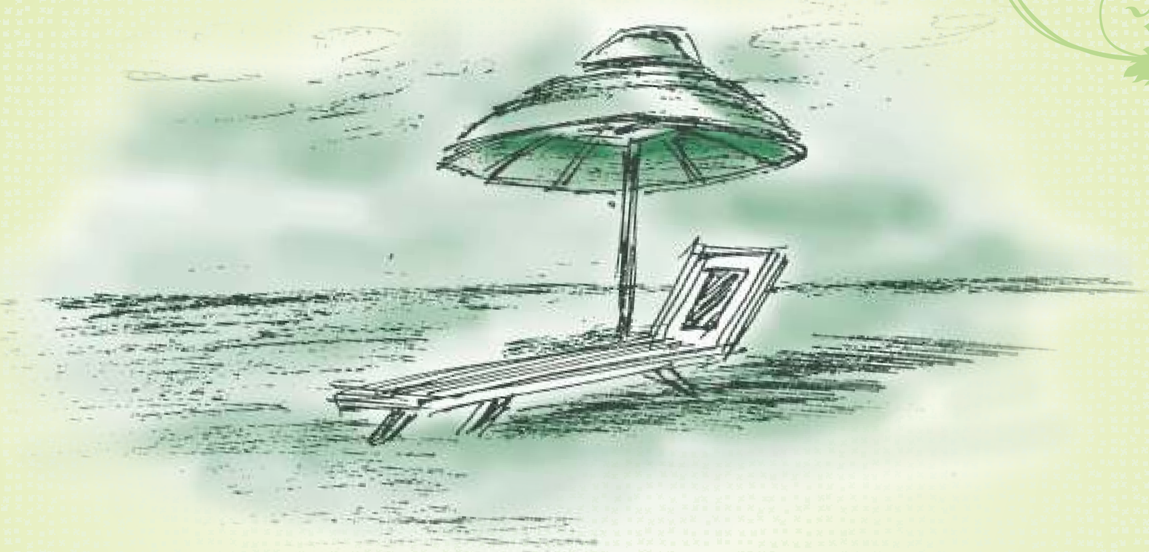

फुकेट

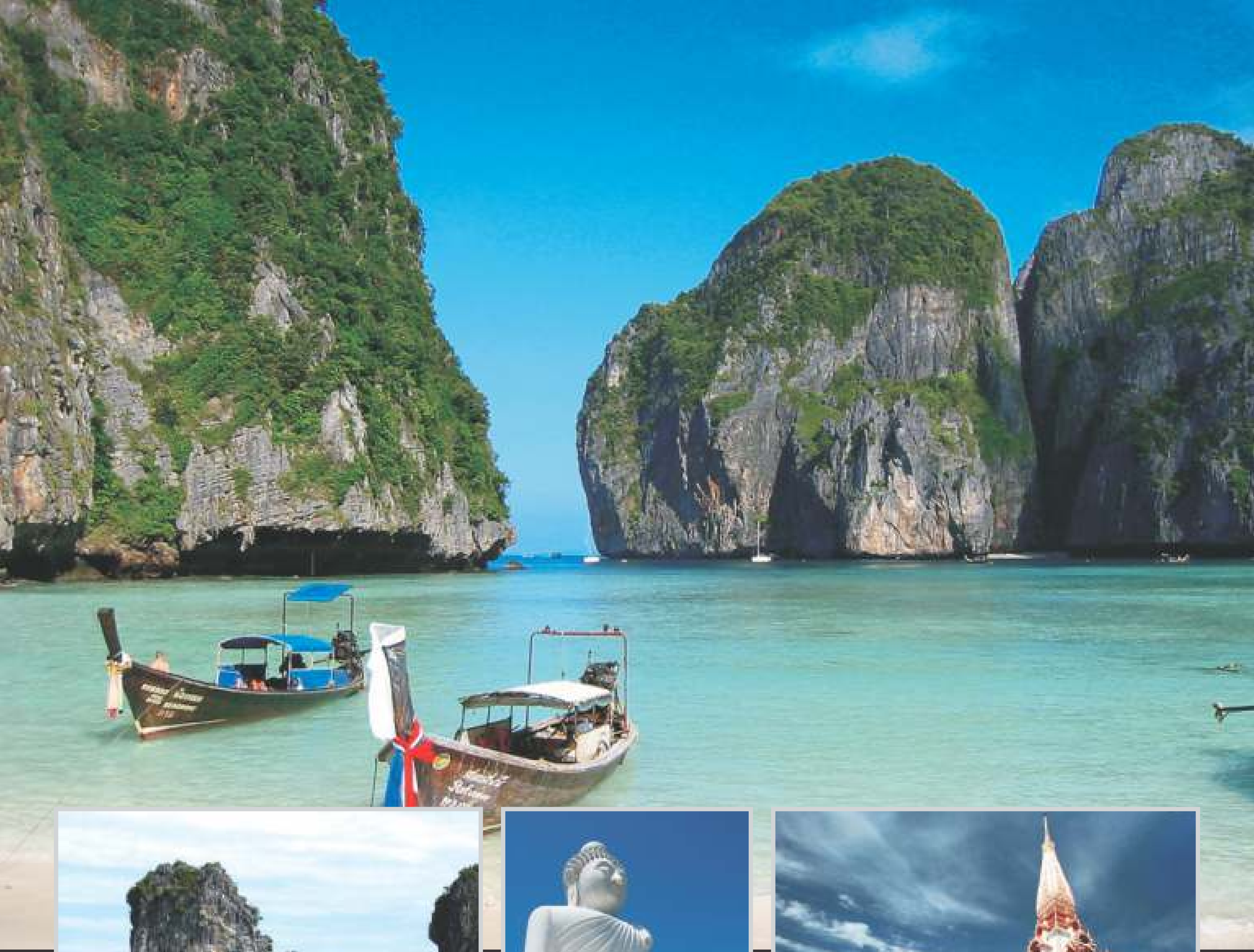

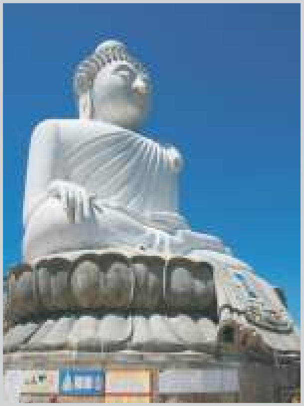

इरादों की मजबूती का व्दीप... फुकेट

26 दिसम्बर 2006 का वाकिया है। दिसम्बर का अंतिम सप्ताह यूँ तो हमेशा से ही पर्यटन का सबसे पीक सीज़न होता है, पर इस बार कुछ ज़्यादा ही ज़ोर नज़र आ रहा था। समूचे विश्व में पहचाने जाने वाले थाइलैंड के इस सुंदर द्वीप पर दुनिया भर के पर्यटकों का हुजूम उमड़ा हुआ था। चौतरफ़ा रौनक़ और मस्ती। सारे होटल्स, रेस्टॉरेंट, क्लब, समुद्र तट, टेक्सियाँ एवं बसें हाउस-फुल का बोर्ड लगाकर शान से इठला रहे थे, पर अचानक आए सुनामी महाप्रलय ने सारी ख़ुशियों को मातम में बदल दिया। द्वीप के पश्चिमी समुद्री किनारे पर सबसे ज़्यादा तबाही मची। **'पटांग'** और **'कमाला'** नाम के दो विश्व प्रसिद्ध द्वीप क़ुदरत की इस मार से सबसे ज़्यादा प्रभावित हुए। इस ज़लज़ले ने उस एक दिन में देश-विदेश के 3000 से भी अधिक लोगों को मौत की नींद सुला दिया। देखते ही देखते द्वीप के अधिकांश होटल्स, मॉल, बाज़ार, चर्च, मंदिर और घर भी ज़मींदोज हो गये।

आज उसी द्वीप के मुख्य बाज़ार में आलीशान होटल्स, भव्य शॉपिंग मॉल, चमचमाती सड़कें, महंगी कारें, ऊँची अट्टालिकाऐं और मस्ती से झूमते, चहल-क़दमी करते हज़ारों पर्यटकों की भीड़ के बीच खड़े होकर मै दाँतों तले उंगली दबाये सोच रहा हूँ

कि क्या यही वह जगह है जहाँ सिर्फ़ डेढ़ साल पहले बर्बादी की दिल दहला देने वाली तस्वीरों से सारी दुनिया के समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ रंगी हुईं थीं। वाकई फ़ुकेट प्रकृति की उस हर महामारी पर मनुष्य के हौसलों का एक जवाब है जहाँ विपदा पर विजय की पताका फ़हराते आज 3 मिलियन विदेशी यात्री फिर से प्रतिवर्ष आने लगे हैं। यहाँ के लोग उस सुनामी को न तो याद करना चाहते हैं और न ही उस पर बात करना चाहते हैं। यह द्वीप अपने टूटे हुए टुकड़ों को धीरे-धीर संजोकर अपने पुराने स्वरूप से और बेहतर रूप में अधिकारपूर्वक लौट आया है। मनमोहक फ़ुकेट ने सिद्ध कर दिया कि दुर्भाग्य के थपथपाने के बावजूद भी उसमें पर्यटकों को मदहोश कर देने और बहलाने की क्षमता ज़िंदा है। महबूब शायर माजिद देववंदी ने जैसे यह मुक्तक यहाँ के ज़िंदादिल लोगों के लिये ही लिखा है-

लाख़ ख़ौफ़तारी हो ज़लज़ले के आने का
सिलसिला ना छोड़ेंगे हम भी घर बनाने का
क़ामयाबी तय करती है हौसलो की मज़बूती
दिल में हौसला रखिये कश्तियाँ चलाने का।

फ़ुकेट के इतिहास की झलक पाने के लिये हमें तीसरी सदी के ग्रीक ज्योग्राफ़र की पुस्तक 'टोलेमी' के पन्ने पलटाने होंगे। वे लिखते हैं कि हमें सुवानापम से मलय पेनेन्ज़ुएला जाते समय रास्ते में विश्राम के लिये एक बेहद ख़ूबसूरत द्वीप **'केप ऑफ़ जंग सी लंग'** पर रूकना होता था। यही द्वीप कालांतर में चलकर जेक सिलोन और फिर शनैः-शनैः फ़ुकेट हो गया। सोलहवीं शताब्दी में यहाँ डच ट्रेडिंग पोस्ट स्थापित हुआ। उन्होंने यहाँ के प्रमुख खनिज टिन के उत्सर्जन के लिये काम प्रारंभ किया। बाद में इसका उत्तरी एवं पूर्वी किनारा थाई हाथों में आ गया, पर इस देश का पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र डच हाथों में ही रहा। 1961 में यहाँ फ्रेंच लोगों ने अपना गवर्नर नियुक्त कर दिया। बाद में ब्रिटिशर्स ने अपना प्रभाव जमाया और यहाँ टिन के उत्पादन के लिये चाइना से बड़ी संख्या में कारीगर और मज़दूर बुलवाए। 1867 में इस द्वीप को घनघोर अशांति का सामना करना पड़ा जब इन्हीं चीनी मज़दूरों ने अपनी आमदनी और सुविधाओं से असंतुष्ट होकर अपने तरीक़े से विरोध के स्वर मुखर किये। यहाँ की आंतरिक साज-सज्जा में आज भी चीनी झलक नज़र आती है तो तटीय क्षेत्रों में मुस्लिम मछुआरों का प्रभाव। 1933 में यह द्वीप भी थाईलैंड का एक प्रमुख प्रांत बन गया।

मात्र 590 वर्ग किमी के छोटे क्षेत्रफल के बावजूद अपनी स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था के कारण यह द्वीप पर्यटन के साथ ही साथ विश्व के आर्थिक नक्शे पर भी स्वाभिमान के साथ अपना स्थान रखता है। टिन के साथ ही साथ यहाँ हाथी दाँत, जेम्स, मोती, मसाले, फ़ायरवुड की भरमार है। 1980 में जब थाईलैंड ने अपने आर्थिक उद्धार के लिये पर्यटन को मुख्य स्रोत बनाने की ठानी तब सबसे पहले पर्यटक फ़ुकेट की ओर आकर्षित हुए। यहाँ के एयरपोर्ट, अच्छी सड़कें, उन्नत इन्फ्रास्ट्रक्चर और इन सबसे बढ़ कर लोगों के समर्पित आतिथ्य सत्कार-भाव ने इसे सुपरहिट कर दिया।

यहाँ के सुपर लक्ज़री सितारा होटलों के बीच पर बने होने और उनके निजी समुद्र तट होने से निजता और तन्हाई चाहने वाले पर्यटकों की यहाँ बाढ़ सी आ गयी। **'गोल्फ़र्स पेराडाइज़'** के नाम से सारी फुकेट में दुनियाभर के गोल्फ़ प्रेमी दौड़े चले आते हैं। फुकेट के नये गोल्फ़ कोर्स **'रेड माउंटेन'** का विश्व में अपना स्थान है। गोल्फ़ कोर्स की लिस्ट में एक और नाम है **'ब्लू क्रेनयन'**। यह गोल्फ़ कोर्स सालों-साल से अनेक अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड्स जीतते आ रहे हैं जिसमें से सबसे प्रमुख है- ''एशियन एंड पैसेफ़िक गोल्फ़ कोर्स ऑफ़ द इयर अवॉर्ड''।

फुकेट में अनेक सुप्रसिद्ध समुद्री तट हैं जिनमें से प्रमुख है पटांग, काटा, करोन और कामला। यहाँ का मुख्य द्वीप 340 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है जिसकी लंबाई 48 किमी उत्तर से दक्षिण और 21 किमी पूर्व से पश्चिम तक है। फुकेट का एक प्रसिद्ध स्थान **'फेन्टासिया'** भी है जहाँ वाईड और कल्चरल शो को देखने दूर-दूर से लोग चले आते हैं। फुकेट नगर में समुद्र तटों के अलावा भी देखने के लिये और बहुत कुछ है। जैसे साइनों पुर्तगीज़ आर्किटेक्चर। ज़िन्दगी को एक उत्सव की तरह जीने वाले यहाँ के प्रमुख बाज़ार और छोटे-बड़े मंदिर। इस छोटे से शहर के वातावरण में आपको थाई सभ्यता के पराग-कण हर जगह हर पल उड़ते नज़र आएँगे।

थाईलैण्ड में बैंकाक से 850 किमी दक्षिण में स्थित फुकेट उन जगहों में से एक है जो कि पर्यटन क्षेत्र के रूप में पूरे विश्व का एक नगीना है। इस शहर की प्रसिद्धि इसके ख़ूबसूरत समुद्र तटों, इसके प्यारे नगर और इसके नैसर्गिक सौन्दर्य की बदौलत है। यह थाईलैण्ड का सबसे बड़ा द्वीप है जो कि देश के दक्षिणी अंडमान कोस्ट लाइन पर स्थित है। फुकेट टाउन, फुकेट प्रोविन्स का शासन केन्द्र है फुकेट को उसके चाहने वाले **'पर्ल ऑफ़ अंडमान'** भी कहते हैं। फुकेट में अनेक छोटे-छोटे द्वीप समूह हैं। फुकेट मेनलैण्ड से दो ब्रिजों के द्वारा जुड़ा हुआ है। फुकेट द्वीप अंडमान समुद्र का श्रृंगार है और ताड़ के पेड़ों से भरे इसके समुद्र तटों ने इस द्वीप को सबसे ज़्यादा घनी और भ्रमणीय द्वीप बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। यहाँ साल में दो प्रमुख मौसम होते हैं- बरसात और सूखा। बरसात मई से अक्टूबर जिसमें सितम्बर और अक्टूबर में सबसे ज़्यादा बारिश होती है। फुकेट घूमने का सबसे व्यस्त और सही समय है नवम्बर से फ़रवरी तक।

बैंकाक और पटाया की तरह ही यहाँ भी पर्यटकों के आनंद और मनोरंजन के लिये अनेक साइट सीन एवं टूर कार्यक्रम हैं। यहाँ पर कोरल्स हैं तो वॉटर स्पोर्ट्स भी। शाम को क्रूज़ की सैर है तो अल्कज़ार शो भी। मंदिर है तो मसाज भी। एक बात इसे बैंकाक और पटाया से अलग करती है और वह है यहाँ की अलौकिक नीरव-शांति। अगर आप तरक्क़ी की अंधी दौड़ में हाँफ़ रही इस दुनिया से कुछ समय के लिये अपने आपको अलग करना चाहते हैं

तो आपको फुकेट से बेहतर और जगह नज़र नहीं आएगी। अगर आप इस बाज़ारवाद और भौतिकता के दौर से थक गये हैं और काँक्रीट के जंगल, वाहनों और भीड़-भाड़ के कोलाहल से बाहर निकलकर कहीं बैठकर कुछ पल चैन की बंसी बजाना चाहते हैं तो फुकेट से बढ़िया चौपाल कहीं नहीं मिलेगी। फुकेट से आते-आते मैं जे.के. टायर्स के एम.डी. श्री ए.एस. मेहता से पूछता हूँ...

''सर अगर फुकेट को एक लाइन में कहना हो तो आप क्या कहेंगे ...?''

उनका जवाब था-

''फुकेट यानि की बेस्ट ऑफ़ द रेस्ट।''

यात्रा संकीर्ण सोच, पूर्वाग्रह जैसी बीमारियों के लिए जानलेवा है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

कुछ उपयोगी थाई शब्द और वाक्य...

हैलो	सवादे क्राब (पुरूष)
	सवादे का (महिला)
थैंक यू	कॉब कून
हाऊ आर यू	सबाई दी रीयू
मै थाई नहीं बोल सकता	फूद थाई माई दाई
कृपया धीरे बोलें	फूद चा चा
मैं नहीं समझता	माइ काओ जाइ
क्या आप समझ रहे हैं?	काओ जाइ माइ
गुडबॉय	ला गोन
फ़िर मिलते हैं	लेओ (लेयू) फोब गन माइ
क्षमा करें / एक्सक्यूज़ मी	कोर थोड़
पानी	नम
चाय	नम-चा
कॉफ़ी	गा-फे
बर्फ़	नम खग

☞ **क्या कोई इंग्लिश बोल सकता है?**
मी क्राई फूद पासा अंग-ग्रित दाई बंग माई?

शंघाई

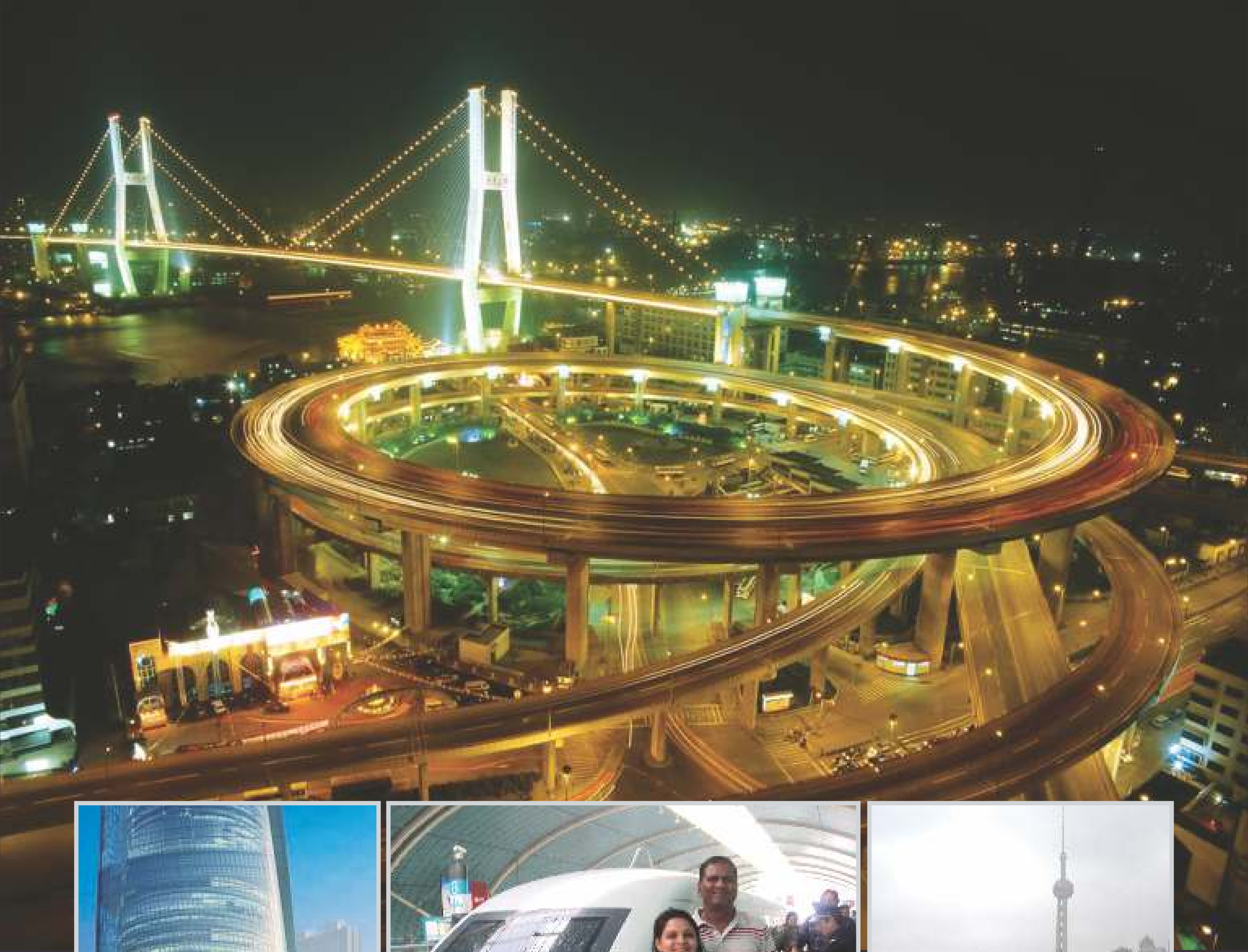

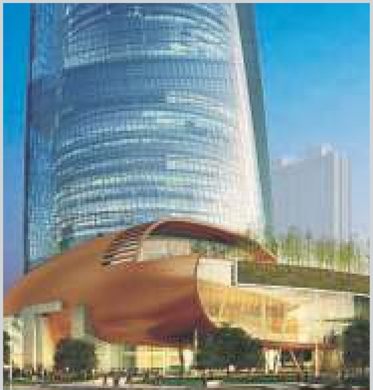

आधुनिक चीन का लैंडमार्क... शंघाई

भारत में आपको अक्सर नेताओं के ऐसे बयान सुनाई दे जाते हैं कि हम बैंगलूरू या मुंबई को शंघाई बना देंगे, पर शंघाई में चंद घंटे गुज़ार कर ही इस बात का अंदाज़ा लग जाता है कि ऐसे सपने देखने और दिखाने भर के ही हैं। इन्हें सच करने में शायद सौ साल लग जाएँ। दुआ करें वैसी सड़कें, रेल, इमारतें या फिर वैसे पुल हमारी पीढ़ी भी भारत में देख पाए। मूलभूत सुविधाओं के लिए रोज़ जूझ रहे भारतवासियों के लिए तो यह सब अंचभा ही है। और तो और लोगों में कूट-कूट कर भरा अनुशासन और विकास की ललक देख कर आप स्वयं समझ जाएँगे कि अभी तो हमको कई कोस चलना बाक़ी है। शंघाई को आप एक ऐसी ख़ूबसूरत युवती के रूप में देख सकते हैं, जो सज-सँवर कर सारी दुनिया का दिल लुभाने के लिये बेताब है। एक ऐसे धावक के रूप में भी देख सकते हैं जो कि आज तक के सारे रेकॉर्ड एक बार में ही ध्वस्त करने के लिये दौड़ा जा रहा है। एक ऐसे प्रोफ़ेशनल के रूप में देख सकते हैं जिसका हर वाक्य और क़दम सधा हुआ, व्यवस्थित नज़र आता है। इन सबसे बढ़कर एक ऐसे रईस के रूप में देख सकते हैं जिसके रोम-रोम से समृद्धि टपक रही है।

बादलों को भेदते वायुयान से 6400 वर्ग किलोमीटर में फैला यह शहर शतरंज या कैरम की जमी हुई बाज़ी की तरह सलीक़ामंद नज़र आता है। गगनचुम्बी इमारतों को चीरता हुआ वायुयान उतरता है विश्व के नायाब हवाई अड्डों में से एक शंघाई एयरपोर्ट पर। मीलों फैला यह हवाई अड्डा भव्यता, सुन्दरता और इन सबसे बढ़कर अनुशासन की एक परफ़ेक्ट मिसाल है। यहाँ से आपका सफ़र शुरू होता है इक्कीसवीं सदी के तीव्रतम अजूबे से। जी हाँ ! **'मेगलेव ट्रेन'**। तीव्रतम इसलिये कि 431 कि.मी. प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ने वाली यह ट्रेन दुनिया में सबसे तेज़ है और अजूबा इसलिये कि चुंबकीय विज्ञान का उपयोग लेते हुए यह ट्रेन ज़मीन से 4 से.मी. ऊपर दौड़ती है। हवाई अड्डे से शंघाई शहर तक का 34 कि.मी. का सफ़र यह मात्र 7 मिनट में पूरा कर देती है।

चांग नदी के मुहाने पर बसा शंघाई, चीन के सबसे बड़े बंदरगाह वाला शहर है सिर्फ़ एक लाईन में यूँ भी कह सकते हैं कि शंघाई चीन की व्यवसायिक राजधानी है। इस शहर का उल्लेख सबसे पहले सन् 960 में संगवंश के ज़माने से मिलता है। 1074 में यहाँ बंदरगाह बना और 1553 में इसे दीवारों के परकोटे से घेर दिया गया ताकि यह समुद्री डाकुओं के हमलों से सुरक्षित रहे। उन्नीसवीं शताब्दी आते-आते बंदरगाह विस्तृत होता गया और यह शहर पश्चिमी देशों के साथ व्यापार का एक बड़ा केंद्र बन गया। 1990 तक शहर की इमारतें आसमान को छूने लगीं तो दूसरी तरफ़ अंतरराष्ट्रीय यातायात के लिए विश्व का श्रेष्ठ हवाई अड्डा निर्मित हुआ। दुनिया का सबसे बड़ा भवन **'शंघाई विश्व वित्तीय केंद्र'** इस शहर के इठलाने का एक और कारण बना और देखते ही देखते दबे पाँव चीन का यह शहर न्यूयॉर्क हाँगकाँग या फिर सिंगापुर जैसे शहरों को पछाड़कर विश्व के सर्वोत्तम शहर होने का दावा करने लगा।

शंघाई एक तरह से चीन का मॉडल टाउन है। इसे चीन अपने वैभव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। सकल घरेलू उत्पाद में 15 प्रतिशत की सालाना वृद्धि हमारे दाँतों में उंगली दबाने के लिये काफ़ी है। 17 साल पहले जब सरकार ने ठान लिया कि हमें एक मिसाल के रूप में शंघाई प्रस्तुत करना है तब से शहर का कायाकल्प शुरू हो गया। सत्रह सालों में यहाँ 33 अरब अमेरिकन डॉलर का निवेश हुआ। शंघाई में माँ लक्ष्मी की कृपा किस क़दर बरसती है इसका जायज़ा सिर्फ़ इसी उदाहरण से लग जाता है कि जहाँ सारे चीन में प्रति व्यक्ति औसत सालाना आय 1000 अमेरिकन डॉलर है वहीं शंघाई में यह आय 7000 डॉलर है। ग़रीबी यहाँ दिखाई नहीं देती या फिर यूँ कहें कि उसे दिखने नहीं दिया जाता। अक्टूबर 2010 में संपन्न ट्रेड एक्सपो से पहले सारे शहर से झोपड़ियों और गुमटियों का नामोनिशान मिटा दिया गया। समूचे शहर को इतना सजाया गया कि हमारी दीपावली की सजावट भी शरमा जाए। यहाँ के पुटांग इलाक़े में बनी शीशे और इस्पात की गगनचुंबी इमारतों को देखने में गर्दन ऐंठ जाती है।

ऊपर से सोने पर सुहागे के रूप में उन पर की गयी विद्युत सज्जा, वह भी कुछ ऐसी की नज़रें चौंधिया जाएँ। विद्युत सजावट में बिल्डिंग वाला कसर ना छोड़ दे इसलिये यहाँ की सरकार सजावट का बिजली बिल स्वयं भरती है। आलम यह कि सारा शहर रात भर रोशनी से नहाता रहता है। बेरहमी से पॉवर-कट की मार झेल रहे मेरे मध्यप्रदेशवासियों के लिए तो यह घावों पर नमक छिड़कने जैसा था।

रात्रि में **'हांगयू नदी'** पर सैकड़ों रंगबिरंगे क्रूज़ चलते हैं। सजावट और सुंदरता के मामले में एक-दूसरे से गला काट स्पर्धा करते ये क्रूज़ गीत-संगीत, खान-पान और मस्ती से सराबोर रहते हैं। इन क्रूज़ की छत से शंघाई के दोनों भागों का फ़र्क़ स्पष्ट नज़र आता है। वेस्ट में अपनी ऐतिहासिक समृद्धशाली विरासत समेटे पुराने शंघाई की शानदार सरकारी इमारतें हैं जिन पर से लाल रंग के कपड़े पर पीले सितारे जड़े चीनी ध्वज शान से लहराते नज़र आते हैं। ईस्ट में इक्कीसवीं सदी की दुनिया से टक्कर लेने को बेताब नया शंघाई...। पर एक बात में दोनों शंघाई एक समान हैं ... तरक्क़ी का जज़्बा।

ईस्ट और वेस्ट शंघाई को जोड़ने वाले एरिए को **'बंड'** कहते हैं। 'बंड' एक तरह से मुम्बई के मरीन ड्राइव जैसा है चारों तरफ़ नज़र आती क्यारियों के साथ ही साथ खंबों पर झूलती छोटे-छोटे मनमोहक फूलों की डालियाँ; स्विट्ज़रलैंड की याद दिलाती हैं। बंड के दूसरी तरफ़ इठलाकर कल-कल करती **'चांग नदी'** की लहरें शान से अठखेलियाँ करती नज़र आती हैं। ओवरब्रिज की तरह सिर्फ़ पैदल चलने के लिये बने इस मार्ग पर हज़ारों पर्यटक आपको दिन भर चहल क़दमी करते और फ़ोटो खिंचवाते नज़र आएँगे।

सन् 1995 में बना 468 मीटर ऊँचा **'ओरिएंटल पर्ल टीवी टावर'** शंघाई का लैंडमार्क है। बेहद ख़ूबसूरत इस टॉवर के शिखर पर चंद सेकेंड में लिफ़्ट से पहुँचा जा सकता है। यहाँ से जो नज़ारा दिखता है उसके लिये कई घंटे भी कम पड़ जाते हैं। कहते हैं उँचाई से देखने पर किसी भी शहर की पोल खुल सकती है यहाँ से भी शंघाई ऐसा सुंदर और जमा-जमाया नज़र आता है कि नज़र लग जाए। यहाँ पर एक ग्लास का मज़बूत फ़्लोर लगा है जिस पर पर्यटक बड़े डरते-डरते पाँव रखता है पर यहाँ से नीचे देखने और फ़ोटो खिंचवाने का अपना ही एक आनंद है।

केरल या फिर वेनिस की तर्ज़ पर यहाँ भी एक वॉटर विलेज है; **'मुजिआओं'**। जहाँ नदी रोड का काम करती हैं और नाव में बैठकर घूमते-घूमते ख़रीददारी का लुत्फ़ उठाया जा सकता है। शंघाई से दो घंटे की दूरी पर स्थित मीलों एरिये में फैला **'संगजिंग हैप्पी वैली'** दुनिया के बड़े थीम पार्क में से एक है यहाँ आपको दुनिया भर के राइड्स, मनोरंजन और शोज़ मिल जाएँगे। मस्ती इतनी कि एक दिन का समय इसके लिये कम है। रात में भटकने वालों के लिये शंघाई में ढेर सारे डिस्को एवं क्लब हैं।

इनमें आप सपरिवार जाकर तेज़ संगीत पर कमर मटका सकते हैं। चाइनीज़ मर्यादाओं के बाद भी पश्चिमी संस्कृति का आग़ाज़ अब देश में नज़र आने लगा है। एक शो ऐसा है जिसे न तो छोड़ा जा सकता है और न ही छोड़ा जाना चाहिए और वह है एरोबिक्स शो। एक घंटे के इस हैरतअंगेज़ शो में दाँतों तले दबाने के लिये उँगलियाँ कम पड़ जाती हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक एक से बढ़कर एक जिमनास्टिक करतब। शो के अंत में लोहे की जाली से बनी एक गेंद के अंदर एक साथ जब आठ मोटरसाइकिल सवार करतब दिखाते हैं तो लगता है कि हम वाक़ई जैकी चैन या फिर ब्रूसली के देश में बैठे हैं।

शंघाई या फिर चीन जाएँ और ख़रीददारी न हो ऐसा हो ही नहीं सकता! दुनिया भर के शानदार और महँगे से महँगे ब्रांड यहाँ हुबहू और अविश्वसनीय क़ीमतों पर उपलब्ध हैं। उदाहरण के तौर पर स्विस गेअर का जो ओरिजनल लगेज 35,000 रु. में आता है उसे धर्मपत्नी शालिनी ने यहाँ से मात्र 1500 रु. में ले लिया। यहाँ से ख़रीददारी के लिए आपमें एक ही हुनर और ताक़त चाहिये और वह है भावताव करने की कला। वह भी इस हद तक कि सामान बेचने वाली लड़कियाँ जिस वस्तु के 1000 रु. बोलती हों उसकी क़ीमत 20 रु. बताने का साहस आपमें होना चाहिए। तब कहीं जाकर सौदा 100-150 रु. में पटता है। शंघाई में ख़रीददारी के लिये ढेर सारे फेक मार्केट हैं। नानजिंग रोड क्वॉलिटी शॉपिंग के लिये एक अच्छी जगह है। हमारे यहाँ के लगभग 6½-7 रुपये में यहाँ की एक करेंसी आती है, जिसे युआन कहा जाता है। चीन में अंग्रेज़ी भाषा को समझने वालों की कमी है। अतः होटल या कहीं और भी जाना हो तो चीनी भाषा में लिखा हुआ एक कार्ड अवश्य साथ रख लेना चाहिये। शाकाहारी भोजन की चिंता करने वालों के लिए अच्छी ख़बर यह है कि शंघाई में ऐसे आधा दर्ज़न रेस्तराँ हैं जो आपका काम चला देते हैं।

चीन में हर तरह का, हर रेट का और हर क़िस्म का सामान बनता है। यहाँ बनने वाला उच्च श्रेणी का सामान अमेरिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया के बाज़ारों के लिये रवाना हो जाता है और सस्ता और घटिया सामान भारत जैसे एशियाई देशों के लिये। भारत में चीनी सामानों की इमेज के ये हाल हैं कि *"एक प्रेमिका ने प्रेमी से पूछा- पता है प्यार का जन्म कहाँ से हुआ था? प्रेमी ने तुरंत जवाब दिया- चीन से। प्रेमिका ने पूछा वह कैसे? आधुनिक प्रेमी ने फिर उत्तर दिया- चले तो सालों साल; नहीं तो आज शाम तक भी नहीं।*

चीन की दिनचर्या प्रेरणादायी है। यहाँ व्यक्ति सुबह 8 बजे दुकान या फिर अपने ऑफ़िस पहुँच जाता है। फिर 11 से 12 बजे लंच ब्रेक और शाम को 5 बजे कामकाज ख़त्म। यहाँ के लोग शाम को दुकान बंद करते समय झाड़ू लगाते हैं और अच्छी तरह साफ़-सफ़ाई कर उसे चकाचक कर बंद कर देते हैं ताकि सुबह सफ़ाई की कोई झंझट ना रहे। फिर शाम को जिम में क़सरत करके घर लौटते ही नहा लेते हैं। एक आम चीनी सूर्यास्त पूर्व भोजन भी कर लेता है,

हमारे देश के जैन धर्मावलम्बियों की तरह। रात को थोड़ा बहुत टहल कर जल्दी सो जाता है। क़सरत और स्वास्थ्य के प्रति यह देश बेहद सजग है। हर मोहल्ले और कॉलोनी में आपको जिम ज़रूर मिलेंगे। मल्टी स्टोरीज़ की अनुमति आपको तब मिलती है जब आप मात्र 20 प्रतिशत एरिये में ही कंस्ट्रक्शन करें और शेष 80 प्रतिशत जगह जिम, बग़ीचे, स्वीमिंग पूल और वॉकिंग के लिए खुली छोड़ें। वर्ष 2010 में सम्पन्न ट्रेड एक्सपो में देश की छवि धूमिल न हो इसके लिए सरकार ने छोटी से छोटी बात का ख़्याल रखा। उदाहरण सिर्फ़ इस बात से ही समझ में आ जाएगा कि सरकार ने इस दौरान लोगों के घर से बाहर पज़ामे में घूमने पर ही पांबदी लगा दी थी ताकि शंघाई की इमेज ढीली-ढाली नज़र न आए। नंबरों के प्रति यहाँ के लोगों में दीवानगी की हद तक अधंविश्वास है। 9 नम्बर सबसे लकी माना जाता है, 8 समृद्धि का प्रतीक है, 6 मनोकामना पूरी करता है और 1 नंबर स्वास्थ्य का प्रतीक है। यहाँ उसे इस तरह से समझाया जाता है कि अगर आपके पास 1,00,000,00 रूपये भी हों और उसमें से एक हटा दिया जाए तो सिर्फ़ 0 बचता है। यानि कि *"Health is gone, every thing is gone"* पर हमारे भारत की नई पीढ़ी आजकल मज़ाक में यह जुमला सुनाती है- *"Character is gone, nothing is gone, Health is gone something is gone, But money is gone every thing is gone."* 4 नंबर को अनलकी माना जाता है। बिल्डिंग में चौथी मंज़िल का नंबर 4 की जगह 5ए लिखा जाता है। गाड़ियों के लिये लकी नंबर की नीलामी होती है और ऐसा कई बार होता है कि गाड़ी की नंबर प्लेट गाड़ी से भी ज़्यादा क़ीमत में बिकती है। 8 नंबर से देश को इतना प्यार है कि बीजिंग ओलम्पिक के शुभारंभ के लिये चीन सरकार ने 08-08-2008 को 8 बजकर 8 मिनिट और 8 सेकण्ड का समय चुना था।

चीन के राष्ट्रपिता माओ का मानना था कि देश की जनसंख्या जितनी ज़्यादा होगी देश उतना ही मज़बूत होगा। देखते ही देखते तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या देश के लिये नासूर बन गई। तब ठिगने क़द पर ऊँची सोच वाले राष्ट्रपति पिंक वेंग ज़्याउ ने 1980 में एक दंपत्ति-एक संतान का क़ानून बनाया। सिर्फ़ कुछ मामलों में ही दो बच्चों की छूट दी गयी। मसलन बच्चे ही जुड़वा पैदा हो जाएँ, या जिनका पहला बच्चा लड़की पैदा हो या फिर पिता के पास पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री हो या फिर माता-पिता दोनों अपने-अपने पिताओं की इकलौती संतानें हों। अंतिम छूट उन्हें भी है जहाँ माता-पिता दोनों किसान हों। सरकार के इस दूर अंदेशी क़ानून का फ़ायदा यह हुआ कि देश में जनसंख्या की वृद्धि दर एक जोड़े पर 1.4 पर आकर टिक गई।

शंघाई में यदि ठंड ख़ूब पड़ती है तो गर्मी भी। ठंड में तापमान मायनस 10 डिग्री तक चला जाता है तो गर्मी (जुलाई) में 40-45 डिग्री से भी ज़्यादा गर्म हो जाता है यह शहर।

शासन का स्पष्ट निर्देश है कि जैसे ही तापमान 40 डिग्री को पार कर जाए उस दिन छुट्टी। रात्रि 8 बजे अगले दिन के तापमान का अनुमान आ जाता है। सारा शहर टीवी पर नज़रें गढ़ाए बैठा रहता है कि कल छुट्टी मिलेगी की नहीं? बरसात में इतनी आर्द्रता हो जाती है कि घरों में बिस्तर के स्पंज तक ख़राब हो जाते हैं। मौसम के मामले में इनकी विपदा सुनकर लगता है कि भारत कितना भाग्यशाली है जहाँ गर्मी, ठंड और बरसात, सभी यहाँ से बेहतर है।

दुनिया के बहुत सारे हिस्सों में आजकल भारतीय बहुतायत से मिल जाएँगे वहीं शंघाई में भारतीयों की संख्या मात्र 3000 ही है। शंघाई - बीजिंग में तो फिर भी इक्के दुक्के इंडियन टकरा जाएँगे पर चीन के अंदरूनी हिस्सों में तो भारतीयों या विदेशियों को रहने की अनुमति नहीं के बराबर है। यहाँ हीरों का व्यवसाय कर रहे मेरे एक मित्र मितेश छेड़ा कहते हैं कि ***''केडर बेस शासन होने से यहाँ हर व्यक्ति को अनुभव के साथ ऊपर जाने का अवसर मिलता है।''*** उनका मानना है कि रोज़मर्रा के कामों में राजनीति का दखल न होना इस देश की तरक्क़ी का एक बेहद बड़ा कारण है। यहाँ भी पिछड़े ग़रीब और ग्रामीण इलाक़ों से भारत की तरह शहरों को पलायन होता है। बड़ा फ़र्क़ यह है कि अगर आप तय समय में रोज़गार नहीं खोज पाएँ तो आपको गाँव का रास्ता दिखा दिया जाता है। उन्हें लगता है कि अब चीन में भी शनैःशनैः समाजवाद की जगह पूँजीवाद लेता जा रहा है। मितेश पीड़ा के साथ बताते हैं कि कॉमनवेल्थ खेलों में भ्रष्टाचार की ख़बरों पर चीन के समाचार पत्रों ने भारत की बहुत खिल्ली उड़ाई। इसके बावजूद वे एक बात में भारत को अपने देश से बेहतर मानते हैं और वह है लोकतंत्र।

शंघाई में नरीमन प्वाँइट और धारावी साथ-साथ नहीं बसते... ग़रीबी की मार से भीख माँगने को मजबूर कुछ लोग ज़रूर शंघाई की **'हुआंग्पो नदी'** के तटबंद पर नज़र आते हैं। शायद जब वो रोशनी से झिलमिलाते और दुल्हन से सजे अपने शहर और दुनिया भर के डिज़ाइनर कपड़े पहने, फ़ैशन परस्ती में लगे रईसों को देखते होंगे तो कहीं पीछे छूट जाने का ग़म इन्हें ज़रूर कचोटता होगा क्योंकि शंघाई का सबसे बड़ा यथार्थ यह है कि जो मेगलेव ट्रेन की गति से अपने आपको नहीं बदल पाएगा उसे विकास की इस रेल से बाहर फ़ेंक दिया जाएगा। बुरहानपुर के शायर नदीम अख़्तर ख़ादमी साहब ने क्या ख़ूब कहा है -

तरक्क़ियों की दौड़ में उसी का दौर चल गया
बना के अपना रास्ता जो भीड़ से निकल गया।

चीन में चाय...

चीन में चाय पीने-पिलाने को लेकर ख़ास तौर-तरीक़े हैं। आमतौर पर चाय का दौर लंबा चलता है और बार-बार प्याले भरे जाते हैं। शिष्टाचार का तक़ाज़ा है कि टेबल पर जितने लोग बैठे हैं, वे सभी बारी-बारी से सबके प्याले भरेंगे। हर बार चाय परोसने वाले के प्रति आभार व्यक्त करने का

ख़ास तरीक़ा है। इसके पीछे एक जन-हितैषी राजा से जुड़ी दिलचस्प कथा है। अट्ठारहवीं सदी में चीन में क्यानलाँग नामक सम्राट हुए, जो अक्सर भेस बदलकर जनता का हाल जानने दूर-दराज़ इलाक़ों में पहुँच जाते थे। किवदंती है कि ऐसे ही एक बार वे अपने दो-चार दरबारियों को लेकर दक्षिण चीन की यात्रा पर निकल गए। यहाँ वे एक सराय में चाय पीने रूके। यदि चीनी रिवाज़ के मुताबिक उनके साथी बारी-बारी से चाय परोसते और अकेले सम्राट ऐसा नहीं करते तो वहाँ मौजूद अन्य लोगों को शक हो सकता था कि यह कोई ख़ास आदमी है। अतः सम्राट ने भी अपनी बारी आने पर दरबारियों को चाय परोस दी। दरबारी स्तब्ध थे कि देश का सम्राट भी उन्हें अपने हाथों से चाय परोस रहा है। वे सम्राट के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए साष्टांग दण्डवत करना चाहते थे। उन्होंने महाराज से ऐसा करने की अनुमति चाही। महाराज ने भेद खुलने का हवाला देकर मना कर दिया। दरबारियों ने फ़ुसफ़ुसाकर कहा कि यह हो नहीं सकता कि आप हमें चाय परोसें और हम झुककर कृतज्ञता तक प्रकट न करें। कोई तो उपाय होगा...ऐसा करने का? तब राजा ने कहा कि ठीक है तुम चाहो तो अपनी बीच वाली तीन उंगलियाँ टेबल पर हल्के से थपथपा देना। बीच वाली दो उंगली तुम्हारे सिर का प्रतीक होंगी और आसपास की दो तुम्हारे दोनों हाथों की...। इस प्रकार प्रतीकात्मक रूप से दरबारियों ने राजा के आगे दण्डवत किया। बस, तभी से चीन में चाय-पान के दौरान यह रस्म चल पड़ी, जो आज भी चल रही है।

> *मैनें सबसे ज़्यादा सिर्फ़ शंघाई के बारे में पढ़कर सीखा है।*
>
> **राल्फ़ फ़ाइन्स**

Shanghai's Pudong skyline towers over the Huangpu River

रशिया

VOKZAL
TOSHK

सिर पर लाल टोपी रूसी...
ताशकंद, उज्बेकिस्तान

यादों के पुराने पन्ने पलटते कभी-कभी पुराने दौर याद आ जाते हैं। उन दिनों स्कूली किताबों पर आज की तरह ख़ाकी रंग की ज़िल्द या कवर चढ़ाना ज़रूरी नहीं था। लोग कॉपी-पुस्तकों पर सादे काग़ज़ की ज़िल्द लगा लिया करते थे। तब चिकने काग़ज़ के लालच में दो पत्रिकाएँ अनेक घरों में नियमित नज़र आती थीं। उनका काग़ज़ एकदम बढ़िया और पत्रिकाएँ बेहद सस्ती थीं। एक का नाम था सोवियत संघ और दूसरी का सोवियत नारी। बचपन में उन पत्रिकाओं में सोवियत संघ के बारे में ख़ूब पढ़ा। सोवियत संघ या यू.एस.एस.आर. यानि भारत का एक पुराना जिगरी दोस्त! न जाने कितने मंचों, न जाने कितने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों पर दोस्ती के इस अटूट गठबंधन की मिसालें दी गईं, न जाने कितने चाचा नेहरू, राजकपूर, टॉलस्टॉय इस दोस्ती के रंग को और गाढ़ा करते हुए विदा हो गये और न जाने कितने भिलाई स्टील प्लाँट जैसे कल कारख़ाने आज भी इस मोहब्बत की यादें बनकर धड़क रहे हैं।

हर बार एक नई जगह ले जाने के लिये सतत् प्रयासरत टायर कंपनीयों ने इस बार जब उसी सोवियत संघ के एक विघटित देश **'उज़बेकिस्तान'** की यात्रा का न्यौता दिया तो उस देश के वे सारे

पुराने चित्र एक-एक कर आँखों में तैरने लगे। **'ताशकंद'** की धरा पर जब हमारा वायुयान उतरा तो मौसम बेहद ख़ुशनुमा था। ठंड बिल्कुल गुलाबी सी और तक़रीबन वैसी ही जैसी हमारे यहाँ जनवरी-फ़रवरी में होती है। एयरपोर्ट पर कस्टम चेक-इन के लिए इस देश में क़ायदे-क़ानून बेहद कड़क हैं। आपको फ़ार्म टी-6 पर अपने साथ लाए, डॉलर, जवाहरात, कैमरे, घड़ियाँ आदि सभी बहुमूल्य वस्तुओं का विवरण देना होता है। एक सीमा से अधिक भारतीय करंसी आप अपने साथ नहीं ला सकते।

हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही नज़र आने लगे चौड़े, साफ़ सुथरे रास्ते, अनुशासित ट्रेफ़िक, सलीक़े और सौम्यता से प्रस्तुत आते सुंदर, सलोने, ख़ुशमिज़ाज लोग... रोड पर चल रही पुरानी कारें, थके-थके से बाज़ार और साधारण सी इमारतें इस बात की साफ़ चुगली कर रहीं थीं कि देश की आर्थिक स्थिति बहुत बेहतर नहीं है। कमज़ोर आदमी या अविकसित देश की कई बार दूसरों के अधीन रहने में ज़्यादा भलाई रहती है। यह इस देश को देखकर ज़्यादा बेहतर तरीक़े से समझा जा सकता है। वर्ष 1966 में आए महाविनाशकारी भूकम्प में यह देश नेस्तनाबूद हो गया था। उस विपत्ति में तेरह देशों के उस मज़बूत सोवियत संघ ने देखते ही देखते इसे फिर से खड़ा कर दिया था पर आज स्वतंत्र और अलग होने के बाद इसे छोटी-छोटी समस्याओं के लिये भी मुँह बाएँ होना पड़ रहा है। बची खुची पोल उस समय और खुल गयी जब हम लोगों ने डॉलर को 'उज़्बेकिस्तान' की करंसी 'सूम' में परिवर्तन करवाया। सरकारी रेट तो एक डॉलर के बदले 1520 सूम का था। पर गाईड ने 1800 सूम दे दिये बाद में पता चला कि ग्रे मार्केट में 2200-2300 का रेट चल रहा है। एक मुश्किल यह आई कि बड़े नोट 500/- और 1000/- के ही हैं यानि आपको मुट्ठी भर सामान के लिये थैली भर करंसी ले जाना होगी।

अपने सारे जेबों और बेग में ठूँस-ठूँस कर सूम भर, चल पड़े हम अपनी होटल की ओर। होटल का नाम था 'इंटर कॉंटिनेंटल' जो **'ताशकंद'** की सबसे अच्छी और बढ़िया होटल होने के बाद भी फ़ोर स्टार ही थी। यह इस बात का उदाहरण है कि इस वर्ष चार लाख़ से अधिक विदेशी पर्यटकों के आवागमन के बावजूद भी देश में अभी पर्यटन सुविधाओं के लिये काफ़ी काम होना बाक़ी है। सोवियत संघ के तत्कालीन प्रमुख मिखाइल गोर्बाचेव की 'ग्लास्तनोस्त-उदारता' के चलते यह देश 1 सितम्बर 1991 को पुनः अपने स्वतंत्र अस्तित्व में आ गया। मात्र 19 वर्ष पुराना यह गणतंत्र शायद दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। आज़ादी के बाद इस्लाम क़रीम इस देश के पहले राष्ट्रपति चुने गये। उनकी जनप्रिय कार्यशैली ने उन्हें इतना लोकप्रिय बना रखा है कि वे अपराजेय हैं और सतत् राज़ कर रहे हैं। जिस लेनिन को इस देश मे पूजा जाता था; आज़ादी के बाद उनके साम्यवाद पर उभरी घृणा की पराकाष्ठा यहाँ तक पहुँची कि सारे देश से उनकी मूर्तियाँ हटा ली गईं।

ख़ेर, शाम को अवॉर्ड सेरेमनी और खाने के साथ रशियन बैले, जिमनास्टिक और तीर-तलवार के हैरतअंगेज नृत्यों ने आयोजन को अविस्मरणी बना दिया। अल्लसुबह गर्म जैकेट पहनकर बस से हम निकल पड़े ताशकंद से 3 घंटे के **'चिंगम हील'** के एक यादगार सफ़र के लिये। बस में गाइड बता रहा था कि विश्व के सबसे पुराने एवं बड़े राजमार्गों में से एक **'द ग्रेट सिल्क रोड'** इस देश से होकर गुज़रता है। समरकंद बुख़ारा और किवा भी इस मार्ग पर आने वाले बड़े महानगर हैं। 4.50 लाख वर्ग किमी क्षेत्रफल वाले इस देश की प्रमुख भाषा 'उज़्बेक' है। गाइड बात ही बात में कह जाता है कि भारत और उज़्बेकिस्तान में एक बड़ा फ़र्क़ यह है कि हमने गुलाम बनाने वालों के साथ-साथ उनकी रशियन भाषा से भी नफ़रत की और हम उस भाषा को बोलना और सुनना भी पसंद नहीं करते। एक आपका भारत है जो ग़ुलाम बनाने वालों की भाषा अंग्रेज़ी को बोलने और समझने वाले को मातृभाषी से भी ज़्यादा सम्मान देता है। हम रास्ते में सुंदर वादियों, नदियों, और कपास के खेतों के नज़ारों का लुत्फ़ उठाते हुए चले जा रहे थे। कपास उत्पादन के मामले में यह देश सारे विश्व में अव्वल है। खेती के लिए यहाँ के दो प्रमुख दरियाओं के पानी का बेरहमी से दोहन किया गया है। इन दरियाओं के विसर्जन से बनने वाली 60000 वर्ग किमी क्षेत्रफल की विश्व की समंदरनुमा झील **'एसल सागर'** सिमटकर मात्र दो तालाबों में परिवर्तित हो गई और उसका आकार सिर्फ़ एक चौथाई रह गया। इस नादानी को विश्व की सबसे बड़ी मानवीय भूल माना जाता है। दूर से नज़र आने लगे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और उस पर चमचमाती छोटी-छोटी बर्फ़ की टुकड़ियाँ। मौक़ा था केबल कार में बैठकर इन बर्फ़ीली उँचाइयों से दो चार होने का। शिखर पर बने पठारों पर कंपकंपा देने वाली ठंडी हवा के झोंकों के साथ घुड़सवारी का मज़ा ही कुछ और था। बारिश की हल्की फुहारों से अपने कैमरे को बचाते हुए चल पड़ा फोटोग्राफ़ी का दौर। सुंदर पहाड़ी फूलों और बीच-बीच में कालीन की तरह बिछी बर्फ़ की इस अलौकिक ताज़गी और स्फूर्ति को जितना भी समेट सकते थे अपनी झोली में इकट्ठा कर चल पड़े वापसी की ओर। दिन चढ़ने लगा और लगे पेट में चूहे कूदने। आज के दोपहर भोज के लिए जिस जगह को चुना गया था वह था एक बड़ी सुंदर झील के किनारे बसा एक पिरामिडनुमा होटल। सुदूर 'उज़्बेकिस्तान' में 'ताशकंद' से इतनी दूर इस घने जंगल में मनपसंद भारतीय लज़ीज़ खाना, वाह! इसे ही तो कहते हैं उड़ के लगी।

अब बारी थी राजधानी के सिटी टूर की। शहर के मध्य बना **'इन्डीपेंडेंस स्कवेअर'** वाक़ई एक अद्‌भुत जगह है। यहाँ पर लगे फ़व्वारे, शानदार बाग़ और सुंदर वास्तुशिल्प आपकी शाम को ख़ुशनुमा बनाने के लिये काफ़ी हैं। **'पार्लियामेंट हाउस'** के समीप मदर ऑफ नेशन की सुंदर मूर्ति लगी हुई है। समीप बनी विशाल पृथ्वी पर उकेरा हुआ 'उज़्बेकिस्तान' देखते ही बनता है। पास की चौड़ी सड़कों पर नई-पुरानी हज़ारों तस्वीरों का मानो एक हाट बाज़ार लगा है।

बस आपके हाँ बोलने की देर है कि यहाँ के कुशल चितेरे चंद मिनटों में आपका हू-ब-हू स्केच आपको भेंट कर आश्चर्यचकित कर देंगे।

अगले दिन सुबह के 4 ही बजे थे कि वेकअप कॉल आ गया कि ठीक 6 बजे सबको होटल छोड़ देना है। रेगिस्तान एक्सप्रेस ट्रेन से **'समरकंद'** जाने के लिये। इस पिछड़े देश का रेल्वे स्टेशन साफ़ सफ़ाई, अनुशासन, समयबद्धता, क्वाालिटी, सभी मामलों में हमारे भारत से मीलों आगे हैं। रेगिस्तान एक्सप्रेस के भी वाह ! क्या कहने। राजस्थान की पैलेस ऑन व्हील ट्रेन से भी एक क़दम आगे। हर डिब्बे के बाहर मुस्तेदी से तैनात थी एक सुंदर सुसज्जित परिचालिका और एक लंबा पूरा सेवाभावी परिचालक। वातानुकूलित कोच के अंदर 8-8 सीट के बने शानदार केबिन। शीतल पेय और ठंडे पानी की बोतलें। आरामदायक सीटें और वॉल टू वॉल कालीन। सफ़ाई बनाए रखने के लिये यहाँ की ट्रेनों का प्रसाधन कक्ष ट्रेन के स्टेशन से रवाना होने के बाद ही खुलता है और स्टेशन आने से पूर्व चेतावनी देने के बाद बंद हो जाता है। यह सुपर फ़ास्ट नॉन स्टॉप ट्रेन हवाओं से बातें करती है। 3 घंटे की गपशप और बाहर के सुंदर नज़ारे निहारते हम आ पहुँचे बहादुर और जाँबाज़ शहंशाह तेमूरलंग की राजधानी 'समरकंद'।

तैमूरलंग वह अद्भूत शख़्सियत है जिसने तेरहवीं शताब्दी के अंत में रूस से लेकर अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान से लेकर हिन्दुस्तान तक समूचे एशिया पर अपनी विजय पताका फ़हराई। लंग यानि की लंगड़ा। जी हाँ यही सबसे बड़ी बात है कि इस जाँबाज़ ने दुनिया के साथ ही साथ अपनी विकलांगता, को भी पछाड़ा। क्या ख़ूब कहता है शायर-

मंज़िलें मिलती हैं जिनके सपनों में जान होती है
पंख होने से कुछ नहीं होता हौंसलो से उड़ान होती है।

समरकंद का एक-एक पत्थर मानो तैमूरलंग की क़ाबिलियत, हौसले और सबसे बढ़कर उसके युद्ध प्रबंधन की गौरवगाथा गाता नज़र आता है। गाइड बताते हैं कि तैमूरलंग अपनी सेना में सिर्फ़ प्रशिक्षित सैनिकों को ही नहीं बल्कि देश के आम लोगों, दुकानदारों और किसानों को भी साथ लेकर चलता था। उसने उन्हें पगार के साथ-साथ देशों का जीतने पर मिली धन संपदा में भी हिस्सेदार बनाया था। समरकंद में अनेक इमारतें उस दौर के गौरवशाली अतीत की गवाही देने के लिये इठलाती खड़ी नज़र आती हैं। सनद रहे यह शहर एशिया के एक बड़े भाग की राजधानी था। तैमूरलंग की मज़ार वंदनीय और दर्शनीय भी है। यहाँ के हाट-बाज़ार उज़बेकिस्तान की अर्थव्यवस्था और व्यापार से रूबरू कराते हैं। दुकानें सुंदर क़सीदाकारी की हुई चादरों, स्कार्फ़, कालीन और कपड़ों से पटी पड़ी हैं। यहाँ के मेवे विश्वस्तरीय क्वॉालिटी के तो हैं ही और सस्ते भी हैं। सुंदर मदरसों को बाद में कम्युनिज़्म ने बाज़ारों में तब्दील कर दिया। कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफ़ीम क़रार दिया था। मार्क्सवाद का गहरा असर आज भी इतना है कि 90 प्रतिशत सुन्नी मुसलमानों के इस देश में कहीं भी दाढ़ी, बुरक़ा या धार्मिक

क ट् ट र ता न.ज र न हीं आ ती ।

चौथा दिन यानि की वापसी। सुबह से चाक-चौबंद होकर हम चल पड़े वापस सिटी टूर के लिये। सबसे पहले भारत के उस लाड़ले प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के स्मारक को देखने जहाँ उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति के साथ उस ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किये थे जो कि उनके जीवन का अंतिम दस्तावेज़ साबित हुआ। यहीं पर वह भवन है जहाँ उनका दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। ठीक सामने उनकी एक सुंदर प्रतिमा लगी है। यहाँ की सरकार ने उनके सम्मान में इस मार्ग का नाम भी लाल बहादुर शास्त्री मार्ग रखा है। ताशकंद के बाज़ार में भी खरीदारी के लिये कुछ ख़ास नहीं है पर हमें तो हमारे पास बच गये सूम (यहाँ की करंसी) को ख़त्म करना था। कारण इस देश की मुद्रा की हालत इतनी ख़राब थी कि अगर आपके पास कुछ बच जाए तो उसकी वापसी मुमकिन नहीं। चौरसू बाज़ार की सैर कर चल पड़े हम एयरपोर्ट की ओर अपने वतन के लिये।

'उज़बेकिस्तान' एक ऐसा देश जिसे हम सही मायनों में हमारा सबसे पुराना और सबसे अच्छा दोस्त कह सकते हैं। कम से कम मुझे भारत और भारतीयों को चाहने वाले इससे बेहतर लोग दुनिया में कहीं नहीं मिले। हमारे ख़ासम-ख़ास मित्र श्रीलंका और मॉरीशस में भी नहीं। हम भारतीयों को देखकर यहाँ के लोगों के चेहरे पर पुराने यार से मिलने वाली ख़ुशी छा जाती है। अनेकों लोग और बच्चे भी आपको देखकर प्यार से 'नमस्ते' कहते हैं। राज कपूर और उनकी फ़िल्में यहाँ के बाशिंदों के दिलो-दिमाग़ में आज भी जवान हैं। सीरत और सूरत दोनों से सुंदर लोगों के इस देश को पर्यटन के लिए अभी-अभी ही खोला गया है। शायद इसीलिये दुनिया या भारतीय पर्यटकों की कोई बड़ी भीड़ यहाँ अभी पहुँची नहीं है। ताशकंद भारत के एकदम पास, दिल्ली से मात्र 3 घंटे की हवाई दूरी पर स्थित है। अगर आप एक ऐसे देश की सैर करना चाहते हैं जहाँ प्रकृति भी हो और इतिहास भी; जहाँ बर्फ़ भी हो और रेगिस्तान भी, जो सुंदर भी हो और किफ़ायती भी; नज़दीक भी हो और भिन्न भी, तो शायद उज़बेकिस्तान इसके लिये सबसे बेहतर विकल्प होगा... आत्मीय शांति, अलौकिक आनंद के साथ ही साथ यहाँ की यात्रा आपको वह सुकून देती है जो बचपन के किसी लंगोटिया दोस्त से गले मिलने पर मिलती है...

कुछ सितारों की चमक नहीं जाती
कुछ यादों की कसक नहीं जाती

समाज को समझने के लिए बाइबल के पन्नों को पलटाने से अच्छा है आप यात्रा पर निकल जाइये।

नेपोलियन बोनापार्ट

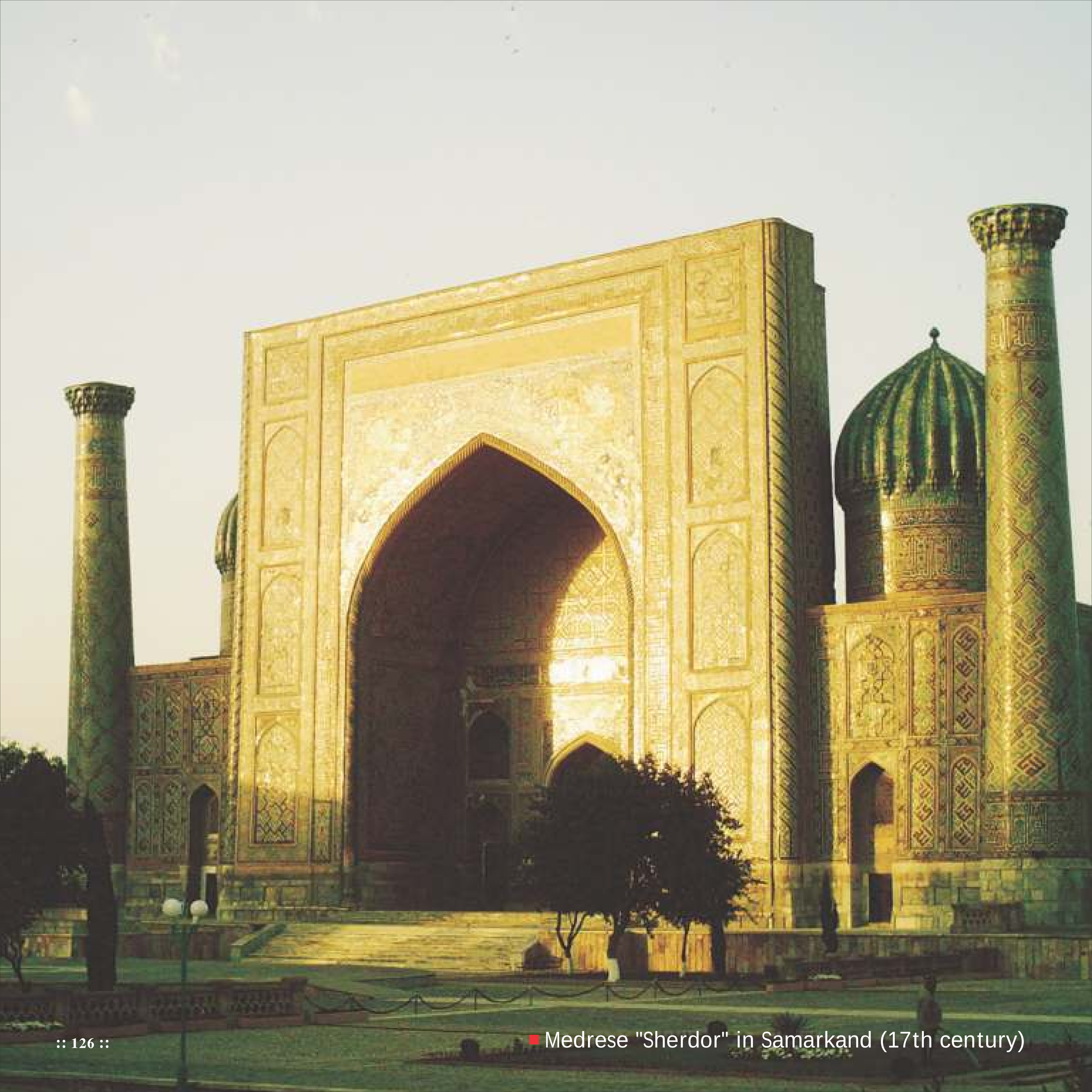

Medrese "Sherdor" in Samarkand (17th century)

दुबई

B 2068

कमर्शियल केपिटल ऑफ एशिया
दुबई

एक सेब में कितने बीज हैं यह तो कोई भी गिन सकता है पर एक बीज से कितने सेब बन सकते हैं क्या कोई बता सकता है? नहीं... बीज को ज़रूरत होती है सिर्फ़ अनूकूल माहौल की... कमोबेश हम भारतीयों पर भी यही बात लागू होती है। ज़रूरी साधन और बेहतर अवसर मिलें तो भारतीय हाथों में वह ताक़त है कि वह पत्थर में से पानी निकाल सकते हैं; रेगिस्तान में बाग़ उगा सकते हैं। आसमान से बातें कर सकते हैं तो समुद्र को चीरकर निर्माण भी कर सकते हैं। इसकी बानगी अगर देखना हो तो चलिये दुबई...। देखिये कैसे भारतीय कर्मवीरों ने रेत के एक टीले को दुनिया के नायाब शहर में तब्दील कर दिया है। पूरे देश में चाहे वो आर्किटेक्ट हो या फिर होटल का बैरा, शॉपिंग स्टोर्स का मालिक हो या फिर टैक्सी चलाने वाला, हर जगह आपको भारतीयों का बोलबाला नज़र आएगा। पाँवों में चकरी, हाथो में काम, ज़ुबान पर शकर और दिमाग़ पर बर्फ़... भारतीयों के इस बहुआयामी व्यक्तित्व की क़द्र की अरब के शेख़ों ने और हिन्दुस्तानियों की मदद से निकल पड़े अपने सपने साकार करने... दुबई में भारतीयों का दबदबा इस क़दर है कि आज वहाँ के दस सबसे बड़े सेवा प्रदाताओं में से सात भारतीय हैं। चाहे डेज़र्ट सफ़ारी हो या फिर गोल्ड सुख बाज़ार। बिना भारतीयों के यहाँ का पत्ता तक नहीं हिलता।

फ़ारस की खाड़ी के दक्षिण में एक प्रायः द्वीप पर स्थित **'यूनाईटेड अरब ऑफ़ अमीरात'** यानि की यू.ए.ई., सात देशों का एक समूह है । इन देशों में से एक है कोहिनूर का हीरा; दुबई। आश्चर्य की बात है कि इसमें अरब शेख़ सिर्फ़ साढ़े सोलह प्रतिशत हैं, शेष सारे लोग बाहर से आए हुए हैं। अधिकांश साउथ एशिया से । इनमें बयालीस प्रतिशत भारतीय, तेरह प्रतिशत पाकिस्तानी, आठ प्रतिशत बांग्लादेशी एवं शेष अन्य देशों से हैं। कुबेर यहाँ धन किस तरह बरसाता है इसका अंदाज़ा इसी बात से ही लगाया जा सकता है कि यहाँ की प्रति व्यक्ति औसत सालाना आय बीस लाख रूपये है।

दुबई का पहला उल्लेख सन् 1095 मे दर्ज़ है। वेनीस के मोती व्यापारी गस्पेरो बल्बी ने इस इलाक़े का दौरा किया था। दुबई की ईरान से भौगोलिक निकटता ने इसे महत्वपूर्ण स्थान बनाया । ईरानी एवं विदेशी व्यापारियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था। दुबई तीस के दशक में अपने मोती निर्यात के लिए जाना जाता था । प्रथम विश्वयुद्ध में यह उद्योग क्षतिग्रस्त हो गया और बाद में तो चौपट ही हो गया । दुबई के अमीर ने विदेशी व्यापारियों को आकर्षित करने के लिए व्यापार कर को कम कर दिया। इस आकर्षण ने व्यापारियों को शारजाह और बंदर लेगेंह से खींच लिया जो उस समय इस क्षेत्र के मुख्य व्यापार केन्द्र थे। सन् 1833 से यहाँ अल माकतौम वंश का राज है। वर्तमान सुल्तान शेख़ मोहम्मद अल मकतूम सयुंक्त अरब अमीरात के प्रधानमंत्री एवं उपराष्ट्रपति भी हैं।

दुनिया की इस भीड़ में चंद लोग ही होते हैं जो कि योग्य भी होते हैं और महत्वकांक्षी भी। जिनकी आँखे भी बड़ी होती हैं और सपने भी। यही वे लोग होते हैं जिनका एहसान होता है ख़ुद पर और अपने समाज राष्ट्र पर भी। दुबई के राजकुमार शेख़ मोहम्मद बिन राशिद को निर्माण का जुनून पागलपन की हद तक सवार रहता है। उन्होंने ठाना कि मैं कुछ एक ऐसा कर गुज़रूँ जो कि विश्व में सर्वोच्च हो। इसके पीछे उनकी दूरदृष्टि इस देश को व्यापार के साथ ही साथ पर्यटन का केन्द्र बिंदु बनाने की थी। इसी सपने को पंख लगाते हुए उन्होंने **'बुर्ज़ दुबई'** की नींव रखी। 828 मीटर और 163 मंज़िलों वाली इस बला की ख़ूबसूरत इमारत में 900 अपार्टमेंट है। 1.5 बिलीयन यू.एस. डॉलर की लागत से बनी इस गगनचुंबी इमारत की क़ीमत अगर हम रुपयों में निकालने जाएँगे तो केलक्युलेटर में से धुँआ ही निकल जाएगा। विश्व में सबसे तेज़ लिफ़्ट पर्यटकों को 102 मंज़िल की ऊँचाई तक ले जाती है। यहाँ से घूमते हूए सारे दुबई का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह विश्व की सबसे ऊँची इमारत तो है ही साथ ही यह सबसे अधिक मंज़िलों को भी समेटे है और यहाँ विश्व की सबसे ऊँची मस्ज़िद, स्वीमिंग पूल, नाइट क्लब भी हैं। चार सौ बयालीस मीटर की ऊँचाई पर बना यहाँ का रेस्तराँ अब आम जनता के लिये खोल दिया गया है। यह बिल्डिंग की एक सौ बावीसवी मंज़िल पर स्थित है। एमटास्फ़ायर नाम के इस रेस्तराँ का आनंद लेने के लिये जेब कितनी ढीली करनी पड़ेगी लगे हाथ यह भी जान लीजिए।

चाय चार हज़ार पाँच सौ रूपये और खाना आठ हज़ार रूपये। 'बुर्ज़ ख़लीफ़ा' से बाहर एक और नायाब चीज़ बनी है जिसका नाम है **'दुबई फ़ाउंटेन'**। 6600 लाइट्स और 50 रंगों की मदद और 217 मिलीयन डालर की लागत से बना यह फ़व्वारा जब 900 फीट की ऊँचाई तक अपना कमाल दिखाता है तो आँखें ठंडी हो जाती हैं।

संघर्ष के समय हम कल्पना करते हैं कि सफ़ल होते ही कोई दुःख नहीं होगा। परंतु सफलता अपने साथ नये नियम लेकर आती है। सफलता बहुत महँगी होती है और उसकी क़ीमत चुकानी ही पड़ती है.....

बुलंदी देर तक किस शख़्स के हिस्से में रहती है
बड़ी ऊँची इमारत हर घड़ी ख़तरे में रहती है

बुर्ज़ ख़लीफ़ा के बनते-बनते वैश्विक मंदी के दौरान दुबई भी ऐसा मंदा हुआ कि इसके उद्घाटन के दिन तक इसके 900 में से 825 अपार्टमेंट ख़ाली रह गये। आख़िर दोस्त ही दोस्त के काम आता है। अवसाद से असहाय इस बिल्डिंग को यू.ए.ई. के अध्यक्ष ख़लीफ़ा बिन जाएद ने सहारा दिया और उन्हीं के सम्मान में इसका नाम बुर्ज़ दुबई से 'बुर्ज़ ख़लीफ़ा' कर दिया गया। भारतीयों का रसूख एक बार फिर इस बिल्डिंग में देखने में आता है जिसके ढेर सारे कमरे भारतीय रईसों और फ़िल्मी सितारों के नाम पर लिखे हैं। कहते हैं तेज़ी का बोलबाला मंदी का मुँह काला... मंदी की मार आपको बाज़ार भ्रमण में भी नज़र आएगी।

जगह-जगह टू-लेट के बोर्ड लगे हैं और समुद्र में साकार हो रहा ड्रीम प्रोजेक्ट **'पाम ट्री'** भी लड़खड़ता नज़र आ रहा है।

The Burj Khalifa

चौंतरफ़ा सिवाए रेत के कुछ नज़र नहीं आ रहा था। साथ ही रेतीली आंधियाँ और सायं-सायं की आवाज़। बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभालती एक गाड़ी सीधे खड़ी चढ़ाई चढ़कर पहाड़ की नुकीली चोटी पर पहुँच जाती है... तभी एकाएक चोटी को पार करने की कोशिश में वह गाड़ी बीच में रेत पर टिक जाती है... उस फ़ोर व्हील ड्राइव **लैंड क्रूज़र** के चारो पहिये हवा में हो जाते हैं। एक्सिलेटर पर एक्सिलेटर, गिअर पर गिअर लेकिन सिवाय तेज़ आवाज़ के कुछ भी नहीं। ड्रायवर की कोशिशें जवाब देने लगती हैं पर हौंसले फिर भी बुलंद। तभी दूर से दूसरी गाड़ी वाले की नज़र इस गाड़ी पर पड़ती है और वह मददगार बनकर सामने आ जाता है। एक टोचन लगाई और अपने हुनर से इसे खींचकर कर उसने मुसीबत से बाहर कर दिया...पर यह क्या रेत पर दोनों गाड़ियाँ नीचे खाई में फिसलने लगी हैं। अब बारी है ड्रायविंग के कमाल की। फ़िसलती गाड़ियों को अपनी-अपनी हिक़मत से दौड़ाकर ले आते हैं वे सीधी-सपाट जगह पर। वाक़या सुनकर ही कलेजा मुँह को आ जाता है और जब आप ख़ुद ही उस लैंड क्रूज़र के अंदर बैठे हों तो फिर एडवेंचर के क्या कहने ! जीवन के इसी रोमांच को जीने का नाम है डेज़र्ट सफ़ारी। दुबई से लगभग 1 घंटे की दूरी पर इस रेगिस्तान का यह एक विलक्षण अनुभव है। रेगिस्तान के दो-दो हाथ करते लैंड क्रूज़र के इन जाँबाज़ चालकों की ड्राइविंग कमांड पर दी जाने वाली हर दाद कम है...

इस जोराजोरी से दो-दो हाथ कर लेने के बाद हमारा काफ़िला चल पड़ा है रेगिस्तान में ही बने एक कबीलेनुमा पड़ाव पर। रेगिस्तान में अपनी लालिमा बिखेरता सूरज जैसे ही अपने विश्रामगृह में जाता है, एक नए आगाज़ के

साथ चाँद निकल आता है। चंद्रमा की किरणों को हरा देने की ज़ुर्रत लिए संगीत की स्वर लहरियाँ माहौल में मादकता घोल देती हैं। अरेबिक संगीत यानि कि एक ऐसी शराब जो कानों से पिलायी जाती है। इसके बाद शुरू होता है **बैले नृत्य** का निर्बाध सिलसिला... देर रात तक चलने वाले इस जादू का अंत होता है इस सुदूर रेगिस्तान में आपके लिये उपलब्ध करवाए गये लाजवाब भारतीय खाने के साथ। एक और ख़ुशी की बात यह है कि डेज़र्ट सफ़ारी के इतने बड़े तामझाम की व्यवस्था जमाने वाला सबसे बड़ा ग्रुप लाम्बा ट्रेवल्स भी एक भारतीय का ही है। हमारे लिये विशेष तौर पर मिलने आए इसके मालिक बातों ही बातों में बताते हैं कि मेरी लम्बे समय से इच्छा थी कि यह सब अपने वतन में भी करूँ। भगवान ने मेरी सुन ली और हमने जैसलमेर में इसकी शुरूआत कर दी है।

रेगिस्तान की चमचमाती धूप में जहाँ सिवाय झुलसने के कुछ और नज़र नहीं आता है बर्फ़ की बात करना बेमानी ही है...पर रेगिस्तान में स्विट्ज़रलैंड बना देना भी मानव के अदम्य साहस का एक उदाहरण है। दुबई में 22800 स्क्वेयर मीटर क्षेत्रफल और 85 मीटर ऊँचा **''स्की दुबई''** अपने आप में एक आश्चर्य है। चारों तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़ और पहाड़। केबलकार, स्किइंग, झूले इसे मनोरंजक बना देते हैं। आकार इतना विशाल कि एक बार में इसमें 1500 लोग आ सकते हैं। शून्य से नीचे तापमान कंपकंपी और मज़ा दोनों एक साथ ला देता है।

अगर आपकी जेब और जिगर दोनों मज़बूत हों तो दुबई के बाज़ारों में दुनिया की हर चीज़ उपलब्ध है। इलेक्ट्रॉनिक टी.वी., लेपटॉप यहाँ से लाने पर वाक़ई सस्ते पड़ते हैं। **गोल्ड सुख बाज़ार** से सोने की ख़रीददारी का अपना अलग सुख है। हालाँकि ग्लोबलाइज़ेशन के बाद अब भारत और यहाँ की सोने की क़ीमतों में कोई विशेष फ़र्क़ नहीं बचा है पर ज्वैलरी में ऐसी नायाब डिज़ाइन्स आपको दुबई के बाज़ारों में ही देखने को मिलेगी। कहना है ***'क्या लें और क्या छोड़ें'*** समृद्धि यहाँ के बाजारों में पानी भरती नज़र आती है। एक से एक ख़ूबसूरत आलीशान शॉपिंग मॉल्स। उनके बाहर खड़ी दुनिया की बेशक़ीमती कारें। दुकानों के अंदर एकदूसरे से होड़ करते दुनिया के बेहतरीन ब्रान्डस और कुबेर को ख़ज़ाना लुटाते लोग। जनवरी महीने में होने वाले दुबई फ़ेस्टीवल में तो इन बाज़ारों पर लक्ष्मी जी अपने सारे हाथों से धन बरसाती हैं।

तूफ़ानों से हाथ मिलाओ, सैलाबों पर वार करो, मल्लाहों के चक्कर छोड़ो तैरकर दरिया पार करो... दुबई एक ऐसा देश जिसके पास न तो खेती है न खनिज न ही जंगल हैं और न ही बाग़ बग़ीचे। इनकी अस्सी अरब अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था मे तेल का योगदान भी सिर्फ़ छह प्रतिशत ही है। फिर क्या बात है कि यह शहर दुनिया के नक्शे पर धूमकेतू की तरह चमकता है। वह है यहाँ के लोगों का हौंसला और ललक। इन्होंने सपने देखे और उसे अपनी समझ से साकार किया। प्रबंधन और लोगों की मदद से। इन्होंने दुनिया के लोगों को तनाव और कर मुक्त एक ऐसा मुक़ाम दिया जहाँ बैठकर वह सारी दुनिया में व्यापार कर सके। इन्होंने बेहतर सुविधाओं के साथ बेहतरीन माहौल दिया। चाहे दुनिया के किसी दूसरे देश से आयात करना हो या किसी दूसरे देश को निर्यात, कंपनियाँ दुबई के ऑफ़िस में बैठकर इस काम को ज़्यादा सुविधाजनक अंजाम दे पाती हैं। आज दुबई को कोई मिडिल ईस्ट का पेरिस कहता है तो कोई ग्लोबल सिटी। किसी की नज़र में यह एक अलहदा बिज़नेस सेंटर है तो किसी के लिए 'ए ब्युटीफुल ट्रेवल डेस्टीनेशन'... और शायद इसीलिए हिम्मतें मर्दा-मददे खुदा... की तर्ज़ पर सारी मुसीबतों से पार इसीलिये निकलकर आज भी दुबई खड़ा है अपनी पूरी आन, बान और शान से... एशिया की व्यवसायिक राजधानी के रूप में।

एक दिन में अट्ठारह हज़ार...

भारत और दुबई में परस्पर यातायात कितना घना है इसे समझने के लिये आईये आँकड़ों पर एक नज़र डालें। भारतीय विमानतलों से किसी भी दूसरे देश में आने-जाने वालों की गिनती में दुबई पहले स्थान पर है। दूसरे स्थान पर आने वाले ब्रिटेन का आँकड़ा इसके आधे से भी कम है। वर्ष 2010 की ग्रीष्म तिमाही के आँकड़ों पर ग़ौर करें तो दुबई 7.87 लाख़ (18,000 प्रतिदिन), ब्रिटेन 2.62 लाख़, सउदी अरेबिया 2.60 लाख़, थाइलैंड 2.30 लाख़। यात्रियों द्वारा फ़्लाइट कंपनियों की पसंद को देखें तो तीनों भारतीय कंपनियों को मिलाकर कुल 8.71 लाख लोगों ने पसंद किया है तो एमेरेटस को 5.48 लाख़ लोगों ने सराहा है। ख़राब सेवाओं के बाद भी भारतीय विमान कंपनियों को पंसद किए जाने के पीछे एक बड़ा कारण भारतीयों का भोजन प्रेम है। आम भारतीय बाक़ी सारी बातों में तो विदेशी चीज़ों का दीवाना है पर भोजन के मामले में उसकी पसंद और सोच एकदम स्वदेशी है।

■ The Trump International Hotel & Tower

चंद झलकियाँ...

- साठ के दशक में यहाँ की ज़मीन में तेल की खोज की गई थी, तभी से यहाँ ज़मीन को अदब देने के लिए उस पर कोई भी थूकता या गंदगी नहीं करता है। काश भारत की ज़मीन में से भी तेल निकल जाए।
- दुबई में बेवजह हार्न बजाना आगे चल रहे चालक को गाली देने के समान लगता है।
- कहा जाता है दुबई में नौकरी मिलना आसान है लेकिन ड्रायविंग लाइसेंस नहीं। यहाँ हर तीन साल में लाइसेंस रिन्यू करवाना पड़ता है। पहली बार लाइसेंस लेने मे बहुत से टेस्ट और शुल्क देना होते हैं। यदि आप गाड़ी ख़रीदने जा रहे हैं तो लाइसेंस होना बेहद ज़रूरी है। बिना लाइसेंस के शोरूम मैनेजर गाड़ी का टेस्ट ड्राइव भी नहीं देता।
- दुबई में बाज़ारों को छोड़ दें तो मुख्य मार्गों पर पैदल यात्री इक्का-दुक्का ही दिखाई देते हैं। बावजूद इसके उनके लिए ट्रैफ़िक नियमों मे काफ़ी आसानी है। हर ज़ेब्रा क्रॉसिंग से पहले एक स्विच लगा है जिसे दबाकर मुख्य मार्ग के ट्रैफिक को रोका जा सकता है। रोड क्रॉस करने के बाद स्विच दबाकर उस मार्ग पर ग्रीन सिग्नल पुनः ऑन किया जा सकता है।

- दुबई में गर्मी काफ़ी पड़ती है। सितंबर-अक्टूबर में यहाँ का तापमान 38 से 42 डिग्री तक चला गया था। यहाँ प्रत्येक इमारत, कार, बस में एयरकंडीशनर होता है। यहाँ तक कि सड़कों पर बने बस स्टॉप भी एयरकंडीशंड होते हैं।
- किसी मॉल में जाएँ या फिर रेस्तराँ में, पानी हर जगह ख़रीदना पड़ता है। सभी जगह पानी का अलग-अलग मूल्य है। कई जगह आधा लीटर पानी के 200 रूपए तक चुकाने पड़ते हैं। यहाँ कोल्ड्रिंक पानी से ज़्यादा सस्ती पड़ती है।
- यहाँ पेट्रोल गैलन से मिलता है। भारतीय रूपए अनुसार करीब 15 रूपये लीटर।
- यहाँ पुरूष के लिए 'शेख़' और महिला के लिए 'शेख़ा' का उपयोग नाम के पहले किया जाता है।
- यहाँ की सड़कों पर केवल कार ही दिखती है। गिने-चुने बाइक सवार या तो पेपर बाँटने वाले हॉकर होते हैं या फ़ूड डिलीवर करने वाले।
- हम भारत में अपने घरों में 'फ्री स्टाइल' में रहते हैं जबकि दुबई में बालकनी में कपड़े सुखाने पर नगर-निगम चालान बना जाता है।
- अरबी में दुबई शब्द का मतलब ''रेगना'' और ''टिड्डी'' होता है।
- दुबई में इंटरनेट पर काम करते समय एक प्रॉक्सी सर्वर उसे छानता है। ऐसी बातें जिन्हें देश के मूल्यों के साथ असंगत समझा जाता है प्रतिबंधित हैं।

> *अब दुबई सिर्फ़ बुर्ज़ ख़लीफ़ा के आसपास घूमता है।*
>
> **गल्फ़ न्यूज**

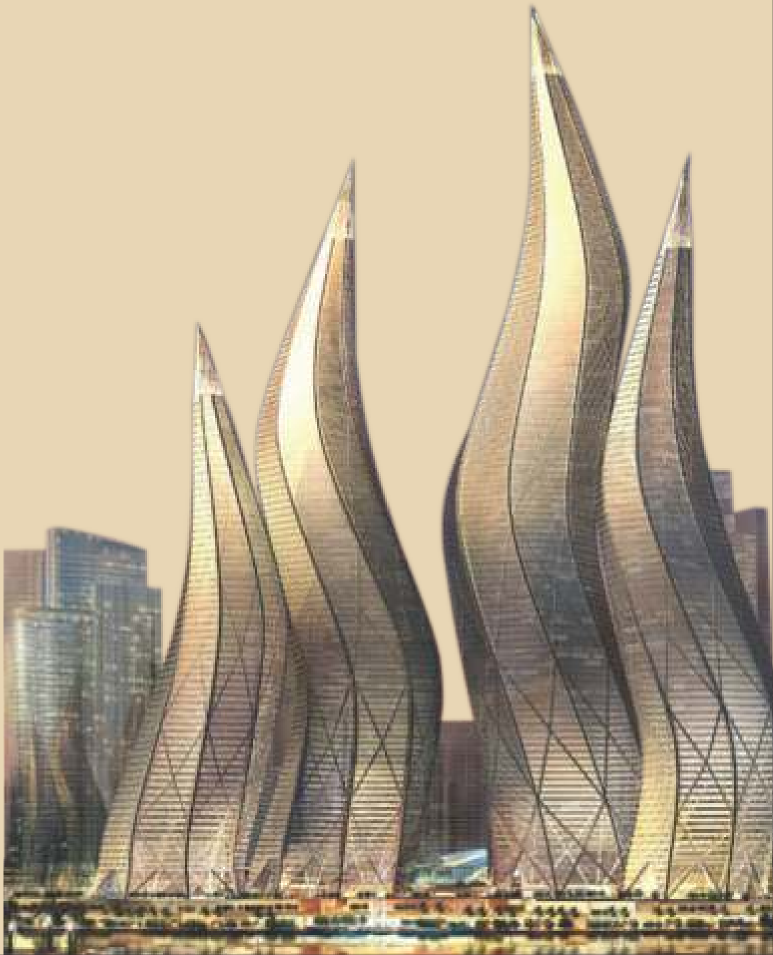

Grotesque Tower

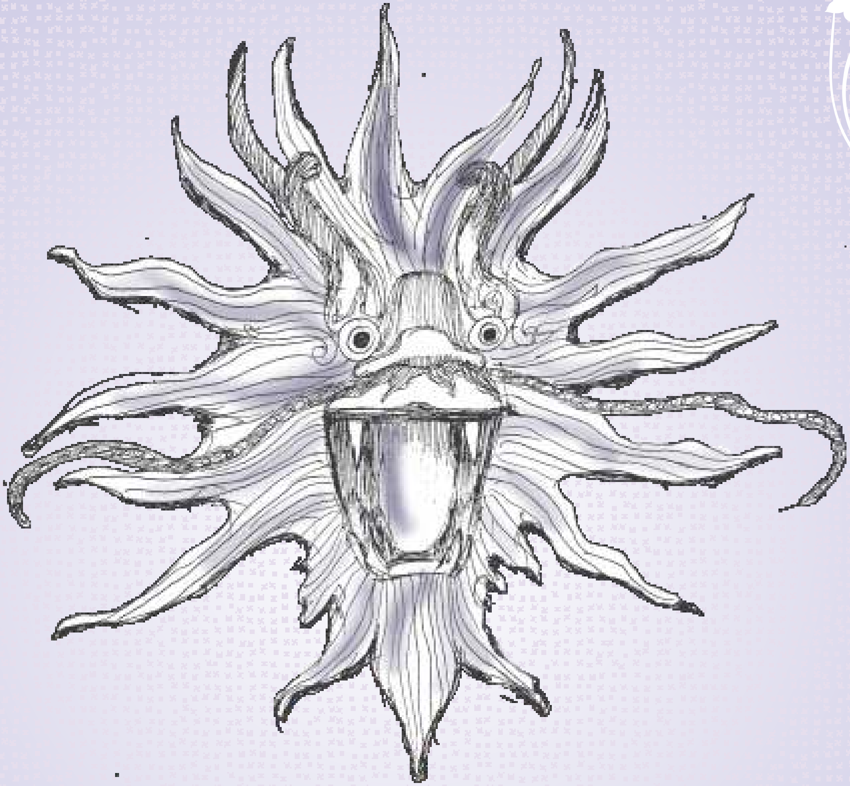

मलेशिया

ट्रूली एशिया...
मलेशिया

बात है सन् 1964 की... एक चीनी व्यवसायी अपने कामकाज के सिलसिले में मलेशिया आया था। तेन श्री लिम गोह टोंग नाम का यह व्यवसायी स्वभाव से घुमक्कड़ भी था। एक दिन यह परदेसी मलेशिया में भटकते-भटकते प्रकृति की ऐसी गोद में पहुँच गया जहाँ के नज़ारों ने उसे दीवाना कर दिया। पहाड़ों से बातें करते आवारा बादल, हरी-भरी सुरम्य वादियाँ, पेड़ों से टकराकर मीठी धुन बजाती शीतल हवाएँ और इन सबसे बढ़कर दुनिया के कोलाहल से दूर अलौकिक शाँति। यहाँ उसे धरती का स्वर्ग नज़र आया। उसने मलेशिया शासन को सुझाव दिया कि क़ुदरत के इस अनोखे तोहफ़े को तराशा जाए। इस स्थान पर एक बेहतरीन पर्यटक स्थल बनाया जाए। मेरा दावा है कि एक दिन पूरी दुनिया के पर्यटक यहाँ खिंचे चले आएँगे। उसकी इस खोज को सरकार ने हाथों-हाथ लिया और इस सपने को साकार करने की ज़िम्मेदारी भी उसे ही सौंप दी।

लिंग गोई टोंग की मेहनत रंग लाई और 31 मार्च 1969 में मलेशिया के प्रथम प्रधानमंत्री वाय.टी.एम. अब्दुल रहमान ने 'जेंटिंग हाइलैंड' नाम के इस अजूबे का फीता काट दिया। आज यहाँ थ्री, फ़ाइव और सेवन स्टार होटलों का एक विशाल समूह है।

इनमें से एक फ़र्स्ट वर्ल्ड होटल में तो 6100 कमरे हैं और इसे गिनीस बुक में दुनिया की सबसे बड़ी होटल का दर्ज़ा प्राप्त है। समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह पहाड़ साल भर बादलों से घिरा रहता है। बरसात की फुहारें इसे लगभग प्रति दिन नहलाती हैं। प्रकृति इन पहाड़ों पर दोनों हाथों से मेहरबान है। आप पूछिये तो सही कि यहाँ दुनिया का कौन सा मनोरजंन नहीं है। केसिनो, डिस्को, थियेटर, फ़िल्में, वॉटर पार्क, इनडोर थीम पार्क, आउटडोर थीम पार्क और वह हर आनंद जिससे दुनिया में दिल ख़ुश होता है। खाने-पीने के शौकीनों के लिए यहाँ दुनिया भर के स्वाद को समेटे ढेरों रेस्टॉरेंट हैं। वैसे तो यहाँ सीधे सड़क मार्ग द्वारा भी पहुँचा जा सकता है पर कुछ हिस्सा केबल कार से जाया जाए तो उसका अपना आनंद है। 3.8 कि.मी. लंबा यह केबल मार्ग मात्र 11 मिनिट में पूरा हो जाता है, क्योंकि यह स्कायवे विश्व में सबसे तेज़ है। इसके पूरे मार्ग में विभिन्न प्रकार के पुतले बनाये गये हैं जो देखने में असली को पराजित कर देते हैं। रातें तो यहाँ कंपकंपा देती हैं पर दिन में भी तापमान 14° से 25° तक रहता है।

मलेशिया को दो भागों में बाँटा जा सकता है। ईस्ट और वेस्ट मलेशिया। जब अंग्रेज़ों ने विश्व विजय के लिये अपना अश्वमेघ घोड़ा दौड़ाया तो उसकी चपेट में वेस्ट मलेशिया भी आ गया। उन्हीं के अधिपत्य के समय यहाँ पर भारतीयों एवं चाइनीज़ का भी आना हुआ। इस दौरान यहाँ रबर और टिन का कारोबार चल निकला। 31 अगस्त 1957 को अग्रेंज़ो को मलेशिया छोड़ना पड़ा। उसके बाद 26 प्रतिशत चाइनीज़ और 50 प्रतिशत यहाँ के मूल निवासी मलय लोगों के बीच के हल्के, फुल्के विवादों को छोड़ दें तो देश लगभग शांति के साथ विकास की द्रुत गति से दौड़ने लगा। भारतीयों का मलेशिया के विकास में गहरा दख़ल है और आज यहाँ की जनसंख्या में 8 प्रतिशत भारतीय हैं। नजीब तुन रज़ाक वर्तमान में प्रधानमंत्री हैं। संघीय संसदीय लोकतंत्र वाले इस देश के तीन लाख़ वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल के की जनसंख्या 2.75 करोड़ है।

जेंटिंग हाइलैंड और क्वालालम्पुर के मार्ग में बनी **'बाटू की गुफ़ाएँ'** मलेशिया में हिन्दू धर्म की पताका फहरा रहीं हैं। इन गुफ़ाओं में अन्य मूर्तियों और मंदिरों के साथ ही हनुमान जी की विशाल प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र है। इस छोटी पहाड़ी पर सीढ़ियों से चढ़कर जाना होता है। तलहटी में भारतीय व्यंजनों और खाने की ख़ुशबू बिखेरते रेस्तराँ हैं। इनमें ज़ायकेदार भारतीय नाश्ते और खाने आपको घर से बाहर घर सा सुख देने के लिये बेताब हैं।

चलिये अब चलते हैं सीधे **क्वालालम्पुर....।** शहर का नाम बड़ा होने से लोग इसे प्यार से के.एल.पी. भी कहते हैं। सन् 1857 से 1887 के बीच चीनी लोग टिन धातु की तलाश में भटकते रहे और जगह-जगह कैम्प लगाते रहे। एक कैम्प उन्होंने क्लेगे व गोम्बेक नदी के संगम पर लगाया और उसे नाम दिया क्वालालम्पुर। इसका अर्थ था कीचड़

को इकट्ठा करना। शनैः शनैः विकसित होता गया यह कैम्प आज वो शहर बन गया जिसका सारा विश्व लोहा मानता है। आज यही क्वालालम्पुर मलेशिया का सबसे बड़ा शहर है और राजधानी भी।

आज भले ही बुर्ज़ ख़लीफ़ा जैसी बिल्डिंग दुनिया की सबसे ऊँची इमारत होने पर इठला रही हो पर क्वालालम्पुर का **'प्रेट्रोनेस टॉवर'** 2003 तक दुनिया की सबसे ऊँची इमारत होने का गौरव हासिल करता रहा। 1996 में इस ट्विन टॉवर को सिसरपैतली नामक आर्किटेक्ट ने डिज़ाइन किया था। स्टील और ग्लास की मदद से तराशा गया यह अजूबा 452 मीटर ऊँचा है।

क्वालालम्पुर के सिटी टूर में आप यहाँ के राजा के महल के साथ ही अनेक नई-पुरानी इमारतों को निहारते हुए मलेशिया के इतिहास से रूबरू होते हैं। सिटी टूर के दौरान आपको दुःख तब होता है जब गाइड अपने कमीशन के लालच में आपको जेम्स और चॉकलेट फैक्ट्री में ले जाते हैं। जहाँ समय तो आपका नष्ट होता है पर तगड़े कमीशन से गाइड की जेब गरम हो जाती है।

क्वालालम्पुर को **'सिटी आफ़ लाइट'** भी कहते हैं। शाम का धुंधलका अधंकार में बदलते ही यहाँ एक साथ हज़ारों सूरज निकल आते हैं। हर रोड, हर चौराहे पर अपनी छटा बिखेरती रोशनी आपकी आँखों से होती हुई दिल के अंदर उतर जाती है। रात के आग़ोश में क्वालालम्पुर की सड़कों पर घूमते हुए मन यही दुआ करता है कि इस रात का सबेरा कभी ना हो। इस रोशनी के आनंद को चौगुना करना हो तो चढ़ जाइये 'क्वालालम्पुर टॉवर' पर। के.एल.पी. टी.वी. टॉवर दुनिया के सबसे ऊँचे टॉवर्स में से एक है। इस पर बने रेस्टॉरेंट से आप रोशनी में नहाते क्वालालम्पुर से आँखें चार कर सकते हैं। ख़रीददारी के लिये मलेशिया में कुछ ख़ास नहीं है। फिर भी 'फ़ॉरेन' जाएँ और कुछ ना लाएँ तो रिश्तेदार/दोस्त कहेंगे कि यह झूठ बोल रहा है। मुंबई जाकर आ गया होगा और बोल रहा है कि मलेशिया गया था। जूते, चप्पल अच्छे और सस्ते मिलते हैं। कपड़े, हल्के-फुल्के इलेक्ट्रॉनिक सामान, लगेज, चॉकलेट भी आप मलेशिया से ख़रीद सकते हैं। चाहे जेंटिंग हाइलैंड हो या फिर क्वालालम्पुर शाकाहारी भारतीय भोजन के मामले में आपको ज़रा सी भी दिक्क़त नहीं आ सकती। यहाँ की मुद्रा का नाम रिंगीट है।

क्वालालम्पुर से मात्र 45 मिनट की फ़्लाइट से आप सपनों के द्वीप **'लंकावी'** जा सकते हैं। सोने सी महीन साफ़-सुथरी सुनहरी रेत और मनचली समुद्री लहरों पर वॉटर स्पोर्ट्स के ढेर सारे रोमांच आपका बाहें फैलाए इंतज़ार कर रहे हैं। यहाँ रूकने के लिये बेहतरीन रिसॉर्ट बने हैं। लंकावी मलेशिया को नीली छतरी वाले का दिया एक नायाब तोहफ़ा है। क्वालालम्पुर से आप सुपर स्टार सिरीज़ के क्रूज़ द्वारा 2-4 दिन की समुद्री यात्रा का कार्यक्रम भी बना सकते हैं तो यहाँ से ट्रेन मार्ग या बस द्वारा सिंगापुर भी जा सकते हैं।

सिंगापुर, बैंकॉक और मलेशिया तीनों देशों का एक सम्मिलित कार्यक्रम भी बनाया जा सकता है जो कि सस्ता पड़ता है।

क्वालालम्पुर एयरपोर्ट विश्व के बेहतरीन एयरपोर्ट्स में से एक है। किसी भी एयरपोर्ट के अंदर मैंने इतनी हरियाली नहीं देखी जैसी यहाँ दिखी। ड्यूटी फ्री शॉपिंग का इतना विशाल एरिया कि बड़े-बड़े मॉल शरमा जाएँ। एयरपोर्ट भी इतना बड़ा कि एक भाग में से दूसरे भाग में जाने के लिये यहाँ ट्रेन चलती हैं। राजधानी से एयरपोर्ट जाने के लिए एक्सप्रेस ट्रेन भी है।

इस देश में आपको मुस्लिम लड़कियाँ सर पर स्कार्फ़ और सलीक़ेदार वस्त्र पहनकर पूरे आत्मविश्वास के साथ कम्प्यूटर और बाज़ार में काम करती नज़र आ जाएँगी। मुस्लिम बाहुल्य देश होने के बावजूद भी प्रगति की दौड़ में मलेशिया आपको भारत से मीलों-मील आगे नज़र आएगा। एशिया जैसे पिछड़े महाद्वीप में रहने के बाद भी दुनिया के उन्नत देशों से मलेशिया टक्कर लेने में सक्षम है। यह देश अनुशासन और एकता की एक अदभुत मिसाल है। यहाँ लोगों के जनजीवन, ट्रैफ़िक, बातचीत, व्यवहार में सभ्यता और सलीक़ा नज़र आता है। यहाँ के लोग शिक्षित हैं तो दीक्षित भी... मुद्दे की बात यह है कि यह देश हमारी उन सारी भ्रांतियों को तोड़कर रख देता है, जो कि किसी धर्म- विशेष के बारे में हमारे दिलो दिमाग़ में भर दी गई हैं।

मलेशिया एक नज़र में ...

- क्षेत्रफल : 329,758 वर्ग किलोमीटर
- जनसंख्या : 24,821,286 (2007)
- जनसंख्या घनत्व : 76 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर

बड़े शहरों की जनंसख्या :

- क्वालालम्पुर : 1,297,526(2000)
- इपोह : 566,211(2000)
- किलेंग : 563,173(2000)

भाषा :

- मलेशिया, चाइनीज़ , इंग्लिश, तमी, इबान

धार्मिक जनंसख्या प्रतिशत में :

- मुस्लिम 48 प्रतिशत
- फोल्क रेलिजियस 24 प्रतिशत
- क्रिश्चियन 8 प्रतिशत
- बुद्ध 7 प्रतिशत
- हिंदू 7 प्रतिशत अन्य 6 प्रतिशत।

"मैनें इस बिल्डिंग के माध्यम से ये बताने की कोशिश की है कि मलेशियन संस्कृति या मलेशिया का निचोड़ क्या है। मैंने मलेशिया की भविष्य के प्रति एक अद्भुत सोच, सपनों और चाहतों को ज़ाहिर करने की कोशिश की है।"

- किजर एन्टोनियो पिली

पेट्रोनस टॉवर के निर्माता

मनीला

Philipines

हम परो से नहीं हौंसलो से उड़ते हैं...
फ़िलीपींस

मानव कितने ही महल-दुमहले बना ले या फिर बाग़-बग़ीचे, स्वीमिंग पूल, वॉटर पार्क, फ़व्वारे... क़ुदरत की बख़्शी नियामतों के आगे ये कहीं पासंग में भी नहीं ठहरते। मासूम कोमल, तितलियाँ, रंग-बिरंगी मछलियाँ, ख़ुशबू बिखेरते फूल, कल-कल बहती नदियाँ और हवा से बातें करते पहाड़; ऐसी न जाने कितनी चीज़ें है जिनकी फ़ेहरिस्त लम्बी है। हम बात कर रहे हैं फ़िलीपिंस की राजधानी मनीला से चंद घंटे की दूरी पर स्थित **'लगुना'** के विश्व प्रसिद्ध **'पेंगसन्जन'** जलप्रपात की। जितना लुभावना यह झरना है, उससे कई गुना रोमांचक यहाँ पहुँचने का रास्ता। एकदम पतली सी, छोटी नाव या फिर सीधे-सीधे कहें तो 'डुगडुगी'। क्षमता: अधिकतम तीन सवारियाँ और इसे चलाने वाले दो दुबले-पतले पर जाँबाज़ खिवैया। आपको लाइफ़ जैकेट भी दे दी जाती है और हेलमेट भी पर वें बेचारे खैवया नंगे पाँव, हॉफ़ पेन्ट और टी-शर्ट में। सकरी, पतली पर तेज़ धार के साथ द्रुतगति से बहती पहाड़ी नदी। विचित्रता भरा रास्ता, जेम्सबांड की फ़िल्मों की तरह। कहीं बेहद गहरा पानी तो कहीं इतना उथला कि नाव का तला नदी की तलहटी से टकराने लगे। कहीं झाड़ियाँ, पेड़ तो कहीं गोल-मटोल, छोटे-छोटे पत्थर... पर इंसान के हौंसले भी क़ुदरत से टक्कर लेने में कहाँ बाज़ आते हैं।

हाथ अगरबत्ती-पैर मोमबत्ती वाले ये माझी चल पडे हैं मंज़िल की ओर। वह भी नदी के बहाव के विपरीत। इनका परिश्रम और जज़्बा देखकर याद हो आते हैं कविवर मैथिलीशरण गुप्त:

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या?
पथ में बिखरे यदि शूल न हों
नाविक धैर्य परीक्षा क्या
यदि धाराएँ प्रतिकूल न हों।

डगमगाती नाव में से जब दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों की नैसर्गिक सुंदरता नज़र आती है तो डर आनंद में परिवर्तित होने लगता है। यह प्रकृति के उन गिने-चुने स्थानों में से एक है, जहाँ आज भी क़ुदरती देन को मानव ने ज्यों का त्यों रखा है। चाहते तो ये भी मोटरबोट, केबलकार या फिर पुलों के द्वारा इस कठिन मार्ग को सुगम कर सकते थे पर इससे न तो इसकी मौलिकता रहती और न ही रोमांच। बाजू से निकलती कुछ छोटी नावों में कोल्डड्रिंक्स, नमकीन और गरमा-गरम भजिये लिये चलती-फिरती दुकानें नज़र आती हैं; यह नन्ही सी नैया कुछ किलोमीटर का सफ़र तय कर पहुँचती है असली मुक़ाम 'पेंगसन्जन झरने' के पास। एक अचरज भरे, अद्भुत, अभूतपूर्व आनंद के लिये....!

यहाँ इन्होंने मोटे बांस की एक प्लेटफ़ॉर्मनुमा नाव बनाई है। इस नाव पर लगभग 10-20 लोगों को एक साथ बैठाकर खिवैया ले जाते हैं। कहाँ....? झरना दिखाने नहीं, सीधे झरने के नीचे... आ गई न जान गले में...? पर असली मज़ा ही इसका तो इस रोमांच का है। जैसे-जैसे नाव झरने के पास पहुँचने लगती है, हाथ-पाँव फूलना चालू हो जाते हैं और जब नाव झरने के नीचे पहुँचती है, तो सैकड़ों फीट तेज़ आवाज़ के साथ ऊपर से गिरता, फुहारें बिखेरता पानी सिर के साथ ही साथ सारे शरीर को झनझना देता है। यह क्रम दो बार होता है। एक बार झरने के नीचे से जाते समय, दूसरा वापस आते समय। इन चंद मिनटों के इस कंपकंपा देने वाले एडवेंचर में वह अलौकिक आनंद है जो जीवन भर भुलाए नहीं भूलता।

भारत से सुदूर पूर्व में एशिया के अंतिम ज़मीनी छोर से लगभग 1300 किलोमीटर दूर स्थित फ़िलीपींस की कहानी काफ़ी हद तक भारत से मिलती-जुलती है। फ़िलीपींस के इतिहास पर एक सरसरी दृष्टि डालें तो नज़र आता है कि सन् 900 में ल्यूज़ोन टांडो राजघराने के नाम से जाना जाता था। इस दौरान मनीला की खाड़ी से चीन का समुद्री व्यापार ख़ूब फला-फूला और इस क्षेत्र की समृद्धि का माध्यम बना। बाद में जब इसी व्यापार ने स्मगलिंग का रूप ले लिया तो चीन ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया।

यहाँ के ताम्रपत्र 'डाज़ीन' बताते हैं कि आदिकाल में यह देश इंडोनेशियाई हिंदू साम्राज्य का एक हिस्सा था। 1485 के बाद इस्लामी राजा सलीला ने भी यहाँ अपना राज्य स्थापित किया। भारत की तरह इस देश में भी छोटे-छोटे राज्य और द्वीप आपसी लड़ाई से लहूलुहान थे। यहाँ पर भी विदेशी ताक़तों ने 'फूट डालो और राज करो'

की तर्ज़ पर काम कर अपने पैर फैलाए। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि भारत में अंग्रेज़ आए और यहाँ स्पेनिश। स्पेन ने यहाँ 1565 से 1898 यानी लगभग तीन सदी तक राज किया। इसमें से 1762 के आसपास लगभग तीन सालों तक ब्रिटेन का भी राज था।

द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व तक फ़िलीपींस जापान के बाद एशिया का सबसे धनी देश था। इस विश्वयुद्ध में जापान ने यहाँ न केवल भारी तबाही मचाई बल्कि जापानी सैनिकों ने इस देश की महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार भी किया। इस युद्ध से उपजी पीड़ा का यह आलम है कि आज भी फ़िलीपींसवासी जापान का नाम सुनना पसंद नहीं करते। इस विश्वयुद्ध ने फ़िलीपींस की ऐसी कमर तोड़ी कि यह देश एशिया के सबसे ग़रीब देशों में से एक हो गया। फिर भी यहाँ के जाबाँज़ लोग युद्ध के विनाश को विकास में बदलने में लगे रहे पर तक़दीर को कुछ और ही मंज़ूर था। 1984-85 में राजनैतिक उथल-पुथल के चलते देश में ऐसी आर्थिक मंदी आई कि इसकी इकॉनॉमी 10 प्रतिशत तक सिकुड़कर रसातल में चली गई। 1990 में सरकारी प्रयासों से देश ने फिर तरक्क़ी की सीढ़ी चढ़ना शुरू ही किया था कि 1999 की विश्वव्यापी मंदी ने फिर सब चौपट कर दिया। मंदी से उबरने की महारत वाले इस देश ने एक बार फिर सबको पटक दिया। सब कुछ ठीक हो रहा था कि 2008 की मंदी ने तो सब कुछ ढेर में लगा दिया। कहते हैं - ***'तेज़ी का बोलबोला, मंदी का मुँह काला'*** और यही हुआ। देश की जीडीपी दर 2008 में 3.8 प्रतिशत और 2009 में तो सिर्फ़ 0.9 प्रतिशत ही रह गई, और तो और ***'ग़रीबी में गीला आटा'*** की तर्ज़ पर देश में आये बवंडर और उसके बाद के सूखे की तबाही और बिजली संकट में ज़ैसे सब कुछ दाँव पर लग गया।

वो ख़ुद ही पूरा करता है, मंज़िल-आसमानों की
परिंदों को नहीं दी जाती तालीम उड़ानों की
रखता है जो हौंसला आसमान छूने का
उसे नहीं होती परवाह ज़माने की।

यहाँ की जनता ने अगले ही वर्ष जीडीपी को सीधे सात गुना बढ़ाकर 7.9 प्रतिशत तक पहुँचा दिया। यहाँ पहुँचकर भी उन्हें चैन नहीं मिला तो उन्होंने अगले ही वर्ष 2010-11 में इसे सीधे दो अंकों में ले जाकर 11% का इतिहास रच दिया।

आज यहाँ पर लोकतंत्र है और उसमें अमेरिका की तरह ही अध्यक्षीय प्रणाली है। भ्रष्टाचार यहाँ रग-रग में फैला है। राष्ट्र प्रमुख मार्कोस के सत्ता से हटते ही मारे गये छापों में मार्कोस की पत्नी के पास हज़ारों-हज़ार जोड़ी जूतियाँ मिलीं। जिसका रेकॉर्ड बाद में भारत की जयललिता ने तोड़ा। यह भी एक कटु सत्य है कि भ्रष्टाचार और विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। भ्रष्ट नेता और अधिकारी को भ्रष्टाचार का मौक़ा ढूँढने के लिये काम करना पड़ता है और उसी के फलस्वरूप विकास हो जाता है। हमारी टूर गाइड लैला का कहना है कि देश में सर्वाधिक विकास भी मार्कोस के समय ही हुआ।

नौ करोड़ साठ लाख जनसंख्या वाले फ़िलीपींस का सबसे प्रमुख शहर है **'मनीला'**। मनीला का पूर्व नाम ही 'गिन्टो' था, जिसके मायने हैं 'सोने की भूमि'। लगभग 40 वर्ग किलोमीटर में फैला मनीला 16 ज़िलों में विभक्त है। मनीला इस देश के सबसे बड़े बंदरगाहों और दुनिया के सबसे व्यस्ततम बंदरगाहों में से एक है। यहाँ की प्रमुख 'पेसिक नदी' मनीला शहर को दो भागों में बाँटती है। पेसिक नदी की बात चली तो यह भी बता दूँ कि यह संसार की सबसे प्रदूषित नदियों में से एक है।

अब प्रदूषण की बात चल गई तो साथ ही यह भी जान लीजिये कि 'मेट्रो मनीला' संसार का चौथे नंबर का सबसे प्रदूषित शहर है। ऐसा शहर, जहाँ साल में 4000 लोगों की मौत तो सिर्फ़ प्रदूषण के कारण ही हो जाती है। इस शहर की ज़्यादातर नदियाँ इसी प्रदूषण की मार से बायलॉजिकली मृत हो गईं हैं। उनमें न तो अब जीव-जन्तु बचे हैं और न ही वनस्पति। लगे हाथ एक बात और जान लीजिये कि मनीला में प्रदूषण अपने मानक स्तर से 300 प्रतिशत ज़्यादा है। यह हम भारतवासियों के लिये भी एक चेतावनी भरी सीख है। हमारी गंगा-कावेरी की हालत भी अब बेहतर नहीं है। मनीला दुनिया की सबसे घनी बसाहट वाला शहर है। आपको आश्चर्य होगा कि यहाँ एक वर्ग कि.मी. में 43079 लोग रहते हैं।

भारत की तरह ही यह देश बढ़ती जनसंख्या से परेशान है। वृद्धि दर 2.04 प्रतिशत प्रतिवर्ष है, जो कि एशिया में सबसे ज़्यादा में से एक है।

इस देश के 'पाताल' पर क़ुदरत की विशेष कृपा रही है। मेरे देश की धरती सोना उगले.... वाली बात यहाँ अक्षरशः लागू होती है। दुनियाभर के बेशक़ीमती खनिज इस देश की धरती के अंदर करवट लेते हैं। गोल्ड और कॉपर निकालने वाले देशों में फिलीपींस किसी ज़माने में टॉप टेन में था। आप अपने दाँतों तले उंगली दबा लीजिये, क्योंकि यहाँ ज़मीन के भीतर 840 बिलीयन डॉलर से भी अधिक का ख़ज़ाना छिपा है जो कि विश्व में सबसे ज़्यादा है। यहाँ सभी धातुएँ बेहद सस्ती हैं। इन्हीं खजिनों और अच्छी उपज के कारण देश में उद्योगों की भरमार है। फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में भी फ़िलीपींस अव्वल है। ज़्यादातर उद्योग मनीला के आसपास ही हैं। वर्ष 2004 दिसम्बर में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला देते हुए यहाँ पर विदेशी कंपनियों को 100 प्रतिशत इन्वेस्टमेंट करने के रास्ते खोल दिए। जातिगत समीकरण देखें तो फ़िलीपींस में सबसे अधिक इसाई हैं। इनमें अधिकांश इसाई अमेरिका के प्रभाव से धर्म परिवर्तन का परिणाम हैं। द्वितीय नंबर मुस्लिमों का और फिर बुद्धों का आता है। आतंकवाद की पीड़ा यह देश भी भोग रहा है।

स्पेन ने यहाँ तीन सौ साल राज किया, लेकिन वे फ़िलीपिनों को स्पेनिश नहीं सिखा पाए। कारण? उनमें किसी को सिखा सकें, इतना 'सब्र' नहीं था। उन्हें सीखना, सिखाने से ज़्यादा सरल लगा और वे यहाँ की भाषा सीखकर स्पेन लौट गये। द्वितीय विश्वयुद्ध में मदद के बाद अमेरिका को एक बेहतर मौक़ा मिल गया, इस ज़रूरतमंद देश में अपने पाँव जमाने का। इसका फ़ायदा लेते हुए अमेरिका ने इसे अपना बेस कैम्प बना लिया। अमेरिका के प्रभाव से इस देश में आज 90 प्रतिशत से भी अधिक लोग फ़र्राटेदार अंग्रेज़ी बोल लेते हैं। अमेरिका कैसे अंदर तक पैठ कर जाता है, इसका अंदाज़ा सिर्फ़ इसी से लग जाता है कि जो काम स्पेन 300 साल में नहीं कर पाया वह अमेरिका ने मात्र 10-20 सालों में कर दिया। इसका एक फ़ायदा यह भी हुआ कि यहाँ विदेशी पर्यटकों को संवाद की दिक़्क़त नहीं जाती। क़ुदरत की नियामतें और आतिथ्य-सत्कार प्रतिवर्ष 10 लाख़ से भी अधिक विदेशी पर्यटकों को फ़िलीपींस खींच लाता है। दुकानों के सारे साइन बोर्ड अंग्रेज़ी में ही नज़र आते हैं। फ़िलीपींस वासियों की अंग्रेज़ी स्पष्ट और साफ़-सुथरी होने से यहाँ कॉल सेंटर का कामकाज भी बेहद बड़े स्तर पर फल-फूल रहा है।

देश की एक बड़ी संख्या विदेशों में भी जाकर काम कर रही है। इसी कारण आज यह विश्व की 46 वें नंबर की बड़ी इकॉनॉमी बन गया है। जहाँ देश में लड़के-लड़कियों के अनुपात में भी एक बड़ा फ़र्क़ है, वही इस देश में 'किन्नर' भी बहुत बड़ी संख्या में मौजूद है। यह सब इस देश में नासूर की तरह फैल गए 'ड्रग्स' का दुष्परिणाम है।

ड्रग्स और ग़ैरकानूनी कामों के अवसरों के चलते देश में माफ़िया या यूँ कहें 'भाई' लोगों का दबदबा है। पर्यटकों का अकेले घूमना सुरक्षित नहीं है। पर्यटकों को मुद्रा परिवर्तन के लिये भी होटल या अधिकृत मनीचेंजर काउंटर पर ही जाना चाहिए। हमारे कई साथी सस्ते के लालच में बाज़ार में मनी चेंज करवाते हुए ठगा गए। आइये फ़िलीपींस के मौसम पर एक नज़र डाल लें। यहाँ का तापमान 20 से 38 डिग्री के बीच झूलता रहता है। जनवरी से अप्रैल तक मौसम शुष्क और मई से दिसम्बर तक नमी वाला रहता है।

चाहे होटल हो, रेल, हवाई जहाज़ या फिर बस, मुझे जो जगह सबसे ज़्यादा लुभाती है वह है खिड़की। अगर आप सुनें तो पाएँगे कि खिड़की बोलती है पर सुनने के लिये कान नहीं अंतरमन चाहिए। बस की खिड़की में से झाँकते समय ही मुंबई की तरह यहाँ अमीर-ग़रीब बराबर नज़र आते हैं। बड़ी-बड़ी अट्टकालिकाएँ हैं तो झोपड़पट्टी भी। महँगी-सस्ती कारें तो टूटी-फूटी साइकलें भी, सूट-बूट पहने प्रोफ़ेशनल्स, तो फटे और बदहाल इंसान भी। खिड़की से हर मकान पर लगी एक प्लेट नज़र आती है। वह है मकान रजिस्ट्रेशन नम्बर। यह नंबर अनिवार्य है और आगांतुकों के लिये बेहद सुविधाजनक भी।

मनीला का **'ओशन पार्क'** आँखें तृप्त कर देने के लिये पर्याप्त है। यहाँ संगीत की स्वरलहरियों पर जब गगनचुंबी फ़व्वारे नृत्य करते हैं तो माहौल फुहारों से सराबोर हो जाता है। आपको दी गई बरसातियों के बावजूद भी ये पानी की बूँदे आपके दिल के अंदर उतर जाती हैं। इन फ़व्वारों पर कम्प्यूटर की जादूगरी से रंग बिखेरती लाइट्स माहौल को अविस्मरणीय बना देतीं हैं। यहीं 'ओशन पार्क' में दुनिया की सारी सुंदर, रंग-बिरंगी मछलियाँ आपका पलके बिछाए इंतज़ार कर रहीं हैं। कहती हैं - आओ, देखो क़ुदरत की तूलिका के रंगों का कमाल। यहाँ रेस्टॉरेंट्स हैं, गेम्स हैं और तो और पिंजरे के अंदर खड़े होकर पानी में शार्क को खाना खिलाने का रोमांच भी। साथ ही साथ ख़रीदारी के लिये छोटे-छोटे स्टोर्स भी।

किसी ने सच ही कहा है; बिना शॉपिंग के काहे की विदेश यात्रा। शॉपिंग प्रेमियों के लिए यहाँ सैकड़ों एकड़ में फैला एक विशालकाय मॉल है। नाम है - **'मॉल ऑफ़ द एशिया'** जो सही है। मैंने वाक़ई एशिया भर में इससे बड़ा मॉल नहीं देखा। यहाँ दुनियाभर के टॉप ब्रांड्स आपके लिये उपलब्ध हैं। बस अपनी जेब की सलाह ले लीजियेगा। अगर सस्ता सामान चाहिये तो यहाँ कई दूसरे मार्केट भी हैं। बिल्कुल बीजिंग-शंघाई के याशू मार्केट जैसे। ख़ूब भाव-ताव करो और ले आओ वर्ल्ड के टॉप ब्रांड्स की हूबहू नक़ल, कौड़ियों के भाव। फ़िलीपींस की मुद्रा का नाम है 'पैसा'। दर लगभग भारतीय मुद्रा के बराबर। 1322 गोल्डन एम्पायर टॉवर, इन्ट्रॉम्युटस, द मेंडोला, नेशनल म्यूज़ियम, सांताक्रूज़, सिटी चायना टाउन यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक हैं। बेसीलिका माइनोर एशिया का एक ऐसा एकमात्र चर्च है, जो पूर्णतः स्टील का बना है।

ख़्वाहिशों का काफ़िला भी अजीब है, गुज़रता वहीं से है, जहाँ रास्ते नहीं होते। ज्वालामुखी, भूकम्प, भूस्खलन, आग, बाढ़, सायक्लोन फिलीपींस में प्रतिवर्ष हज़ारों-हज़ार लोगों और करोड़ो की संपत्ति को लील जाते हैं। आर्थिक तेज़ी-मंदी यहाँ मौसम की तरह आती-जाती रहती है। सारी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी देश की तरक्क़ी का सबसे बड़ा कारण यहाँ के निवासियों की जीवटता और आपसी एकता है। लोगों की रगों में ख़ून की जगह आतिथ्य सत्कार दौड़ता है। सुनकर बड़ा अचंभा होता है जब रास्ते चलता आदमी आपको अभिवादन करता है और आपसे पूछता है कि 'आपको फ़िलीपींस कैसा लगा'। आइये! फ़िलीपीनों की मेहमाननवाज़ी पर माजिद देवबंदी साहब का एक शेर लेते हैं...

सामाने तिजारत मेरा ईमान नहीं है
हर दर पे झुके सर ये मेरी शान नहीं है
अल्लाह मेरे घर की बरक़त न चली जाए
दो रोज़ से घर में कोई मेहमान नहीं है।

'जीपनी' फ़िलीपींस सड़कों का चलता-फिरता लैंडमार्क...

द्वितीय विश्वयुद्ध में नेस्ताबूद हो गए फ़िलीपींस के सामने परिवहन के लिये वाहनों का संकट खड़ा हो गया। तब यहाँ के लोगों ने एक 'जुगाड़' ईजाद की और नाम रखा 'जीपनी'। जीप की तरह दिखने वाला एक ऐसा वाहन, जिसे खींचकर इतना लम्बा कर दिया है कि उसका नाम हो गया जीपनी। इतना बड़ा कि एक बार में 25-30 लोग बैठ सकें। भोपाल में सजे-सँवरे ऑटो, टेम्पो की तरह जीपनी भी बाहर से बेहद कलात्मक नज़र आती है। हर जीपनी की अपनी अलग कलाकृति, अलग डिज़ाइन। समय बदला, ज़माना बदल गया, पर जीपनी आज भी अपने पुराने रूप में ही फ़िलीपींस की सड़कों पर दौड़ रही है, ग़रीबों और मध्यम वर्ग की 'मर्सिडीज़' बनकर। यहाँ पर इसी तरह 'शोले' की जय-वीरू वाली जोड़ी की मोटरसाइकल जैसी गाड़ियाँ और साइकल-रिक्शे भी नज़र आते हैं, जो फ़िलीपीनों के 'क्रिएशन' के गीत गुनगुनाते हैं।

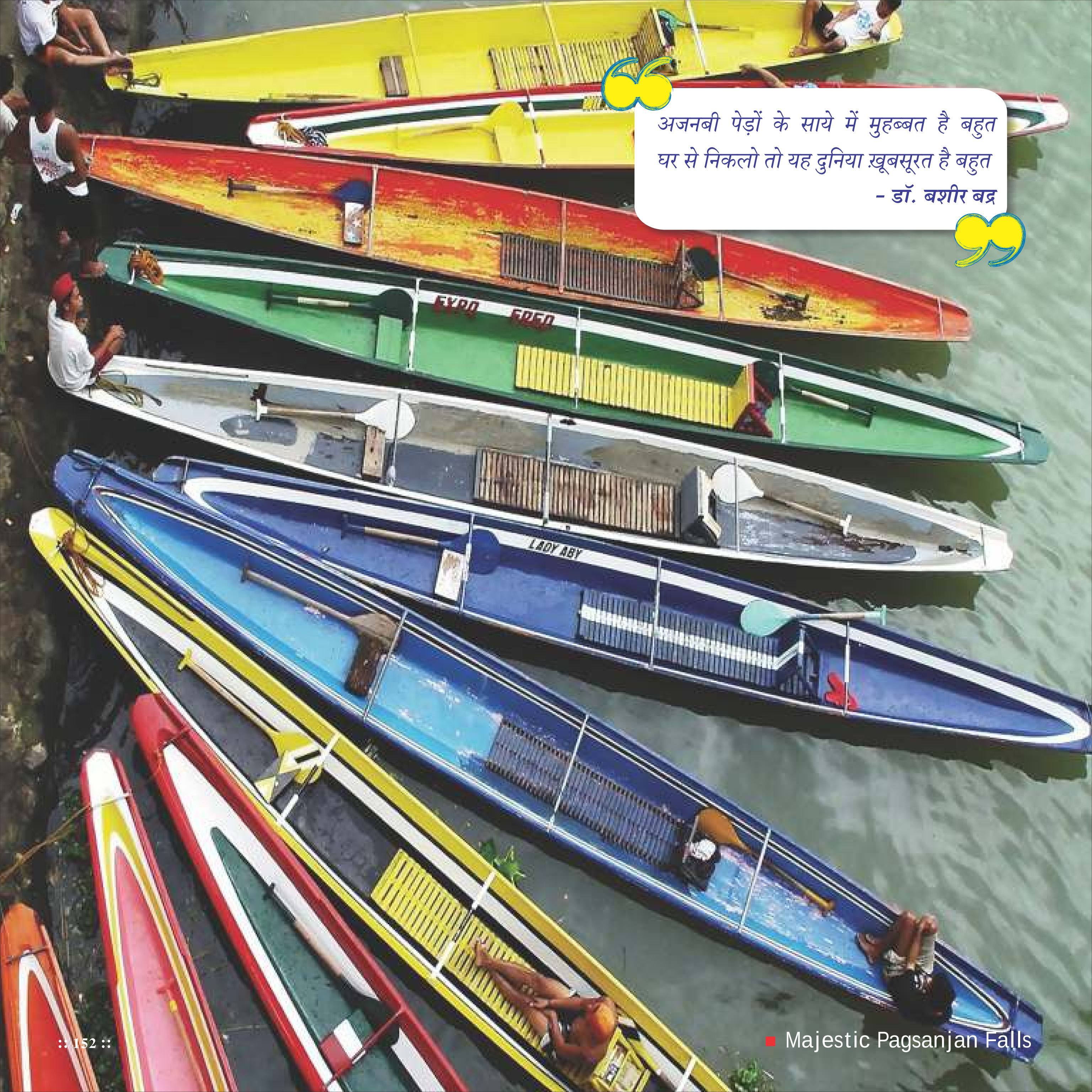

अजनबी पेड़ों के साये में मुहब्बत है बहुत
घर से निकलो तो यह दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत

– डॉ. बशीर बद्र

■ Majestic Pagsanjan Falls

पर्यटन एक स्कूल... कुछ नोट्स

दृश्य एक – स्थान ऑस्ट्रेलिया

ओल्ड सिडनी का भ्रमण करती टूरिस्ट बस में गाइड बेहद उत्साह से सिडनी के इतिहास के बारे में बता रहा है। पर्यटकों में से चंद को छोड़ शेष चुटकले, अंताक्षरी या नींद का आनंद ले रहे हैं। अपने उद्बोधन को बेअसर देख गाइड माईक बंद कर बस की अगली सीट पर चुपचाप बैठ जाता है।

दृश्य दो – स्थान स्विट्ज़रलैंड

टूर ऑपरेटर द्वारा दो दिनों से लगातार दी जा रही चेतावनी के बावजूद भी पर्यटकों के तैयार होकर आने में आज फिर देरी हो गई। होटल से बस 2 घंटे लेट निकली। अगले स्टॉप से टॉप ऑफ़ द यूरोप ले जाने वाली ट्रेन पर्यटक चूक गये। एक शानदार टूरिस्ट पॉईंट से वंचित रह गये पर्यटक एक दूसरे को कोसते हुए वापस होटल आ गये।

ऐसे अनेक वाक़ये हमारे भ्रमण कार्यक्रमों के दौरान सामने आते रहते हैं। एक प्रश्न यह उठता है कि हम पर्यटन पर क्यों जाते हैं? शायद जवाब मिलेगा– दुनिया क्या है? इसे देखने, जानने और उसका आनंद लेने। दूसरा प्रश्न यह उठता है कि आज के आपाधापी एवं भागम–भाग के दौर में ऑफ़िस, दुकान, घर और बच्चों की स्कूल की उलझनों और रूटीन से बाहर आ पाना कहाँ मुमकिन है? जवाब मिलेगा – बेहद कठिन! वह तो जाने वाला ही जान पाता है कि वह कैसे निकला है।

फिर जीवन के इतने क़ीमती समय और घनघोर परिश्रम से अर्जित धन को दाँव पर लगाकर हमारे ही द्वारा बनाये गये टूर कार्यक्रम का पूरा उपभोग हम क्यों नहीं करना चाहते। अपवाद छोड़ दें तो अधिकांश टूर व्यर्थ की बातों में ही बीत जाता है। ढेर सारे सामान का बोझ, खाने–पीने की चिंता, फ़ैशन, कपड़े और दिखावे का आवरण हमें परेशानी से मुक्त कर ही नहीं कर पाता। बची–खुची कसर मोबाइल फ़ोन पूरी कर देता है। उसकी लगातार बज रही घंटी हमें अपने रोज़मर्रा के तनाव से बाहर ही नहीं निकलने देती। आख़िर में हो यह जाता है हमारा तन तो टूर पर होता है पर मन घर या दुकान पर अटका रहता है। अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों में 80 प्रतिशत हिस्सा यूरोप एवं अमेरिका से आये पर्यटकों का होता है। इन देशों से आये पर्यटक हमारे सामने एक जीते–जागते उदाहरण हैं। कितना कम सामान लेकर वे पूरी दुनिया नाप आते हैं। एक हाथ में कैमरा, दूसरे में पुस्तक और पीठ पर एक बैग; बस यही उनकी दुनिया होती है। कहीं भी जाने से पूर्व उस जगह के इतिहास, भूगोल/वर्तमान, संस्कृति और साधनों की पूरी जानकारी उनके पास होती है। जैसा देश–वैसा भेस की तर्ज़ पर वे घूमने के लिये प्लान की गई जगह का पूरा आनंद लेते हैं। जिस ताजमहल को हम दो घंटे में निपटा आते हैं उन्हें उसके लिये दो दिन भी अपर्याप्त लगते हैं।

यात्रा या पर्यटन से बड़ा कोई दूसरा स्कूल नहीं है। पर्यटन का प्रत्येक पल, जगह और हमारे संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति हमें कुछ न कुछ सिखा कर जाता है। ज़रूरत है हम अपनी दोनों आँखें, कान और दिमाग़ के दरवाज़े खुले रखें; जिज्ञासु विद्यार्थी बने रहें। अगली बार हम कहीं घुमने जाएँ तो सिर्फ़ छुटिट्याँ बिताने या टाइम पास करने ही नहीं जाएँ बल्कि ज़िंदगी के कुछ अनमोल सबक़ भी अपने साथ ले आएँ।

परदेस
कुछ ज़रूरी बातें...

- सामान कम से कम लें। एक बार फिर दोहरा रहा हूँ.... ''सामान कम से कम लें'' (लेस लगेज; मोर कम्फ़र्ट)।
- जाने से पूर्व मेग्ज़ीन, बुक्स या इंटरनेट से उस जगह की जानकारियाँ एकत्र कर लें।
- गाइड अवश्य हायर करें उसके द्वारा दी गई जानकारियाँ हर क़ीमत में सस्ती होती हैं।
- अगर संभव हो सके तो रोज़ रात में टूर डायरी लिखें।
- अधिकांश होटलो में सुबह का नाश्ता, अमेरिकन ब्रेकफ़ास्ट होता है। शुद्ध शाकाहारी पर्यटक अगर साथ में नाश्ता ले जाएँ तो उन्हे काफ़ी सुविधा रहती है।
- दूसरे देश में पहुंचते ही एयरपोर्ट से ही वहाँ की मोबाइल सिम ले लेना चाहिए । वह सस्ती भी पड़ती है और अपने वतन/घर पर संपर्क करना भी सुविधाजनक रहता है। सभी सदस्यों के पास मोबाइल रहें तो बेहतर।
- होटल का एक-एक विज़िटिंग कार्ड सबको अपने पास रख लेना चाहिये।
- वापस आते समय एयरपोर्ट से ही वहाँ की मुद्रा वापस कर अमेरिकन डालर ले लेना चाहिए। अन्य देशों की मुद्राओं को भारत आकर परिवर्तित करवाना बहुत महँगा पड़ता है।
- अगर आपने अपने साथ एक पीठ पर टांगने वाला बैग साथ रख लिया है तो साइट सीन्स पर जाते समय सहायक रहता है।
- याद करके अपने साथ रखें : दवाईयाँ, मोबाइल चार्जर, पासपोर्ट की फ़ोटोकॉपी, सभी की 2-4 वीज़ा साइज़ की तस्वीरें।
- गाइड, दुकानदार, टैक्सी चालक, होटल कर्मचारी, एयरक्राफ्ट, एयरपोर्ट या फिर वहाँ के पुलिस कर्मचारियों से कभी भी बहस ना करें यह महँगा पड़ सकता है। वे अपने काम और निर्देशों के पक्के होते हैं। उनकी निष्ठा को कभी मत आज़ामइये।
- अपने टूर की आयटनरी, होटलों के पते, फ़ोन नम्बर, टूर इंचार्ज के फ़ोन नंबर, पासपोर्ट की फ़ोटोकापी आदि अपने घर पर या फिर किसी परिचित के पास छोड़ जाएँ, इमरजेंसी में सुविधा होती है।
- अधिकांश एयरलाईंस में चेक इन बैगेज 20 किलो एवं केबिन बैगेज में 10 किलो प्रति व्यक्ति मान्य होता है यह ख़्याल रखकर ही सामान लें।

- केबिन बैगेज साइज़ में छोटा होना चाहिए एवं उसमें लिक्वीड , औज़ार, माचिस या ऐसा अन्य कोई भी सामान न रखें जो सुरक्षा व्यवस्था में ख़तरा बन जाए !
- कई देशों में बिजली के प्लग अलग क़िस्म के होते हैं अतः एडाप्टर साथ रखें ।
- विदेश में पासपोर्ट सबसे जरूरी डॉक्यूमेंट है अतः उसे बेहद संभालकर रखें । उसकी एक–एक फ़ोटोकॉपी करवाकर भी बैग की दीगर जेब में रख लें । होटल पहुँचते ही पासपोर्ट को लॉकर में रख दें ।
- ख़रीददारी में भावताव करते समय किसी भी वस्तु का भाव अपनी ओर से तब ही बोलें जब वह उतने में लेना हो अन्यथा विवाद हो सकता है । टाइम पास के लिये मोलभाव न करें ।
- अपने टूर गाईड, टूर मैनेजर, होटल्स, दो–चार साथियों के फ़ोन नंबर अपने मोबाईल की फ़ोन बुक में सेव कर लें ।
- प्रवासी देश के मौसम का पता लगाकर ही उसके अनुरूप तैयारी से जाएँ ।
- जिस देश की यात्रा पर जा रहे हों अगर उस देश में अपने शहर या नज़दीकी मित्र या, मित्रों का कोई परिचित रहता हो तो उनका नाम पता और फ़ोन नंबर पास में रखने में वक़्त–बेवक़्त सुविधा रहती है ।
- बैगैज में अंग्रेजी में अपने नाम पते का टैग लगाकर ले जाना सुविधाजनक रहता है ।
- जहाँ तक संभव हो सके भारत में अपने परिवार, मित्रगणों से प्रतिदिन दूरभाष संपर्क अवश्य करें ।
- अपनी पासपोर्ट साइज़ की 2–4 रंगीन फ़ोटो साथ रखने में सुविधा रहती है ।
- अपनी जेब में अपना पूरा नाम, पता, होटल का नाम, नंबर, पता, इमरजेंसी में संपर्क हेतु फ़ोन नंबर इत्यादि की जानकारी भी रखें तो अति उत्तम ।
- एयरपोर्ट पर सफ़र में किसी भी अपरिचित का सामान अपने साथ न लें... हो सकता है आपके भोलेपन का लाभ लेकर कोई ग़ैरक़ानूनी सामान आपके साथ दे दे । सुनी सुनाई बात नहीं है; अपने ऊपर गुज़री है ।

अगर सम्राट अशोक सिर्फ़ अपने महलों में ही बैठे रहते तो यह दुनिया उन्हें कभी एक महान राजा के रूप में याद नहीं करती।

– चाणक्य

शब्दों का सफ़र

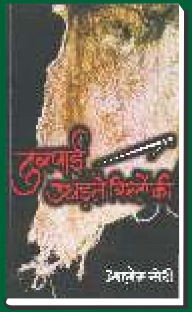

बिखरते संबंधों को जोड़ने का एक प्रयास

माँ की महिमा का अनूठा ग्रंथ

प्रेरक लघु कथाएँ
(संवर्धित द्वितीय संस्करण)

रोज़मर्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें

हिन्दी कविताओं का ताना बाना

अनमोल संदेशों की महक
(द्वितीय संस्करण)

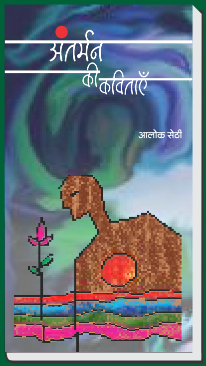

भावपूर्ण कविताओं की यात्रा

पिता के भावलोक की शब्द यात्रा

रिश्तों की पड़ताल करती ऑडियो बुक

आँख में पानी रखो, होठों पर चिंगारी रखो
ज़िंदा रहना है तो तरकीबे बहुत सारी रखो
राह के पत्थर से बढ़कर कुछ नहीं है मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र ज़ारी रखो

आलोक सेठी की शख़्सियत इस ग़लतफ़हमी को ख़ारिज करती है कि व्यवसाइयों को साहित्य से कोई सरोकार नहीं होता है। आलोक भाई ख़ूब पढ़ते हैं, सुनते हैं और पढ़ने–लिखने वालों से सोहबत भी रखते हैं। कविताओं और नज़्मों को वे उतने ही एहतियात से सहजते हैं जितना कोई व्यापारी चैक और ड्राफ़्ट को। आलोक भाई लफ़्ज़ों की दुनिया में अपनी ख़ुशियाँ तलाशने वाले प्यारे इंसान हैं।

वे एक अच्छे दोस्त और ख़ानाबदोश तबियत रूह हैं। मौक़ा मिलते ही वे कारोबारी या दिल को ख़ुशी देने वाली यात्रा पर निकल पड़ते हैं। ख़ाकसार को भी तक़रीबन आधी दुनिया घूमने का फ़ख्र हासिल है सो कह सकता हूँ कि घर के बाहर निकलने से ही दुनिया की सचाइयाँ रूबरू होतीं हैं। आलोक सेठी ने 'दुनिया रंग–बिरंगी' लिखकर अपने दोस्तो के लिए मोहब्बत का अफ़साना रचा है। आलोक इस किताब के ज़रिये सबको बताना चाहते हैं कि कहाँ–कहाँ;क्या–क्या ख़ास है। मुझे उम्मीद है कि 'दुनिया रंग–बिरंगी' लोगों को घूमने–फिरने के लिए मुतास्सिर करेगी और दिलों की दूरियों को कम भी करेगी।

दुनिया रंग–बिरंगी की ज़ुबान आसान है और ये एक ख़ूबसूरत कलेवर में पेश की गई है। इसे सहेजकर रखा भी जा सकता है और एक दस्तावेज़ के रूप में इस्तेमाल भी किया जा सकता है। मैं आलोक सेठी के जज़्बे को सलाम करता हूँ और दुआ करता हूँ कि कुछ ऐसे ही और नायाब प्रकाशन वे दुनिया के सामने लाते रहेंगे।

डॉ. राहत इन्दौरी
शायर और फ़िल्मी गीतकार

▷ 094250-13334 ▷ rahatindorifoundation@rediffmail.com

इसी क़िताब से...

''संघर्ष के समय हम कल्पना करते हैं कि सफ़ल होते ही कोई दु:ख नहीं होगा। परंतु सफलता अपने साथ नये नियम लेकर आती है। सफलता बहुत महँगी होती है और उसकी क़ीमत चुकानी ही पड़ती है.....''

''**सिंगापुर** में शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है, और सासंद बनने की पहली शर्त ग्रेजुएट होना है। यहाँ उन्नीस सौ चौपन के बाद से कोई दंगा नहीं हुआ।''

''**ऑस्ट्रेलिया** एक ऐसा देश जिसके पास ख़ुद अपना कुछ भी नहीं था, लेकिन खुले दिल से दुनिया भर से आने वाली हर अच्छी और नई बात को स्वीकार करना और उसे आत्मसात कर लेना यहाँ के लोगों की एक ख़ास ख़ूबी थी।''

''**स्विट्ज़रलैण्ड** की राइन नदी के पानी को सीधे बोतलों में पैक कर के बेच दिया जाता है। सच्चा मिनरल वॉटर...। यह यूरोप का सबसे बड़ा झरना है।''

''आज भी दुनिया भर के वास्तुविदों के लिए **मिस्र** के पिरामिड एक पहेली हैं कि चार हज़ार बरस पहले, जब तकनीक मौजूद नहीं थी, कैसे इन पत्थरों को इकट्ठा किया गया होगा!''

''**चीन** ने इस धारणा को झुठला दिया कि तरक्क़ी सिर्फ पश्चिम कर सकता है, उन्होंने इसे भी ग़लत साबित कर दिया कि ओलंपिक खेलों की विश्वस्तरीय मेज़बानी कोई एशियन देश नहीं कर सकता।''

''अगर आप एक ऐसे देश की सैर करना चाहते हैं जहाँ प्रकृति भी हो और इतिहास भी; जहाँ बर्फ़ भी हो और रेगिस्तान भी, जो सुंदर भी हो और किफ़ायती भी; नज़दीक भी हो और भिन्न भी, तो शायद **उज़्बेकिस्तान** इसके लिये सबसे बेहतर विकल्प होगा।''

` 400/–